दिसंबर, 2023 ₹ 50/-

मनोहर कहानियां

अपराधों को जानिए, सुरक्षित रहिए

अब नए बदलाव के साथ

फाइनेंशियल सिक्योरिटी विशेषांक

200 करोड़ की संपत्ति के लिए बनी फरजी दुलहन

दिल्ली में 25 करोड़ की चोरी

लोन ऐप बना सिरदर्द

350 करोड़ की हुई ठगी



महादेव सट्टा ऐप

सौरभ चंद्राकर ने ठगे 5,000 करोड़

दिसंबर
2023

मनोहर कहानियां

टिप्पणी, घटना की सूचना, समाचार, रिपोर्ट, जौब्स के लिए :
manoharkahaniyanmonthly@gmail.com
011-41398888
Mob.:8742940126

वार्षिक ग्राहक : subscription@delhipress.in Phone : 08488843408 (Mon to Saturday 10 AM to 6 PM)

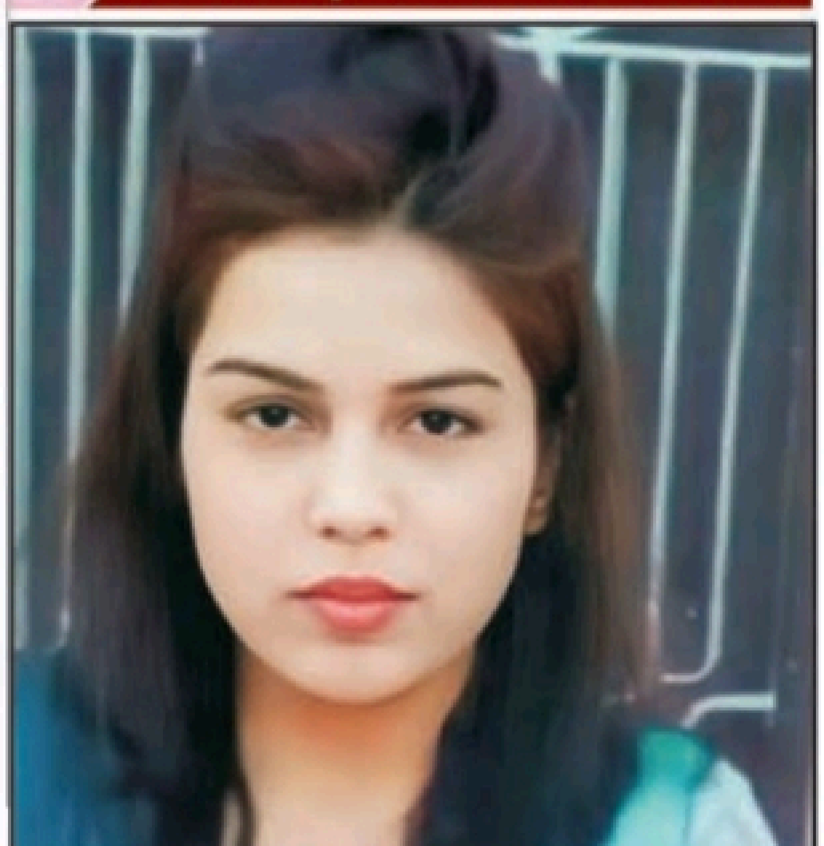
स्थाई स्तंभ

06 महादेव सट्टा ऐप : सौरभ चंद्राकर ने ठगे 5,000 करोड़



सौरभ चंद्राकर छत्तीसगढ़ के शहर भिलाई में जूस की दुकान चलाता था. इसी दौरान उसे सट्टा खेलने का शौक हो गया. सट्टे में जब वह लाखों रुपए का कर्जदार हो गया तो लोगों के तगादों से परेशान हो कर वह दुबई भाग गया. वहां एक शेख से मिल कर उस ने 'महादेव बुक' नाम का एक सट्टा ऐप लांच किया. इस ऐप के जरिए उस ने करोड़ों रुपए कमाए. इस धंधे में उस ने भारत के कुछ पुलिसकर्मियों तक को शामिल कर लिया. अपनी शादी में फिल्मी कलाकारों व अन्य लोगों पर पानी की तरह पैसे बहाने वाला सौरभ भारतीय जांच एजेंसी के निशाने पर ऐसा चढ़ा कि...

20 200 करोड़ की संपत्ति के लिए...



56 रोमानिया का जालसाज



आवश्यकता है: राजधानियों और बड़े शहरों में 'मनोहर कहानियां/सत्यकथा' के लिए फ्रीलांस संवाददाताओं की. संपर्क करें : editor@delhipress.biz

शोभिका मीडिया प्राइवेट लिमिटेड के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक परेशनाथ द्वारा ई-8, दिल्ली प्रैस बिल्डिंग, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055 से प्रकाशित एवं पीएसपीसी प्रैस प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली प्रैस, डीएलएफ 50, इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, फरीदाबाद हरियाणा-121003 से मुद्रित. संपादक:परेशनाथ (वौ-9, अंक-2)
संपादकीय, वितरण एवं एजेंसी कार्यालय : ई-8, दिल्ली प्रैस बिल्डिंग, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-110055.
वार्षिक ग्राहक: दिल्ली प्रकाशन वितरण प्रा.लि., ई-8, झंडेवालान एस्टेट, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली- 110055. फोन: 91-11-41398888 Extn. No. 119, 221, 264 **मुंबई कार्यालय:** बी-3, वडाला उद्योग भवन, नायगांव क्रौस रोड, वडाला, मुंबई. फोन: 91-22-24122661/43473050

मनोहर कहानियां

संपादकीय

डिजिटल क्रांति के इस दौर में आम आदमी की जानकारी का दायरा तो बढ़ा ही है, साथ ही उस की सोच भी बदली है. इंटरनेट की पहुंच से दुनिया अब जैसे उस की जेब में समा गई है. यदि उसे किसी भी तरह की कोई नई जानकारी लेनी होती है तो वह झट से गूगल बाबा के पास पहुंच जाता है. वहां से उसे जो जानकारी मिलती है, वह सही है या नहीं, इस का पता उसे बाद में चलता है. कहने का मतलब यह है कि आज इंटरनेट हर इंसान की जरूरत बन चुका है.

चीन के बाद भारत ही ऐसा देश है, जहां सब से ज्यादा इंटरनेट यूजर हैं. भारत में आज 80 करोड़ से ज्यादा इंटरनेट यूजर हैं और 2025 तक इन के 97.4 करोड़ पहुंचने की संभावना है. सूचना और जन संचार के क्षेत्र में हुई इस प्रगति से इंसान घर बैठे अनेक तरह की सुविधाओं का लाभ उठा रहा है. सब से बड़ा फायदा औनलाइन ट्रांजेक्शन का मिला है.

सरकार द्वारा 500 और 1,000 के नोटों को वापस लेने के बाद 2016 में यूपीआई (यूनाइटेड पेमेंट्स इंटरफेस) को लांच किया गया. तब से भारत में डिजिटल ट्रांजेक्शन परिस्थिति तंत्र को बहुत बढ़ावा मिला. शुरुआती दौर में जानकारी के अभाव और डर की वजह से तमाम लोग इस से बचते रहे. उस समय यूपीआई की शुरुआत 21 बैंकों से की गई थी. अब इस का विस्तार 381 बैंकों तक हो चुका है.

जब लोगों को औनलाइन ट्रांजेक्शन में सुविधा दिखाई दी तो इस में उन की दिलचस्पी बढ़ती गई. एनपीसीआई (नैशनल पेमेंट्स कारपोरेशन औफ इंडिया) के अनुसार 2022 में साल के अंत तक यूपीआई से लेनदेन 125.75 लाख करोड़ रुपए तक पहुंच गया. इन लेनदेन की संख्या 7,404.45 करोड़ थी. यानी प्रति सेकेंड 2,348 यूपीआई लेनदेन हुआ.

डिजिटलाइजेशन तकनीकी का लोगों को लाभ तो हुआ ही है, लेकिन कुछ तत्त्व इस का गलत फायदा भी उठा रहे हैं. साइबर दुनिया की दीवार पुख्ता नहीं है, जिसे से वह लोगों के बैंक खातों में लगातार सेंध लगा कर करोड़ों रुपयों का चूना लगा रहे हैं. आईआईटी कानपुर इनक्यूबेटेड स्टार्टअप की रिपोर्ट के अनुसार जनवरी 2020 से जून 2023 तक देश में 75 फीसदी से अधिक साइबर अपराध धोखाधड़ी के ही हुए. इन में 50 फीसदी यूपीआई और इंटरनेट बैंकिंग के थे.

राष्ट्रीय उपभोक्ता हेल्पलाइन की रिपोर्ट के अनुसार 2016 में औनलाइन धोखाधड़ी की संख्या 60 हजार थी, जो 2021 में बढ़ कर 1.84 लाख हो गई. इस का मतलब यह हुआ कि हर महीने 15,333 लोगों के साथ धोखाधड़ी हो रही है. रोजाना 511 लोग साइबर क्राइम का शिकार हो रहे हैं.

एनपीसीआई के अनुसार, यदि सर्वाधिक औनलाइन ट्रांजेक्शन की बात की जाए तो 5 राज्यों में केरल, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, कर्नाटक और उत्तर प्रदेश का नाम आता है और एनसीआरबी के आंकड़े बताते हैं कि साइबर अपराध के सब से ज्यादा 10,303 मामले तेलंगाना में दर्ज हुए. उस के बाद उत्तर प्रदेश, कर्नाटक, महाराष्ट्र और असम का नंबर आता है.

साइबर अपराधियों ने 2021 में वैश्विक स्तर पर 6 ट्रिलियन डालर का नुकसान पहुंचाया. यह अमेरिका तथा चीन के बाद विश्व की सब से बड़ी अर्थव्यस्था होती. आम लोगों के साथ ठगी करने की बात तो छोड़िए साइबर अपराधियों ने बेहद सुरक्षित तकनीकी दीवार में सुरक्षित अनेक सरकारी संस्थाओं और बैंकों की वेबसाइटों पर भी हमले किए हैं. और तो और वे पेमेंट गेटवे तक में सेंध लगा चुके हैं. अब तो बैंकों तक में लोगों का पैसा सुरक्षित नहीं है. भारतीय रिजर्व बैंक के अनुसार साल 2023 में बैंकिंग सिस्टम में 13,530 फ्रौड के मामलों से 30,252 करोड़ रुपए की ठगी हुई.

सरकारी नीतियों की कमजोर कड़ी का फायदा उठा कर एक तरफ विजय माल्या, नीरव मोदी, मेहुल चोकसी जैसे अनेक घोटलेबाज हजारों करोड़ रुपए डकार चुके हैं तो वहीं साइबर दुनिया की दीवार पुख्ता नहीं होने की वजह से तमाम लोग रोजाना साइबर ठगी का शिकार हो रहे हैं. इन घोटालेबाजों को राजनीतिक संरक्षण प्राप्त होता है. तभी तो भाजपा सांसद बृजलाल की अध्यक्षता वाली संसदीय समिति ने आर्थिक अपराधियों को हथकड़ी नहीं लगाए जाने की मांग की है. इस संबंध में समिति ने अपनी रिपोर्ट राज्यसभा के सभापति जगदीप धनखड़ को भी सौंप दी है.

घोटालेबाजों को संरक्षण देने के बजाय सरकार को लोगों के हितों का ध्यान रखते हुए मजबूत साइबर सुरक्षा करने की जरूरत है. साथ ही धोखाधड़ी करने वाली कंपनियों व व्यक्तियों की यूनिक आईडी या पैन कार्ड पर ऐसा कोड डालने की व्यवस्था की जाए, जिस में उस का आपराधिक रिकौर्ड दर्ज हो सके, जिस से उस व्यक्ति या कंपनी की आसानी से पहचान हो सके. इस के अलावा हर जिले में साइबर कोर्ट स्थापित किए जाएं, जिस से ऐसे अपराधियों को जल्द सजा मिले, क्योंकि जब तक कानून का डर नहीं होगा, अपराध हरगिज नहीं रुकेंगे.

छत्तीसगढ़/दुबई

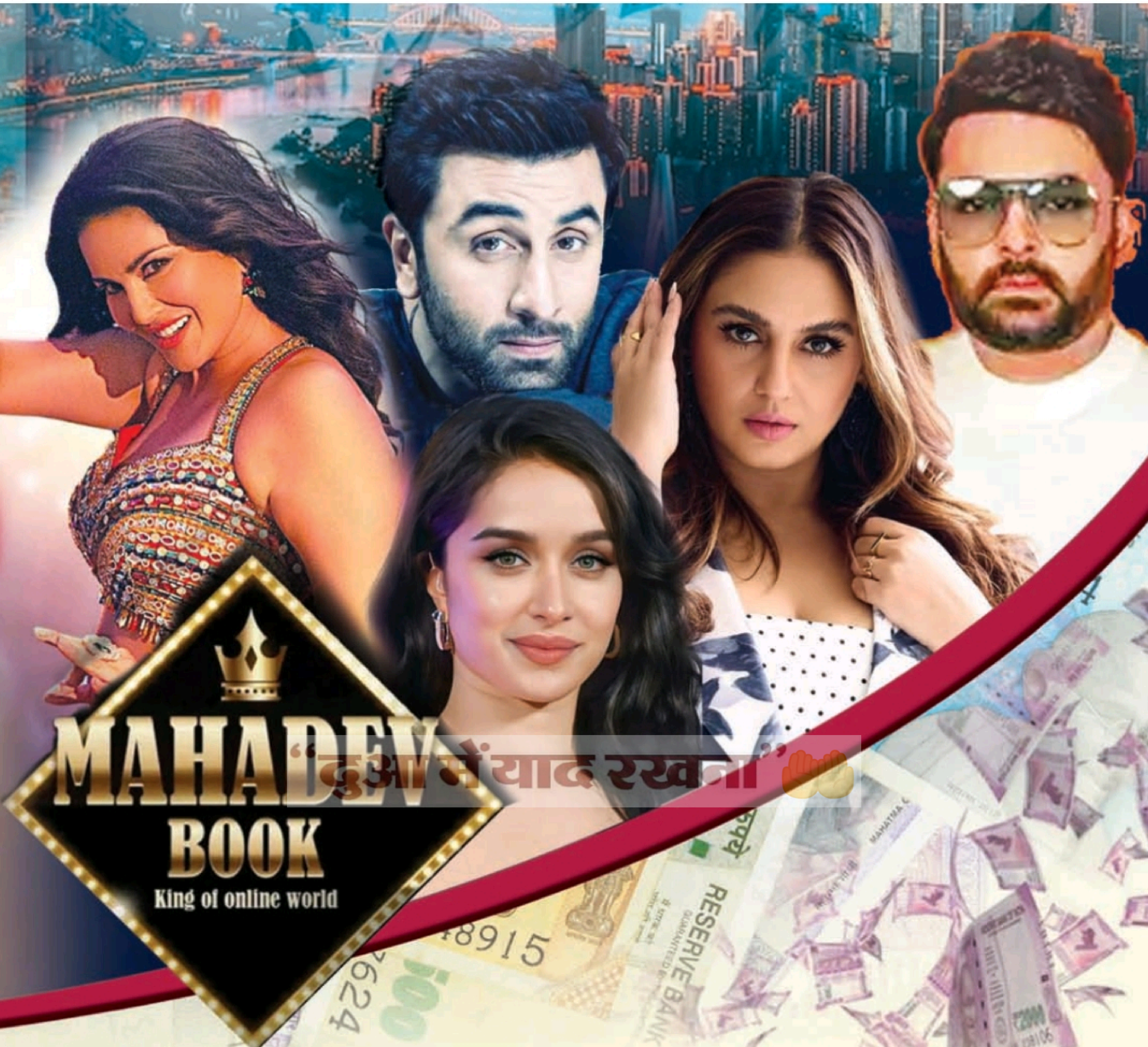


सौरभ चंद्राकर की फरवरी 2023 में दुबई में हुई थी शादी जिस में बौलीवुड की कई हस्तियों ने शिरकत की थी

महादेव सट्टा ऐप सौरभ चंद्राकर ने ठगे 5000 करोड़

❑ शंभु सुमन

भिलाई में जूस की दुकान चलाने वाले 28 वर्षीय सौरभ चंद्राकर ने अपनी शादी में 200 करोड़ रुपए से ज्यादा खर्च किए. उस की शादी में शामिल होने के लिए दरजनों बौलीवुड कलाकार चार्टर्ड विमान से दुबई पहुंचे थे. भव्य तरीके से की गई इस शादी की वजह से वह अचानक चर्चा में आ गया था. आखिर कौन है सौरभ चंद्राकर और जूस बेचने वाला यह मामूली सा युवक हजारों करोड़ का मालिक कैसे बना? पढ़िए, यह खास स्टोरी.



फरवरी, 2023 के महीने में एक महंगी शादी की खबर मीडिया में तेजी से फैल गई. जिस का कनेक्शन छत्तीसगढ़ के भिलाई, बौलीवुड सितारे, महादेव बुक और राजनेताओं तक से जुड़े हुए थे. यह शादी किसी अमीरजादे या सिनेमा सिलेब्रेटी की नहीं, बल्कि 28 वर्षीय एक युवक सौरभ चंद्राकर की थी.

यह भव्य शादी दुबई के पांचसितारा होटल में हुई थी. उस में बौलीवुड के नामी-गिरामी सितारों ने परमफारमेंस की थी. सनी लियोनी से ले कर आज के रणबीर कपूर तक कई फिल्मी सितारों ने इस में ठुमके लगाए थे.

मेहमानों को कपिल शर्मा और भारती सिंह की कौमेडी ने हंसाहंसा कर लोटपोट कर दिया था तो नेहा कक्कड़ और राहत फतेह अली खान की लाइव परफारमेंस से गजब का समां बंध गया था. मीडिया में वायरल हुई इस की तसवीरें और वीडियो के अनुसार यह करीब 200 करोड़ी शादी कही जाने लगी.

यह शादी थी महादेव ऐप के एक प्रमोटर सौरभ चंद्राकर की, जो संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) के रास अलएखैमा में हुई थी. सौरभ चंद्राकर ने अपने रिश्तेदारों को नागपुर से दुबई प्राइवेट जेट से बुलाया था, सभी वापस लौटे भी प्राइवेट जेट से ही थे.

उस शादी में खाना पकाने, परोसने वाले से ले कर, डेकोरेटर और तमाम इंतजाम करने वाले लोग भारत से गए थे, और इन को कैश में पेमेंट किया गया था. बौलीवुड से जुड़े कुछ सितारों को भी कैश में पेमेंट किया गया था.

शादी के इस महाजश्न की कुछ फोटो जैसे ही भी सोशल मीडिया पर वायरल हुईं, भारत में ईडी के कान खड़े हो गए.

राजधानी दिल्ली में पृथ्वीराज रोड के दोनों ओर वीवीआईपी इलाके में दिनेश कुमार एक कोठी का प्राइवेट गार्ड है. दोपहर के समय उस के पास एक आटो ड्राइवर आया. उस से उस की कुछ माह पहले ही जानपहचान हुई

थी. आते ही वह दिनेश के कान में धीमे से बोला, ''आज का नंबर 5 है... खेल ले! पिछला डूबा पैसा निकल आएगा!''

''सच में!'' दिनेश की आंखों में चमक आ गई थी.

''हम तुम को कभी गलत बताए हैं आज तक! महादेव कंपनी का औनलाइन है, लेकिन ब्रोकर खेलवाता है. मटका नहीं है!'' ड्राइवर बोला.

''सो तो है. तुम्हारे कहने पर आज भी लगा देता हूं,'' दिनेश बोला.

''मेरा भी लगा देना, ये लो कुछ पैसा. हम को सवारी लाने जाना है.'' ड्राइवर बोलता हुआ पारदर्शी पन्नी में लिपटे अपने पर्स से 5 सौ के 4 नोट देता हुआ बोला,''यह नंबर पक्का है. मैं शाम को आऊंगा.''

ड्राइवर तुरंत जाने लगा. उस के 2 कदम जाते ही दिनेश बोला, ''बोतल भी ले कर आना. मेरी तरफ से भी मटन पार्टी पक्की है... होटल वाला ले कर आएगा.''

दरअसल, आटो ड्राइवर को महादेव ऐप से पैसा कमाने के बारे में सिंधिया हाउस के पास एक कैंटीन में काम करने वाले से कुछ दिन पहले ही जानकारी मिली थी. उसी ने बताया था कि इस में पैसा तेजी से बनता है. वह भी कैश में रोजाना मिल जाता है. किंतु उस की समस्या कहीं एक जगह ठिकाना नहीं रहने की थी. ऐप डाउनलोड करने वाला स्मार्टफोन भी उस के पास नहीं था. छोटे मोबाइल से काम चलाता था.

सवारी के साथ कब, किस वक्त कहां निकल जाए, उसे भी पता नहीं रहता था. इसलिए महादेव के बारे में अपने गांव के दोस्त दिनेश को बताया. उसे भी वहां पैसा लगाने के लिए कहा. वह गार्ड था और हमेशा एक जगह पर टिका रहता था. उस की जहां ड्यूटी थी, वहीं पास में खानेपीने रहनेसोने की जगह बनी हुई थी.

ड्राइवर दोस्त की बात दिनेश को भी पसंद आई. इस बारे में उस ने अपने एक रिश्तेदार से भी तहकीकात की थी. वह एक प्राइवेट कंपनी में काम करता था. उस ने भी महादेव में पैसा लगाने की हामी भर दी थी. इस में वह खुद एक ब्रोकर के मार्फत पैसा लगाता और दूसरे का लगवाता था. उसे बीच की कमाई हो जाती थी.

रास नहीं आया महादेव से सट्टा

रिश्तेदार और ब्रोकर ने दिनेश को अपने मोबाइल में 'महादेव बुक' को दिखा कर भरोसा दिलवाया था. उस ने बताया था कि यह एक बड़ी मल्टीनैशनल कंपनी का बेटिंग ऐप है. उसे समझाया था कि यहां कैसे बेटिंग होती है. इस में हजारों लोग रोज पैसा लगा रहे हैं और पैसा बना रहे हैं. यहां पर क्रिकेट, फुटबौल, टेनिस, कैसीनो और तीन पत्ती के लिए बेट यानी बाजी लगाई जाती है. इसे लोग सट्टा कहते हैं.

> नोएडा पुलिस ने सेक्टर-108 से झांसी निवासी तरुण लखेड़ा, राहुल, अभिषेक प्रजापति, आकाश साहू, हिमांशु, अनुराग वर्मा, विवेक, दीपक कुमार, विशाल शर्मा, रावत, दिव्य प्रकाश, हर्षित चौरसिया, अक्षय तिवारी, नीरज गुप्ता, आकाश जोगी और दीपक सहित 16 लोगों को गिरफ्तार किया था. पूछताछ में आरोपियों के डेढ़ माह से सट्टेबाजी का रैकेट चलाने की बात सामने आई थी.

इस के अलावा इस में कुछ रोमांचित करने वाले गेम भी हैं. इस के मेन पेज पर वाट्सऐप नंबर दिए गए थे. इस के जरिए ही वाट्सऐप मैसेज या मिस काल से डील करने को कहा गया था. यहां काल या मैसेज करने वाले को बाजी की शुरुआत के लिए स्टेप बाइ स्टेप जानकारियां दी गई थीं. वैसे यह लोगों के बीच औनलाइन सट्टा के नाम से जाना जाता था.

इस तरह हमेशा ऐक्टिव और लाइव रहने वाले बेटिंग की दुनिया में चर्चित महादेव बुक से दिनेश, उस के रिश्तेदार और आटो ड्राइवर औनलाइन के बजाय औफलाइन बेट लगाने लगे थे. वह क्रिकेट की हारजीत या ताश की तीन पत्ती खेल पर लगाई जाने वाली बेटिंग की रकम महादेव के ब्रोकर को कैश में दे देते थे. जीती हुई रकम उन्हें कैश में शाम के 8-9 बजे के बीच मिल जाती थी.

दिनेश, आटो ड्राइवर या उन की जानपहचान वाले आधा दरजन लोगों को इस का चस्का लग चुका था. वह अधिक से अधिक पैसा बनाने के लिए इस में लगे रहते थे. उन की मुलाकातें भी होती रहती थीं.

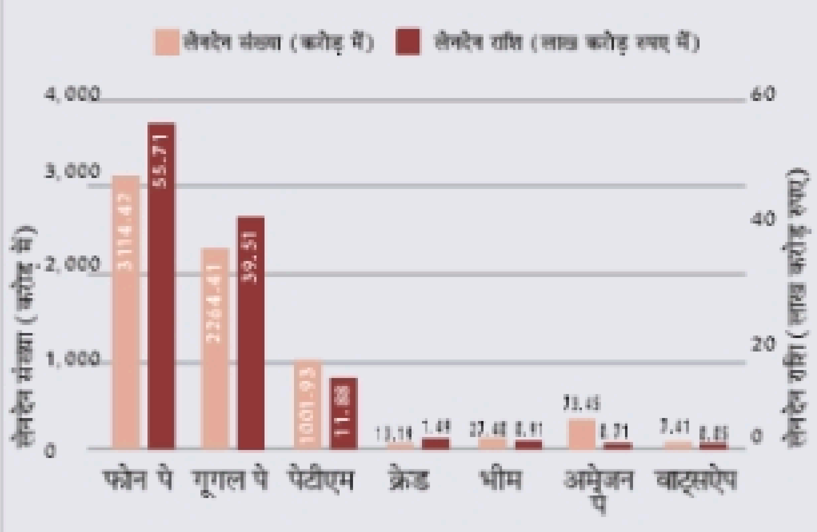
हालांकि वे पैसे की सुरक्षा को ले कर चौकन्ने भी रहते थे. वह इतना तो समझते ही थे कि कहने को बेटिंग है, लेकिन वह गलत धंधा और गैरकानूनी सट्टा ही लगाते हैं. इस कारण उन्हें पुलिस में फंसने की भी आशंका बनी रहती थी, और डरेसहमे भी रहते थे.

सब कुछ ठीक चलने लगा था, लेकिन पिछले कई दिनों से दिनेश की बेटिंग के पैसे लगातार डूबते जा रहे थे. हफ्ते भर में ही उस के 12 हजार रुपए डूब चुके थे. कुछ पैसे उस ने जानने वाले से कर्ज लिए थे, जबकि कुछ सैलरी के भी खर्च कर डाले थे. घर से पैसे के लिए पत्नी का बारबार फोन आ रहा था. फरवरी का महीना था. वह होली के मौके पर घर जाने के लिए अधिक पैसा जमा करना चाहता था, लेकिन हो उस का उलटा रहा था.

इसी बीच उसे मालूम हुआ कि आटो ड्राइवर अंडरग्राउंड हो गया है. वह दिनेश के पास कई दिनों से नहीं आया था. आशंकित दिनेश ने उसे काल किया. फोन बंद मिला. लगातार काल करता रहा, लेकिन फोन बंद ही मिला.

एक दिन अचानक आधी रात को काल लग गई. ड्राइवर ने उसे काल करने से मना

वर्ष 2022 में यूपीआई लेनदेन में फोनपे, गूगल पे और पेटीएम अग्रणी



नोट: नवंबर 30, 2022 तक का डाटा
स्रोत: एनपीसीआई डाटा


Bio Beauty
LONDON
Wide range of
Moisturizing
Body Lotion
ALOE RICH
COCOA BUTTER RICH
FRUIT RICH
SAFFRON ALMOND RICH
AVOCADO JOJOBA OIL
100ml, 300ml & 500ml
COLD CREAM
Light Weight
24 Hours
Hydration
with Vit. E & B5
AVOCADO
JOJOBA OIL
15ml & 200gm
Instantly Absorbed
Comprehensive Range of World Class Cosmetic Care
Daily Scrubs
Facial Kits
Bleach Creams
Vaginal Gels
Breast Creams
Body Mist
Premium Soaps
Face Massage Creams
Room Spray
9896062592
info@biobeauty.in
www.biobeauty.in

किया. हिदायत देता हुआ बोला, ''कुछ दिन काम रोक दो. ईडी की ताबड़तोड़ छापेमारी चल रही है. उस का भी किसी ने नाम दे दिया है, इसी कारण फोन बंद रखता है.''

मुश्किल से 8-10 सेकेंड की इस बातचीत में उस ने महादेव, पैसा या ब्रोकर आदि के बारे कुछ नहीं बताया.

उस वक्त दिनेश को कुछ समझ में नहीं आया. सिर्फ ऐसा एहसास हुआ जैसे उस के सिर पर किसी ने हथौड़ा मार दिया हो. वह झल्लाता हुआ अपने दोनों हाथों की अंगुलियों को बालों में डाल कर तेजी से सिर खुजलाने लगा. तभी उस का मोबाइल छूट कर जमीन पर गिर गया, जो छिटक कर बैड के नीचे चला गया था. पैर फंसा कर मुश्किल से मोबाइल निकाला और बैड पर झुंझलाते हुए बैठ गया. घोर चिंता में पड़ गया था. पूरी रात उसे नींद नहीं आई.

सुबह होते ही उस ने अपने रिश्तेदार को फोन मिला दिया. उस ने भी वही हिदायत दी कि कुछ दिनों के लिए काम रोक दे. महादेव चल रहा है और लोग पहले की तरह ही उस में सट्टा लगा भी रहे हैं, लेकिन दिल्ली में सभी जगह ईडी की छापेमारी में कुछ लोग पकड़े भी गए हैं. उस में महादेव का नाम भी आ गया है. पता नहीं उन में से कौन पूछताछ में कब उन का भी नाम बता दे.

दिनेश ने सहमते हुए मासूमियत से पूछा, ''ईडी क्या होता है? सीबीआई की छापेमारी के बारे में तो सुना है, लेकिन ईडी फीडी की छापेमारी!''

''अरे, तू इस के बारे में ज्यादा जानने की कोशिश मत कर. हवाला सुना है न! कालेधन का पैसा इधरउधर करने का धंधा!...उसी को पकड़ने का काम ईडी करती है.''

''पकड़ेगा बड़े नेताओं को, जिन के पास काला धन होगा? हमें क्यों?'' दिनेश ने जिज्ञासा जताई.

''तू नहीं समझेगा. काला धन लाने और पहुंचाने का काम बड़े नेता नहीं करते हैं, वह दूसरों से करवाते हैं. ईडी जहां कहीं बेतहाशा पैसा खर्च होता देखती है, उस पर अपनी नजर टिका देती है. उस के अधिकारी उन से हिसाबकिताब लेने पहुंच जाते हैं. इस तरह की छापेमारी में पहले बिचौलिए के ही नाम आते हैं और उन को पूछताछ के लिए बुला लिया जाता है. घंटों पूछताछ की जाती है.'' दिनेश को उस के रिश्तेदार ने समझाने की कोशिश की.

''उस के बाद..'' चिंतित दिनेश बोला.

''फिर उस के बाद... मैं कह रहा हूं कि ईडी, सीबीआई, हवाला, सट्टेबाजी और महादेव का नाम मत ले. कुछ दिन शांत बैठ. इस के चक्कर में बड़ेबड़े नेता फंस चुके हैं. जेल जा चुके हैं.'' दिनेश के रिश्तेदार ने डपटते हुए समझाया.

उन सभी के समझाने पर दिनेश कुछ दिनों तक सट्टेबाजी से दूर रहा. हालांकि कई महीने बीत गए, लेकिन न तो उस के पास ड्राइवर आया और न ही उस का कोई फोन ही आया. यहां तक कि उस का नंबर भी अनरिचेबल बना रहा. अपने रिश्तेदार से मालूम हुआ कि वह नोएडा में सट्टेबाजी के गैंग से जुड़ा हुआ था.

इस का परदाफाश 7 फरवरी, 2023 को नोएडा पुलिस ने किया. पुलिस को औनलाइन बेटिंग ऐप महादेव के जरिए सेक्टर 108 के एक मकान में रैकेट के चलने की जानकारी मिली थी, जिस में 16 लोगों की गिरफ्तारी हुई थी. जिस में हो न हो वह ड्राइवर भी हो.

यह जान कर दिनेश और दूसरे साथी सचेत हो गए थे. हालांकि आर्थिक तंगी और महादेव से नुकसान की वह भरपाई नहीं कर पा रहा था. काफी तनाव में रहने लगा. सट्टे से अधिक पैसा कमाने के लालच में काफी पैसा गंवाने वाले दिनेश की तरह अनेक लोग थे.

उन में कुछ ने आत्महत्या करने की कोशिश की तो कुछ ब्रोकर के खिलाफ पुलिस में शिकायत ले कर स्थानीय थाने जा पहुंचे थे. लेकिन यह मामला फाइनैंस से जुड़ा हुआ था, इसलिए महादेव ऐप के खिलाफ सट्टे की कारवाई केंद्रीय वित्त मंत्रालय के विभाग प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) द्वारा की जाने लगी.

महंगी शादी, फिल्मी सितारे और महादेव

इस मामले में महादेव ऐप के खिलाफ कई केस छत्तीसगढ़ पुलिस ने भी दर्ज किए थे. हालांकि दूसरे राज्यों महाराष्ट्र, दिल्ली एनसीआर और पश्चिम बंगाल से भी इस इस की शिकायतें आ रही थीं. इस में एक केस था मनी लांड्रिंग का. पुलिस भी अपने स्तर पर जांच और गिरफ्तारी कर रही थी.

इसी बीच फरवरी, 2023 के महीने में एक महंगी शादी की खबर मीडिया में तेजी से फैल गई. जिस का कनेक्शन छत्तीसगढ़ के भिलाई, बौलीवुड सितारे, महादेव बुक और राजनेताओं तक से जुड़े हुए थे.

यह शादी किसी अमीरजादे या सिनेमा सिलेब्रेटी की नहीं, बल्कि 28 वर्षीय युवक सौरभ चंद्राकर की थी. यह भव्य शादी दुबई के पांचसितारा होटल में हुई थी. उस में बौलीवुड के नामीगिरामी सितारों ने परफारमेंस किया था. सनी लियोनी से ले कर आज के रणबीर कपूर तक कई फिल्मी सितारों ने इस में ठुमके लगाए थे.

ईडी की नजर और शुरू हुई काररवाई

मेहमानों को कपिल शर्मा और भारती सिंह की कौमेडी ने हंसाहंसा कर लोटपोट कर दिया था तो नेहा कक्कड़ और राहत फतेह अली खान की लाइव परफारमेंस से गजब का समां बंध गया था. मीडिया में वायरल हुई इस की तसवीरें और वीडियो के अनुसार यह करीब 200 करोड़ी शादी कही जाने लगी. जिस ने देखा वह रोमांचित हो गया.

दरअसल, यह शादी थी महादेव ऐप के एक प्रमोटर सौरभ चंद्राकर की, जो संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) के रास अलएखैमा में हुई थी. इस में लगभग 200 करोड़ रुपए खर्च हुए थे. सौरभ चंद्राकर ने अपने रिश्तेदारों को नागपुर से दुबई प्राइवेट जेट से बुलाया था, सभी वापस लौटे भी प्राइवेट जेट से ही थे.

यहां तक कि उस शादी में खाना पकाने, परोसने वाले से ले कर, डेकोरेटर और तमाम इंतजाम करने वाले लोग भारत से गए थे, और इन को कैश में पेमेंट किया गया था. बौलीवुड से जुड़े कुछ सितारों को भी कैश में पेमेंट किया गया था.

शादी के इस महाजश्न की कुछ फोटो जैसे ही भी सोशल मीडिया पर वायरल हुईं, भारत में ईडी के कान खड़े हो गए. उस के द्वारा केस दर्ज कर जांच की शुरुआत हो गई. कई सवाल थे कि शादी और जश्न में इतना

महादेव ऐप की आंच में झुलसे छत्तीसगढ़ के सीएम

छत्तीसगढ़ में भी विधानसभा चुनाव का ऐलान होते ही चुनाव प्रचार और जनसभाओं की सरगर्मी तेज हो गई थी. राजनेताओं के आरोपप्रत्यारोप के सिलसिले में महादेव ऐप की सट्टेबाजी का नाम भी शामिल हो गया था. इस के कथित मालिक शुभम सोनी का एक बयान आते ही हंगामा मच गया.

शुभम ने नाटकीय तरीके से अपना एक वीडियो जारी कर राज्य के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल पर ही आरोप लगा दिया कि उन्हें 508 करोड़ रुपए दिए गए हैं. इसे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी छत्तीसगढ़ के सरगुजा इलाके में कांग्रेस को घेरते हुए चुनावी सभाओं में एक मुद्दा बना लिया.

हालांकि मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने इस तरह के आरोप पर कड़ी आपत्ति जताई. कहा कि यह चुनाव में उन की सरकार को बदनाम करने की एक साजिश भर है. उन्होंने यह भी कहा कि जिस शुभम सोनी को कोई नहीं जानता था, वह अचानक कैसे महादेव ऐप के मालिक के तौर पर सामने आ गया. जबकि शुभम इस घोटाले का एक आरोपी है.

इसे ले कर ही भारतीय जनता पार्टी ने अपने कार्यालय में एक प्रैस कौन्फ्रैंस की और शुभम सोनी के बयान का वीडियो मीडिया को दिखाया. इस के पहले तक दुबई से संचालित औनलाइन सट्टा, महादेव ऐप के मालिक प्रमोटर के तौर पर सौरभ चंद्राकर और रवि उप्पल का नाम ही सामने आया था.

इस मामले में शुभम सोनी का नाम ईडी के दिए एक बयान के बाद आया. ईडी ने रायपुर और भिलाई से एक व्यक्ति असीम दास से 5.39 करोड़ रुपए जब्त करने का दावा करते हुए कहा कि महादेव सट्टा ऐप के प्रमोटर्स ने अब तक छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल को 508 करोड़ रुपए दिए हैं.

ईडी की प्रैस विज्ञप्ति के अनुसार असीम दास से पूछताछ के साथसाथ उस के पास से बरामद फोन की फोरैंसिक जांच और महादेव नेटवर्क के बड़े आरोपियों में से एक शुभम सोनी द्वारा भेजे गए ईमेल की जांच से कई चौंकाने वाले राज सामने आए.

ईडी ने इसे 'जांच का विषय' बताते हुए शुभम सोनी के बारे में और अधिक जानकारी भले ही नहीं दी, लेकिन इस मामले में शुभम सोनी एक नया नाम आ गया.

उस ने खुद को महादेव ऐप का मालिक बताया. उस का जो वीडियो सामने आया है, उस में वह अपना कथित पैन कार्ड, आधार कार्ड, पासपोर्ट और कंपनी के कथित दस्तावेजों की फोटोकौपी दिखाते हुए दावा करता दिखा. उस ने दावा किया कि साल 2021 में उस ने महादेव बेटिंग ऐप शुरू किया था.

वीडियो में यह दावा भी किया गया था कि इस मसले पर किसी वर्माजी ने मुख्यमंत्री भूपेश बघेल और उन के बेटे से कथित रूप से मुलाकात कराई थी. महादेव ऐप का प्रमोटर बताने वाले शुभम सोनी ने यह भी कहा कि उन्हें मुख्यमंत्री ने दुबई जा कर काम करने को कहा. जो उस ने किया भी. वहीं उस की



मुलाकात भिलाई के ही सौरभ और रवि से हुई. वहीं उन्होंने दोनों को अपना निजी सलाहकार रख लिया.

उस के अनुसार, सौरभ और रवि का मालिक शुभम सोनी बन गया था. इस पर सीएम भूपेश बघेल ने उन के खिलाफ गढ़ी हुई कहानी बताया. उन्होंने कहा कि ईडी की प्लांटेड स्टोरी में शुभम सोनी एक हिस्सा भर है. इसी के साथ श्री बघेल ने आश्चर्य जताते हुए पत्रकारों से कहा कि शुभम ऐसा मालिक है, जो अपने नौकर की शादी में 200 करोड़ रुपए खर्च कर देता है. रमन सिंह के कार्यकाल में 2 अधिकारी थे, वह ऐसी ही स्टोरी बनाते थे. यह पूरा प्लांटेड है.

इस के साथ ही श्री बघेल ने टिप्पणी की कि भारत सरकार ने महादेव समेत 22 औनलाइन सट्टा ऐप पर प्रतिबंध लगाने का दावा किया. लेकिन यह सट्टा ऐप अभी भी चलन में है. ❍

सारा कैश में खर्च किया गया पैसा कहां से आया? पैसा किस का था? इसी के साथ ईडी के शक की पहली सुई छत्तीसगढ़ पुलिस और अन्य सरकारी अधिकारियों की तरफ मुड़ गई.

यह कारवाई 21 और 23 अगस्त, 2023 के महीने में हुई, तब छत्तीसगढ़ के कई इलाकों में छापे मारे गए. छापों में 4 लोगों को हिरासत में लिया गया. तब ईडी ने राज्य पुलिस के एएसआई चंद्रभूषण वर्मा समेत स्थानीय निवासी सतीश चंद्राकर और 2 भाई अनिल दम्मानी और सुनील दम्मानी को हवाला औपरेटर बताया.

ईडी का आरोप था कि एएसआई चंद्रभूषण वर्मा महादेव ऐप से जुड़े लोगों को जमीनी स्तर पर न केवल संरक्षण देता था, बल्कि ऐप के लोगों की ताकतवर और रसूखदार लोगों से मीटिंग अरेंज करवाता था.

बदले में चंद्रभूषण और सतीश चंद्राकर को हवाला के जरिए दुबई से मोटी रकम कैश में मिल जाती थी. मिलने वाले पैसे का वे अपना हिस्सा रखने के बाद बाकी पैसों को पुलिस वालों से ले कर नेताओं तक को प्रोटेक्शन मनी के तौर पर बांट देते थे. बताते हैं कि इन में से कुछ लोग मुख्यमंत्री औफिस से भी जुड़े हुए थे.

इस जांच में ईडी ने एक और नाम विनोद वर्मा का भी लिया, जो छत्तीसगढ़ के सीएम भूपेश बघेल का राजनीतिक सलाहकार बताया जाता है. ईडी के मुताबिक एएसआई चंद्रभूषण विनोद वर्मा से परिचित था. चंद्रभूषण इसी परिचय का इस्तेमाल कर राज्य के अधिकारियों और नेताओं से अपना काम निकलवाया करता था.

इस एवज में उन की जेब भी गर्म कर देता



पुलिस द्वारा गिरफ्तार किए गए सटोरिए

था, क्योंकि तब तक महादेव ऐप के खिलाफ कई थानों में केस दर्ज होने लगे थे. महादेव ऐप के सभी स्थानीय लोग चाहते थे कि उन के नेटवर्क और कामकाज के पैटर्न में कोई बाधा नहीं आने पाए.

पुलिस शिकायत मामले की काररवाई करती रहे, लेकिन इस की आंच उस के साथ जुड़े लोगों तक न पहुंचे. फिर जैसे ही पुलिस बीचबीच में कभी ऐक्शन लेती थी, तब उसे घूस में पैसे दे दिए जाते थे और फिर मामला दब जाता था. ईडी के मुताबिक मुख्यमंत्री औफिस से जुड़े कई सीनियर अफसरों को भी कई महीने तक घूस का पेमेंट किया जाता रहा.

सट्टे में चूना क्या लगा, इसे ही बना लिया धंधा

उस ने दावा किया महादेव ऐप से जुड़े लोग, जिन बैंक अकाउंट के जरिए अपना काम कर रहे थे, उन में अधिकतर खाते छत्तीसगढ़ में खोले गए थे. उस का काम बहुत जल्द इतना अधिक बढ़ गया था कि भिलाई के युवा उस की ट्रेनिंग के लिए दुबई जाने लगे. वे वहां ऐप के मुख्य लोगों से ट्रेनिंग लेने के बाद वापस इंडिया लौट कर अपना पैनल खोल लेते थे.

यह उन का ऐप के साथ किया गया सट्टेबाजी का अपना काम होता था, फिर वे अपने नेटवर्किंग से सट्टे के लिए मार्केटिंग और उन की सर्विस देने का काम करते थे. इस तरह उन को मुख्य ऐप की हिस्सेदारी मिली होती थी.

महादेव ऐप के शुरुआत की कहानी भी कुछ कम रोचक नहीं है, जिस का मुख्य मालिक महंगी शादी रचाने वाला सौरभ चंद्राकर है. उस की कहानी की शुरुआत छत्तीसगढ़ के पुराने स्टील प्लांट के लिए मशहूर भिलाई शहर से होती है.

करीब एक दशक पहले इस का नेहरू नगर मोहल्ले में महादेव जूस कौर्नर नामक एक जूस की दुकान थी. वह जूस की दुकान सौरभ चंद्राकर की थी. तब वह महज 17 साल का था.

सौरभ के पिता भिलाई नगर निगम में ग्रेड 4 कर्मचारी थे. परिवार की आर्थिक हालत ज्यादा अच्छी नहीं थी. पूरा परिवार एक टूटे हुए घर में रहता था. 12वीं तक पढ़ाई करने के बाद 2014 में उस ने काम करने की शुरुआत कर दी थी. वह भिलाई के आकाशगंगा नाम की बिल्डिंग में कपड़े की दुकान पर काम करने लगा था. तब उसे 12 से 14 हजार रुपए महीना की सैलरी मिलती थी.

सौरभ को शुरू से ही पैसा कमाने की चाहत बनी हुई थी. इस के लिए तरीके मालूम करता रहता था. इस दरम्यान उसे जुए की लत लग गई. वह मोबाइल पर सट्टेबाजी करने लगा. जिस बिल्डिंग में सौरभ काम करता था, वह सट्टेबाजी के लिए बदनाम थी. वहां ढेरों सट्टेबाज पहुंचते थे. बताते हैं कि सौरभ अवैध सट्टेबाजी के ग्रुप्स में शामिल हो गया था. वहीं उस की मुलाकात रवि उप्पल से हुई थी.

सौरभ की दिलचस्पी क्रिकेट में भी खूब थी. इसलिए उस ने सट्टे की शुरुआत इसी खेल में पैसे लगाने से शुरू की थी. ऐसा करते हुए उस ने दुकान की नौकरी छोड़ कर जूस की दुकान खोल ली थी. उस की दुकान से कुछ दूरी पर ही रवि उप्पल की टायर की दुकान थी. रवि सौरभ से उम्र में करीब 15 साल बड़ा था, लेकिन दोनों को सट्टेबाजी की लत लगे होने के कारण उन के बीच दोस्ती और गहरी हो गई थी.

खाली समय में जब भी दोनों साथ बैठते थे, कुछ नया धंधा करने की योजनाएं बनाते रहते थे. सौरभ को इस बात का एहसास तो हो गया था कि जूस बेच कर किसी तरह अपने घर की जरूरतें पूरी कर सकता है. जब तक कुंवारा है, तब तक तो किसी तरह से खर्च चल जाएगा, लेकिन शादी होने और बीवीबच्चों के आ जाने पर क्या होगा?

यही हाल रवि का भी था. उस की नजर में तब तक सट्टेबाजी ही सब से आसान और अधिक पैसा बनाने वाले धंधा था.

दोनों अपनी दुकान पर कम इस सट्टेबाजी के धंधे पर अधिक ध्यान देते थे. समय के साथसाथ सौरभ और रवि को सट्टा लगाने की लत और गहराती चली गई. दोनों ही औनलाइन सट्टेबाजी करने लगे. इस के लिए सौरभ और रवि ने प्लेस्टोर में आसानी से मिल जाने वाले ऐप्स का सहारा लिया.

शुरुआत में उन्होंने छोटेमोटे सट्टे लगाए. फायदा हुआ. फिर महसूस किया कि क्यों न बड़े सट्टे में भी हाथ आजमाया जाए. बड़े सट्टे में लगाया जाने वाला अमाउंट बड़ा होने लगा, लेकिन सट्टे में फायदा होना बंद हो गया. नुकसान शुरू हो गया.

दोनों पैसा लगाते रहे और गंवाते रहे. जब नींद खुली तो सौरभ 15 लाख रुपए तक गंवा

चुका था और रवि लगभग 10 लाख. तब तक साल 2018 आ चुका था.

हालांकि इस से पहले साल 2017 आतेआते सौरभ सट्टेबाजी में पुलिस की नजरों में चढ़ चुका था. एक रोज उसे कुछ पुलिस वाले पकड़ कर ले गए. इस से उस के पिता परेशान हो गए. उस ने स्थानीय नेता से उसे छुड़वाने की मदद मांगी. उन्हें फोन कर के बताया कि उन का बेटा दिन भर लैपटाप पर सट्टेबाजी करता है. आप उसे छुड़वा दीजिए. इस नेता ने पुलिस में बात की और छोटामोटा मामला होने की वजह से सौरभ छूट गया.

सट्टे में पैसा डूबने से सौरभ और रवि परेशान हो गए थे. सट्टा ऐप्स के कर्ज के पैसे नहीं चुका पा रहे थे. फिर क्या था सट्टेबाजों के गुर्गों ने उन्हें परेशान करना शुरू कर दिया था. उन के तगादे से दोनों परेशान थे.

दोनों बुरी तरह फंस चुके थे. कर्ज से बचने का एक ही विकल्प नजर आया. उन्होंने देश छोड़ कर भागने की योजना बना ली. दोनों ने जैसेतैसे कर टूरिस्ट वीजा बनवाया. दुबई का टिकट कटा लिया और रवाना हो गए.

जब सौरभ और रवि भिलाई से दुबई पहुंचे, तब वहां पर कमाने का संकट आ गया. बताते हैं कि दोनों ने वहां पर छोटेमोटे काम किए, लेकिन इस से काम बन नहीं रहा था. दुबई में दोनों की मुलाकात एक पाकिस्तानी से हुई. इस के बाद सौरभ, रवि और उस पाकिस्तानी की मुलाकात दुबई के एक शेख से हुई.

सौरभ और रवि ने शेख को अपनी योजना बताई. सट्टे के तौरतरीके और करोड़ों में होने वाली कमाई के बारे बताया और उस के प्रति भारत और पाकिस्तान में लोगों की ललक की तसवीर खींच दी. उन का प्लान शेख को पसंद आ गया. प्लान था औनलाइन सट्टेबाजी शुरू करने का. इस की कमाई के बंटवारे में पूरी तरह से पारदर्शिता थी.

फिर क्या था, दोनों जिस चीज में अपने हाथ जला कर भिलाई से दुबई भागे थे, उन्होंने उसी में हाथ आजमाने की योजना बना ली थी. वैसे रवि को पहले से सट्टा ऐप के बारे कुछ जानकारी थी. उन्होंने बाकायदा कंपनी बना कर ऐप बनाने के लिए यूरोप के कुछ सौफ्टवेयर डेवलपर और कोडर से संपर्क किया. साल 2020 का कोरोना लौकडाउन लग चुका था, जबकि सौरभ और रवि मिल कर अपनी प्लानिंग पर काम कर रहे थे.

उन्होंने एक ऐप और वेबसाइट बनवा ली. इस का नाम रखा महादेव बुक. यह नाम सौरभ ने अपने जूस कौर्नर के नाम पर ही दिया. उस के नाम से ही सट्टेबाजी के ऐप का नाम रख लिया.

इस तरह महादेव बुक लांच हो गया. इस का सब से पहला टारगेट मार्केट भारत को रखा गया. धुंआधार प्रचार किया गया. उन्हीं दिनों कोरोना लौकडाउन के चलते मोबाइल इस्तेमाल की कई गुना वृद्धि हो गई. एक बड़ी आबादी के एकाकीपन और कामकाज का साथ मोबाइल ही था. वही आय का साधन भी बन गया था. देखते ही देखते महादेव बुक का नाम लोगों की जुबान पर आ गया.

> बहुत जल्द ही महादेव की शाखाएं राजधानी दिल्ली, कोलकाता, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र में फैल गईं. इस ऐप के एक सेक्शन में प्रचारक के रूप में श्रद्धा कपूर, शक्ति कपूर, बी प्राक (प्रतीक बच्चन), बोमन ईरानी, विवेक ओबेराय, कुणाल खेमू, आदित्य राय कपूर, हुमा कुरैशी जैसे कलाकारों के वीडियो लगे हुए थे.

महादेव बुक से जुड़ते गए लोग

औनलाइन गेमिंग वाले सट्टे के कई ऐप्स पहले से चर्चा में थे, लेकिन महादेव बुक उन से अलग और आकर्षक था. इस के काम करने का तरीका लोगों को बहुत जल्द ही पसंद आ गया था. साथ ही यह प्रमोटरों के लिए सोने का अंडा देने वाली मुरगी से कम नहीं था. क्योंकि इस के जरिए लोग अलगअलग किस्म के गेम्स में सट्टा लगवाने लगे थे. वे थे— क्रिकेट, टेनिस, बैडमिंटन, फुटबाल जैसे फील्ड और कोर्ट गेम्स. इन के अलावा पोकर, तीन पत्ती, ड्रैगन टाइगर नाम के ताश के खेल भी थे.

यही नहीं, इस ऐप में लोगों से भारत में होने वाले चुनावों में भी सट्टा लगवाने के तरीके भी थे. जैसे, कौन कितनी सीट जीतेगा टाइप का सट्टा था. सट्टा सही हुआ तो जीत संभव और गलत हुआ तो हार गए. 100 रुपए का लगाया तो आप जीतने पर 100 रुपए मिलते थे. हारने पर 100 रुपए देने होते थे. यानी जो रुपया लगाया, वह नहीं मिलने वाला था. जब यह ऐप लांच हो गया तो लोगों ने धीरेधीरे पैसा लगाना शुरू किया.

धीरेधीरे ऐप का कारोबार बढ़ने लगा. लोग उस की गिरफ्त में आने लगे. मूर्ख बनने लगे. ठगे जाने लगे. उन की ठगी उसी तरह होती थी, जैसी ठगी के शिकार कभी सौरभ और रवि हुए थे. शुरू में थोड़ा पैसा लगाने पर प्रौफिट होता था. बाद में आदत लग जाने पर लोग मोटा पैसा लगाने लगे थे. फिर तो समझें कि उन का डूबना तय था.

कहने को तो महादेव बुक का हैडऔफिस दुबई में बनाया गया था और दोनों प्रमोटर यानी सौरभ चंद्राकर और रवि उप्पल दुबई में ही बैठते थे. वहीं से कामधंधा संभालते थे, जबकि भारत में महादेव बुक का काम पैनल के जरिए होता है. इन पैनल को ब्रांच भी कहा जाता था. ये किसी बड़ी कंपनी के क्षेत्रीय या सिटी औफिस की तरह काम करते थे.

पैनल को कोई भी अपने नाम कर सकता था. एक पैनल लेने के लिए हैडऔफिस को एक तय राशि का भुगतान करना होता था. उस के बाद पेमेंट करने वाला व्यक्ति पैनल का मालिक बन जाता था. फिर वह अपनी जरूरत के मुताबिक कर्मचारी रख लेता था और बिजनैस के लिए अपना नेटवर्क बना कर मार्केटिंग करता था.

कोई एक व्यक्ति एक से अधिक पैनल का मालिक बन सकता था, बशर्ते उस के संबंध दुबई में बैठे प्रमोटरों से अच्छे हों और मोटा पैसा दे सकता हो.

उस के बाद ऐप से आमदनी की शुरुआत हो जाती, जो एक गोरखधंधे वाले खेल से कम नहीं थी. दरअसल, महादेव बुक अपनी वेबसाइट और ऐप के जरिए बहुत सारे विज्ञापन चलाता था. इन विज्ञापनों में लोगों से महादेव बुक से जुड़ने और 24 घंटे सातों दिन गेम खेलने के लिए प्रेरित किया जाता था. इस की वेबसाइट पर सब से ऊपर लिखा होता—


Divisa
www.divisastore.com
रवीना टंडन
ने माना
सर्वोत्तम टॉनिक!
Clinically Tested*
*For efficacy and safety.
Live the active life...
'सच्ची सहेली' कठिन समस्याओं जैसे दर्द, चिड़चिड़ापन, थकान, कमजोरी, कमर कटना व इम्यूनिटी इत्यादि के लिए सहायक है। मैं खुद इसका नियमित प्रयोग करती हूँ।
Raveena Tandon
"दुआ में याद रखना"
67 दुर्लभ प्राकृतिक जड़ी बूटियों से बना
सच्ची सहेली
आयुर्वेदिक टॉनिक और टेबलेट्स
कठिन समस्याओं में अति सहायक है।
सच्ची सहेली
आयुर्वेदिक औषधीय टॉनिक
Net Qty: 190ml (6.42oz)
67 जड़ी-बूटियों से बना, महिलाओं के लिए भरोसेमंद आयुर्वेदिक टॉनिक
सच्ची सहेली®
आयुर्वेदिक सच्ची सहेली टॉनिक के साथ आयुर्वेदिक सच्ची सहेली की 20 टेबलेट्स फ्री
Helpline: 77106 44444 | www.sachisaheli.in
Available at all medical & general stores



ईडी द्वारा गिरफ्तार किया गया सिपाही भीम यादव

''ईमानदारी एक महंगा शौक है, जो हर किसी के बस की बात नहीं होती.''

बहुत जल्द ही महादेव की शाखाएं राजधानी दिल्ली, कोलकाता, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र में फैल गईं. इस ऐप के एक सेक्शन में प्रचारक के रूप में श्रद्धा कपूर, शक्ति कपूर, बी प्राक (प्रतीक बच्चन), बोमन ईरानी, विवेक ओबेराय, कुणाल खेमू, आदित्य राय कपूर, हुमा कुरैशी जैसे कलाकारों के वीडियो लगे हुए थे, वह लोगों को महादेव बुक में पैसा लगाने के लिए लोगों को प्रोत्साहित करते दिखते. वह कहते हैं, 'महादेव बुक भारत का सब से भरोसेमंद बुक है, आप 10 मिनट में अपना पैसा निकाल सकते हैं.'

हैरानी की बात यह थी कि महादेव बुक में पैसा लगाने के लिए लौगइन या रजिस्टर जैसी बात नहीं दी गई थी, बल्कि एक लाइन लिखी हुई थी कि हम सिर्फ वाट्सऐप के जरिए काम करते हैं और लोगों को दिए हुए 2 नंबरों पर मिस काल करनी होती है. इन दोनों नंबरों का आईएसडी कोड +44 है, जो यूनाइटेड किंगडम का है.

इस ऐप पर लगे हुए विज्ञापनों और स्पष्ट भाषा में दी गई जानकारी को कोई भी भरोसा कर लेता था. इस से जुड़ने की अधिक लंबी प्रक्रिया नहीं होने के चलते लोग इस पर सट्टा लगाने का तुरंत मन बना लेते. यहां सट्टा खेलने वाले को पंटर कहा जाता था. विज्ञापन में दिए वाट्सऐप नंबरों पर संपर्क करने पर पंटर्स को हैडऔफिस से 2 फोन नंबर दिए जाते थे. पहले नंबर पर कौंटैक्ट करने पर उन्हें एक यूजर आईडी दी जाती और पैसा जमा करने के लिए बैंक अकाउंट दिए जाते.

ये बैंक अकाउंट या तो जाली दस्तावेजों के जरिए खोले गए होते या किसी व्यक्ति को थोड़ा कमीशन दे कर उस का अकाउंट किराए पर ले लिया जाता. इस के बाद पंटर सट्टेबाजी करता है. सट्टे की जीत होने पर पौइंट मिलते थे. इस के बाद उसे जो दूसरा नंबर मिलता है, उस पर संपर्क करने पर पौइंट के बदले पैसा निकाल दिया जाता है.

नंबर और आईडी देने का काम भले ही दुबई के हैडऔफिस से होता हो, लेकिन सट्टा खेलने वाले की आईडी बनाने का काम भारत में बने पैनल करते थे. यही पैनल पंटर्स को जीतने पर पैसे का पेमेंट भी करते थे. बैंक में लगाए उन के पैसों को जमा करने का काम भी इन्हें ही सौंपा गया था. यह करने के लिए महादेव बुक कुछ वेबसाइटों का भी उपयोग करता. वे हैं— laser247.com, laserbook247.com, betbhai.com, betbook247.com, tigerexch247.com, cricketbet9. com.

प्रक्रिया पूरी होने के बाद यानी सट्टा लगाने वाले पंटर्स को शुरुआत में फायदा पहुंचाया जाता था, किंतु जैसे ही वह मोटी रकम के साथ सट्टा लगाता, वैसे ही उसे नुकसान होने लगता था. इस तरह से पंटर्स द्वारा लगाया गया पूरा पैसा महादेव बुक का हो जाता.

इस पर नियम के मुताबिक सट्टा लगाने वाला किसी भी तरह का क्लेम नहीं कर पाता और हारे हुए जुआरी की तरह मन मसोस कर रह जाता था. इस हालत में सब से पहला फायदा भारत में मौजूद पैनल को होता था. कारण रजिस्टर उस के पास ही होता था और पैसे का लेनदेन भी वहीं से होता था.

उस के बाद हैडऔफिस से तय डील के अनुसार इस फायदे का 70 प्रतिशत दुबई में बैठे सौरभ और रवि के पास हवाला के जरिए चला जाता था. इस तरह से पैनल को 30 प्रतिशत का हिस्सा मिल जाता था.

सट्टे का यह गेम कितना बड़ा हो सकता है, इस बारे में हिंदुस्तान टाइम्स की एक खबर से पता चलता है. खबर के मुताबिक दुबई के प्रमोटरों के पास पूरे भारत में 4 हजार से अधिक पैनल बने थे. प्रत्येक पैनल के पास 200 से अधिक पंटर्स थे. यानी स्कीम में पैसा लगाने वाले 8 लाख से ज्यादा लोग. यह इतना बड़ा सेटअप था कि सौरभ और रवि एक दिन में 200 करोड़ रुपए कमाते थे.

महादेव ऐप पर ऐसे गिरी गाज

जितनी तेजी से महादेव बुक लोगों के बीच लोकप्रिय हुआ, उतनी ही तेजी से औनलाइन सट्टेबाजों में इस से मूर्ख बनने और ठगे जाने वालों की नकारात्मक प्रतिक्रियाएं भी फैलने लगीं. यहां तक कि इस में मोटा पैसा गंवाने वाले हजारों लोग इतने निराश हो गए कि वे डिप्रेशन में आ गए या फिर कइयों ने आत्महत्या करने तक की कोशिश कर डाली. बताते हैं इस सट्टे की वजह से कई लोगों ने आत्महत्या तक कर ली. जबकि कुछ लोग गुस्से में आ गए.

इन के बारे में आई कई खबरों से मालूम हुआ कि जब पंटर्स को नुकसान होना शुरू हुआ तो स्थानीय पैनल और महादेव ऐप के खिलाफ धोखाधड़ी के केस दर्ज कराए गए. कई जगहों पर पैनल के लोगों पर आत्महत्या के लिए उकसाने के भी केस दर्ज हुए.

भिलाई पुलिस को पहली बार 2021 में भिलाई के तालपुरी इंटरनैशनल कालोनी में महादेव ऐप के पैनल द्वारा संचालित आर्गेनाइज्ड सट्टे की जानकारी मिली थी. पुलिस वहां जांच के लिए गई जरूर, मगर कोई सबूत नहीं मिल पाया, जिस से महादेव बुक के खिलाफ कोई काररवाई की जा सके.

फिर भी पुलिस ने छापेमारी के दौरान कुछ कंप्यूटर्स बरामद किए थे. वह कहीं बाहर से औपरेट हो रहे थे. इसी तरह से दुर्ग पुलिस ने मार्च, 2022 में मोहननगर नामक इलाके में एक दूसरी जगह छापेमारी की थी. इस दौरान पुलिस को चंद्राकर और उप्पल तो नहीं मिले, मगर उन के हाथ एक अहम जानकारी लगी. अक्तूबर 2022 में ईडी को इस की जानकारी दे दी गई.

उस जांच में पता चला कि महादेव बेटिंग ऐप नाम के एक औनलाइन प्लेटफार्म के जरिए

सट्टेबाजी की जा रही है. इस ऐप पर न सिर्फ तीनपत्ती और पोकर जैसे लाइव गेम्स खेले जा रहे हैं, बल्कि क्रिकेट और चुनावी नतीजों पर दांव भी लगाए जा रहे हैं. ईडी ने जांच में पाया कि चंद्राकर और उप्पल दोनों इस ऐप के प्रमोटर्स हैं. दोनों दुबई में छिपे हुए हैं और वहां से ऐप को औपरेट कर रहे हैं.

नोएडा पुलिस ने 16 को दबोचा

कुछ इसी तरह की सट्टेबाजों के गिरोह की शिकायत अक्तूबर, 2022 में नोएडा पुलिस को मिली थी. इस की तह तक जातेजाते उसे महीनों लग गए थे. तब तक महादेव के पैनल के खिलाफ ईडी का शिकंजा भी कसा जाने लगा था. नोएडा पुलिस कमिश्नर लक्ष्मी सिंह के निर्देश पर गैंगस्टर ऐक्ट के तहत काररवाई की गई.

नोएडा पुलिस ने फरवरी 2023 में छापेमारी में 16 लोगों को गिरफ्तार कर लिया. इस बारे में एडिशनल डीसीपी शक्तिमोहन अवस्थी ने बताया कि गिरफ्तारों के साथसाथ सौरभ और रवि भी आरोपी बना दिए गए. उन में ऐप के पैनल सरगना तरुण लखेड़ा भी शामिल था.

पुलिस अधिकारियों ने बताया कि सेक्टर-108 से झांसी निवासी तरुण लखेड़ा, राहुल, अभिषेक प्रजापति, आकाश साहू, हिमांशु, अनुराग वर्मा, विवेक, दीपक कुमार, विशाल शर्मा, रावत, दिव्य प्रकाश, हर्षित चौरसिया, अक्षय तिवारी, नीरज गुप्ता, आकाश जोगी और दीपक सहित 16 लोगों को गिरफ्तार किया था. पूछताछ में आरोपियों के डेढ़ माह से सट्टेबाजी का रैकेट चलाने की बात सामने आई थी. गिरोह के दूसरे आरोपी जो पुलिस के हत्थे नहीं चढ़े थे, उन की लोकेशन दुबई, बांग्लादेश, थाईलैंड समेत 11 देशों में अलगअलग मिली थीं.

पुलिस पूछताछ में सामने आया कि नोएडा में इस का सरगना बने बैठे तरुण ने ठिकाने के तौर पर सेक्टर-108 में कोठी किराए पर ली थी. यहीं पूरा सेटअप तैयार किया था. महादेव ऐप



ईडी द्वारा की गई छापेमारी में बरामद नकदी, सोना और आभूषण

पर आने वाली बोलियों के डेटा को यहां ऐप की लौगइन आईडी से संभाला जा रहा था.

जांच में यह बात भी सामने आई कि नोएडा से चल रहे इस रैकेट द्वारा डेढ़ महीने में 400 करोड़ रुपए का ट्रांजैक्शन किया जा चुका है. बहरहाल, ईडी की काररवाई के बाद महादेव गेमिंग ऐप के 18 लोगों के खिलाफ नोएडा सेक्टर-39 पुलिस ने अपनी काररवाई करते हुए उन की संपत्ति कुर्क करने की बात कही है.

ईडी की जांच में पता चला कि आरोपी अलगअलग वेबसाइटों पर कौंटैक्ट नंबरों का विज्ञापन किया करते थे. लोगों को लालच दिया जाता था कि अगर वह इस नंबर से संपर्क करेंगे तो उन्हें मुनाफा होगा. अगर किसी को दिलचस्पी होती थी तो उसे सट्टेबाजी वाली वेबसाइट पर भेजा जाता था.

यूजर के पास आप्शन होता था कि वह किसी भी खेल पर दांव लगा सकता है. शुरुआती रकम 500 रुपए होती थी. शुरू में यूजर जीतता भी, मगर जैसे ही वह बड़ी रकम लगाता, उसे हार मिलती.

इस ऐप को इस तरह से डिजाइन किया गया था कि खेल पर पूरा कंट्रोल इसे बनाने वाले यानी चंद्राकर की कंपनी के पास होता था. यही वजह थी कि खेल शुरू होने से पहले ही हार तय होती थी. ईडी ने जब अगस्त, 2023 में छत्तीसगढ़ में छापेमारी की थी, तब मनी लांड्रिंग मामले में 4 लोगों को पकड़ा था. इन में सुनील दम्मानी, अनिल दम्मानी, सतीश चंद्राकर और एएसआई चंद्रभूषण वर्मा शामिल थे. इन लोगों ने इस बेटिंग ऐप को भारत में फैलाने का काम किया था.

ईडी न केवल महादेव के खिलाफ काररवाई कर रही थी, बल्कि उस के इनफ्लुएंसर पर भी नजर गड़ाए हुए थी. ईडी ने बौलीवुड के कई उन सितारों को भी पूछताछ के लिए बुलवाया, जिन का नाम ऐप के प्रचारकों में शामिल था. उन्होंने ईडी से थोड़ा समय मांग लिया. इन पर महादेव ऐप के प्रचार करने के लिए मोटा पैसा लेने का आरोप लगा. इन लोगों को महादेव बुक ने भले ही कई रूट से पैसा घुमा कर दिया, लेकिन आखिर वह पैसा सट्टेबाजी का ही था.

वेबसाइट पर दिख रहे कलाकारों के अलावा भी कई कलाकारों ने इस ऐप को प्रोमोट किया है. उन में रणबीर कपूर, हुमा कुरैशी, कपिल शर्मा और हिना खान के नाम भी शामिल हैं.

इसी तरह से सौरभ चंद्राकर की शादी में दुबई जाने वाले कलाकारों में आतिफ असलम, राहत फतेह अली खान, अली असगर, विशाल दडलानी, टाइगर श्राफ, नेहा कक्कड़, एली अवराम, भारती सिंह, सनी लियोनी, भाग्यश्री, पुलकित, कृति खरबंदा, नुसरत भरूचा, कृष्णा अभिषेक और सुखविंदर सिंह थे. महादेव बुक से जुड़ी जांच जैसेजैसे आगे बढ़ी, ईडी के जाल

में बड़ीबड़ी बौलीवुड हस्तियां फंसती नजर आईं. इस ऐप की सट्टेबाजी से मनी लांड्रिंग और हवाला, घूसखारी, गबन के आए मामले में करीब 5 हजार करोड़ की हेराफेरी किए जाने का अनुमान लगाया गया है.

ईडी अधिकारियों ने यह भी दावा किया है कि सट्टेबाजी ऐप अपनी कंपनी को बढ़ावा देने के लिए विज्ञापन पर भारी रकम खर्च करता था. ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए बौलीवुड सितारों के साथ विज्ञापन किया था. अधिक लोग पैनल के रूप में फ्रैंचाइजी लेने के लिए निवेश करते थे. विज्ञापन और मनोरंजन की देखभाल के लिए एक इवेंट मैनेजमेंट कंपनी और विज्ञापन एजेंसी को 112 करोड़ रुपए का भुगतान भी किया गया था.

ईडी ने जब्त की कई सौ करोड़ की संपत्ति

ईडी द्वारा मुंबई, भोपाल, कोलकाता में एक साथ तलाशी ली गई थी. अधिकारियों ने नकदी समेत 417 करोड़ रुपए की संपत्ति बरामद की. ईडी अधिकारियों के मुताबिक विकास छापरिया नाम का शख्स कोलकाता में इस कारोबार का प्रभारी था.

ईडी अधिकारी असीम दास नाम के एक कैश कुरिअर को रोकने में सफल हो गए थे. दास के पास से कथित तौर पर बड़ी मात्रा में नकदी पहुंचाने के मिशन के साथ यूएई से कोलकाता भेजा गया था.

उस के वाहन और आवास दोनों से कुल 5.39 करोड़ रुपए जब्त किए गए. एजेंसी ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर बड़े पैमाने पर नकदी जब्ती की तसवीरें भी पोस्ट कीं.

जांच के दौरान, ईडी ने महादेव ऐप से जुड़े बेनामी बैंक खातों के जाल का परदाफाश किया, जिस में कुल मिला कर 15.59 करोड़ रुपए की रकम जमा थी. दास ने यह भी कुबूल किया कि उस का मकसद सट्टेबाजी ऐप के प्रमोटरों द्वारा राज्य में आगामी चुनाव खर्चों का समर्थन करने के लिए 'बघेल' नाम से जाने जाने वाले एक प्रमुख राजनेता को पहुंचाने का था. बाद में ईडी ने दावा किया कि महादेव बुक ऐप के प्रमोटरों ने कथित तौर पर पहले भी छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल को लगभग 508 करोड़ का नियमित भुगतान किया था.

इसी तरह से ईडी ने पुलिस कांस्टेबल भीम यादव को भी गिरफ्तार किया, जिस पर मनी लांड्रिंग का आरोप लगाया गया था. जांच से पता चला कि पिछले 3 सालों में यादव ने दुबई की कई यात्राएं की थीं. पूछताछ में उस ने महादेव ऐप के मुख्य प्रमोटरों रवि उप्पल और सौरभ चंद्राकर से मिलने की बात कुबूल की थी.

उन्होंने महादेव ऐप द्वारा आयोजित हाईप्रोफाइल समारोहों में भाग लेने की बात भी स्वीकार की, जिस में उस का यात्रा खर्च मेसर्स रैपिड ट्रैवल्स द्वारा कवर किया गया था. यह ऐसी कंपनी थी, जिस के जरिए महादेव ऐप प्रमोटरों, परिवार, व्यावसायिक सहयोगियों और मशहूर हस्तियों के संपूर्ण टिकट संचालन का काम किया जाता था.

असीम दास और पुलिस कांस्टेबल भीम यादव दोनों को रायपुर में विशेष न्यायाधीश के सामने पेश किया गया, जहां ईडी ने उन की चौंकाने वाली बातें स्वीकार कर लीं और स्वतंत्र रूप से पुष्टि करने और मनी लौंड्रिंग से संबंधित सबूत इकट्ठा करने के लिए उन से हिरासत में पूछताछ की मांग की. अदालत ने उन्हें 7 दिनों की अवधि के लिए ईडी की हिरासत में भेज दिया.

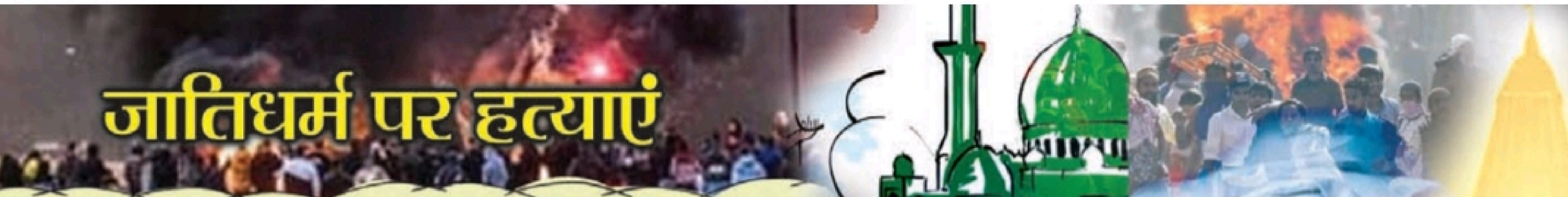
सट्टा ऐप मामले में ईडी द्वारा तेज की गई जांच के सिलसिले में रायपुर में 2 आईपीएस अधिकारियों पर भी शिकंजा कस दिया. कबीरधाम के एसपी डा. अभिषेक पल्लव से 9 नवंबर को 5 घंटे की पूछताछ के बाद अगले रोज 10 नवंबर को रायपुर के एसएसपी प्रशांत अग्रवाल से भी पूछताछ की गई.

उन्हें पूछताछ के लिए वाट्सऐप पर नोटिस भेजा गया था. ईडी ने अभिषेक से दुर्ग में तैनाती के दौरान महादेव ऐप के खिलाफ की गई कारवाई की जानकारी ली. साथ ही उन से एक मीडिया संस्थान के स्टिंग औपरेशन के बारे में भी पूछा गया.

लंबी पूछताछ में उन से महादेव ऐप के कथित संचालक शुभम सोनी की जानकारी मिली. उस की ओर से सोशल मीडिया पर जारी वीडियो को ले कर पूछा गया. उक्त वीडियो में शुभम ने प्रशांत अग्रवाल और अन्य लोगों का नाम लिया था.

इस संबंध में प्रशांत अग्रवाल से फोन पर जानकारी लेने की कोशिश की गई, लेकिन उन्होंने काल रिसीव नहीं की. विशेष शाखा में पदस्थ इंसपेक्टर गिरीश तिवारी से भी पूछताछ की गई. इस मामले में 2 आरोपियों सुनील दम्मानी और अनिल दम्मानी की ओर से लगाए गए जमानत आवेदन को कोर्ट ने खारिज कर दिया. ●

—कथा लिखने तक ईडी इस मामले की तह तक पहुंचने में जुटी हुई थी.



जातिधर्म पर हत्याएं

अंतरजातीय प्यार, 3 हत्याएं

बिहार के जिला लखीसराय में अंतरजातीय प्यार के चक्कर में 3 लोगों की गोली मार कर हत्या कर दी गई. बताया जाता है कि पंजाबी मोहल्ले में रहने वाला पिछड़ी जाति का युवक आशीष चौधरी पास में ही रहने वाली सवर्ण जाति की एक लड़की को एकतरफा प्यार करता था. उस की एक तरफा चाहत पिछले 3 सालों से कायम थी.

वह उस से शादी करना चाहता था, लेकिन लड़की के घर वाले उस से शादी करने को तैयार नहीं थे. उन्होंने इस बारे में आशीष को बहुत समझाया, लेकिन वह नहीं माना क्योंकि वह तो प्यार के जुनून में अंधा हो चुका था.

फिर सिरफिरे आशिक आशीष ने छठ पूजा का अर्घ्य दे कर लौट रही लड़की के साथ उस के घर के 6 लोगों पर गोलियों की बरसात कर दी.



गोली लगने पर लड़की और उस के 2 भाइयों की मौत हो गई तथा परिवार के 3 लोग घायल हो गए.

सूचना मिल ने पर पुलिस भी घटनास्थल पर पहुंच गई और घायलों को तुरंत अस्पताल पहुंचाया. खबर लिखने तक पुलिस आरोपी को तलाश रही थी. ❍

धर्मांतरण की शर्त से की खुदकुशी

उत्तर प्रदेश के औरैया जिले के बिधूना इलाके में प्रेमिका ने अपने प्रेमी पर धर्म परिवर्तन का ऐसा दबाव बनाया कि उसे वह सहन नहीं कर पाया. फिर जो हुआ उस में प्रेमी की मौत हो गई. इस आरोप में प्रेमिका के पिता और मौसा गिरफ्तार कर लिए गए, जबकि 4 अन्य फरार हो गए.

मामला गांव बरकापुरवा वासी रोहित का है. उस की सहार थाना क्षेत्र के गांव इंदपामऊ निवासी एक मुसलिम लड़की से नजदीकियां बढ़ गई थीं. दोनों दिल्ली चले गए. लड़की के घर वालों ने रोहित पर अपहरण का मुकदमा दर्ज करवा दिया, जिस से उसे जेल भेज दिया गया. उस के वापस लौटने पर प्रेमिका ने धर्मांतरण की शर्त रखी. इतना ही नहीं, 14 नवंबर, 2023 को प्रेमिका अपने पिता सत्तार खां, सलमान खान, टल्ली खां, टुन्नक खां, वकील खां और बिधूना निवासी मौसा बंटी खां असलहा ले कर उस के घर में घुस आए. उन्होंने उसे धमकाया.

प्रेमी इस घटना से इतना डर गया था कि उस ने 18 नवंबर को न केवल जहरीला पदार्थ खा लिया, बल्कि मौत के करीब जाते हुए अपने उत्पीड़न और दर्द की वीडियो बना ली. ❍

दलित महिला के हुए चिथड़े

उत्तर प्रदेश के बांदा में पिछले दिनों एक दलित महिला की लाश मिलने पर इलाके में हड़कंप मच गया. खास कर अनुसूचित जाति समुदाय में भय का माहौल बन गया, जबकि दलित युवा आक्रोशित हो गए. परिजनों ने हत्या का आरोप लगाते हुए पुलिस और प्रशासन से हत्यारों को गिरफ्तार करने की गुहार लगाई.

सूचना पुलिस को दी गई. परिजनों के आरोप के आधार पर गांव के 3 लोगों पर भादंवि की धारा 302, 376 सहित एससी/एसटी ऐक्ट का मामला दर्ज कर शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया.

घटना के अनुसार महिला को पड़ोस में एक चक्कीघर में लिपाईपुताई के लिए बुलाया गया था. वहीं उस की लाश बिना कपड़ों के कई टुकड़ों में पाई गई थी. इस हालत में मृतका की बेटी ने आरोप लगाया कि उस की मां के साथ रेप हुआ है और फिर उस की हत्या कर दी गई.

इस घटना के बारे में डीएसपी नितिन कुमार ने बताया कि 40 वर्षीया महिला पड़ोस की एक चक्की में काम कर रही थी और चक्की की चपेट में आने से उस की मौत हो गई थी. मौके पर फौरैंसिक टीम के साथ जांचपड़ताल की गई. ●



गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश

200 करोड़ की संपत्ति के लिए बनी फरजी दुलहन

❑ प्रकाश पुंज







फरजी दुलहन
प्रीति

"दुआ में याद रखना"

सचिन ने डा. सुधा के घर अपनी भांजी प्रीति को पहले मेड की नौकरी पर रखवाया, फिर उन की 200 करोड़ की संपत्ति पर कब्जा पाने के लिए उन के इकलौते मंदबुद्धि बेटे से प्रीति की फरजी शादी करा दी. इसी दौरान डा. सुधा की मृत्यु हो गई. उन की मौत के बाद क्या प्रीति और सचिन को वह संपत्ति मिली? पढ़िए, सोशल क्राइम की यह दिलचस्प कहानी.

प्रीति को डा. सुधा के घर लाने से पहले ही सचिन ने उसे अच्छी तरह से समझा दिया था. हालांकि डा. सुधा का बेटा शिवम देखनेभालने में स्मार्ट था, लेकिन जब इंसान दिमागी रूप से अस्वस्थ हो तो उस की सुंदरता का कोई लाभ नहीं. फिर भी प्रीति ने डा. सुधा के घर आते ही अपना पूरा ध्यान शिवम पर फोकस कर दिया था.

वह घर के कामकाज करने के साथसाथ पूरे दिन शिवम की ही चापालूसी में लगी रहती थी. जिस से शिवम भी उस के साथ खुश रहने लगा था. उस के साथसाथ प्रीति डा. सुधा का भी पूरा ध्यान रखती थी. जिस के कारण कुछ ही दिनों में प्रीति ने डा. सुधा का मन जीत लिया और वह जल्दी ही उन के घर के सदस्य की तरह बन गई थी.

खुश हो कर डा. सुधा ने जब प्रीति की तारीफ करनी शुरू कर दी, तब प्रीति उस घर की बहू बनने के सपने संजोने लगी थी. कुछ ही दिनों में उस के रहनसहन में भी काफी बदलाव आ गया था. उस ने पूरी तरह से खुद को डा. सुधा के परिवार के अनुरूप ही ढाल लिया था. वह हर रोज महंगे कपड़े पहन कर बनठन कर रहती थी.

22 फरवरी, 2023 को डा. आकांक्षा ने अपनी मम्मी डा. सुधा सिंह को फोन किया, "कैसी हो मम्मी ? कुछ खापी भी रही हो या नहीं ?"

"हां बेटी, अब तो ठीक हूं मैं. बेटी, अब तू मेरी चिंता छोड़ दे. तेरे सचिन अंकल ने मेरी सेवा के लिए प्रीति नाम की एक मेड रखवा दी है. वह मेरी पूरी तरह से सेवा कर रही है." डा. सुधा ने बताया.

डा. आकांक्षा सचिन को अच्छी तरह से जानती थी. सचिन का उन के घर पर पहले से ही आनाजाना था. यह सुन कर डा. आकांक्षा ने कुछ राहत की सांस ली. सोचा कि अब उसी के सहारे उस के भाई शिवम को भी खानापीना ठीक से मिल जाया करेगा.

उत्तर प्रदेश के जिला गाजियाबाद के मुरादनगर निवासी यूनिक ग्रुप औफ कालेज की चांसलर सुधा काफी समय से कैंसर रोग

से ग्रस्त थीं. इस वक्त उन की बीमारी तीसरे स्टेज से गुजर रही थी. बहुत समय पहले किसी बीमारी के चलते उन के पति की मौत हो गई थी. उन की मौत के बाद यूनिक इंस्टीट्यूट औफ मैनेजमेंट टेक्नोलौजी (यूआईएमटी) की जिम्मेदारी उन्हीं के ऊपर आ पड़ी थी.

उन के 2 बच्चे थे, जिन में बड़ी बेटी आकांक्षा तथा उस से छोटा बेटा शिवम. बेटी आकांक्षा पढ़लिख कर डाक्टर बन गई, लेकिन उन का बेटा शिवम मंदबुद्धि था. जिस के कारण वह न तो ज्यादा पढ़लिख ही पाया था और न ही उस में किसी तरह की सोचसमझ की शक्ति ही थी.

सारी संपत्ति कर दी बेटी के नाम

डा. सुधा के पास अकूत संपत्ति थी, लेकिन उन्हें दुख इस बात का था कि उन का बेटा इस काबिल नहीं था कि उन के बाद वह पूरी तरह से अपनी देखरेख कर सके. इसी कारण उन्होंने समय रहते ही अपनी सारी संपत्ति बेटी आकांक्षा के नाम कर दी थी. जिस से उन की मौत के बाद वह उस की मालकिन बन जाए और अपने भाई की भी देखरेख करती रहे.

डा. सुधा ने समय रहते ही अपनी बेटी की शादी भी कर दी. डा. आकांक्षा दुलहन बन कर अपनी मम्मी और भाई को छोड़ कर अपनी ससुराल चली गई थी. लेकिन उस के बाद भी वह अपने भाई और मम्मी की पूरी तरह से खैरखबर लेती रहती थी. डा. सुधा इस वक्त 2 कालेजों की मालकिन थीं.

बेटे के मंदबुद्धि होने के कारण दोनों कालेजों की जिम्मेदारी उन्हें ही उठानी पड़ रही थी. अपने पति के निधन के बाद डा. सुधा ने सब कुछ ठीकठाक ही संभाल लिया था. लेकिन अचानक ही उन की भी तबीयत खराब रहने लगी, जिस के बाद उन की बेटी ने उन के चैकअप कराए तो पता चला कि डा. सुधा कैंसर से पीड़ित हैं. यह सुन कर डा. सुधा के साथसाथ उन की बेटी डा. आकांक्षा को भी बहुत बड़ा झटका लगा.

बीमारी भी ऐसी जिस का कोई इलाज ही



बेटे शिवम के साथ यूनिक इंस्टीट्यूट औफ मैनेजमेंट टेक्नोलौजी की चेयरपरसन डा. सुधा

नहीं. फिर भी डाक्टरों की सलाह पर उन्होंने महंगे से महंगा उन का इलाज कराया लेकिन उस से उन्हें कोई आराम नहीं मिल पा रहा था. धीरेधीरे उन की बीमारी तीसरे चरण पर पहुंच गई थी.

उसी दौरान सचिन उन की बीमारी के चलते उन की खैरखबर लेने उन के घर पहुंचा. सचिन का उन के घर पर काफी समय पहले से आनाजाना था. डा. सुधा ने कई बार उस के सामने अपने बेटे की चिंता जताते हुए अपनी परेशानी जाहिर की, "सचिन, तुम तो जानते हो कि मेरा बेटा किसी लायक नहीं है. न तो वह खुद कुछ बना कर खाता है और न ही मेरी कोई सहायता ही कर पाता है. इसीलिए अगर तुम्हारी नजर में कोई अच्छी लड़की हो तो बताओ, जो मेरी देखरेख के साथसाथ मेरे बेटे के खानेपीने की भी व्यवस्था करे और घर की देखरेख भी कर सके."

"हांहां क्यों नहीं. भाभीजी, आप परेशान न हों. इस सब की चिंता करने की कोई जरूरत नहीं. आप का यह काम जल्दी ही हो जाएगा."

सचिन ने उसी समय अपने मोबाइल पर एक लड़की का फोटो दिखाते हुए कहा, "देखो भाभी, लड़की तो यह है. घर के कामकाज में पूरी तरह से परफेक्ट है. यह ऐसी मिलनसार है कि यह आप के साथसाथ आप के बेटे की भी पूरी तरह से देखरेख करेगी."

डा. सुधा ने लड़की का फोटो देखते ही कहा, "लड़की तो ठीक है. लेकिन मैं चाहती हूं कि लड़की ज्यादा चालाक नहीं होनी चाहिए."

"अरे भाभी, कैसी बात करती हो. जब इस लड़की को मैं आप के घर पर रखवाऊंगा तो उस की जिम्मेदारी मेरी ही होगी. आप किसी



Dr. Juneja's
डा.ऑर्थो®
तेल

पेश है डा. ऑर्थो का बड़ा पैक, बड़ी बचत के लिए.

आज ही ले आईये ₹~~590/-~~

अब सिर्फ
₹395*/-



200ml

*एमआरपी (सभी करों सहित)

24x7 Helpline: 78769 77777 | www.drorthooil.com | Available at all medical & general stores.

तरह की टेंशन न लें. मैं कल ही इसे आप के पास ले आता हूं.'' सचिन बोला और कुछ देर रुक कर वहां से चला गया.

23 फरवरी, 2023 को सचिन अपने साथ प्रीति नाम की एक खूबसूरत युवती को अपने साथ ले कर उन के घर पर पहुंचा. डा. सुधा ने देखते ही उसे पसंद कर लिया और अपने घर की चाबी भी उस के हवाले कर दी. उस के बाद प्रीति उसी दिन से डा. सुधा के घर पर मेड का काम करने लगी थी.

प्रीति को डा. सुधा के घर लाने से पहले ही सचिन ने उसे अच्छी तरह से समझा दिया था. हालांकि डा. सुधा का बेटा शिवम देखनेभालने में स्मार्ट था, लेकिन जब इंसान दिमागी रूप से अस्वस्थ हो तो उस की सुंदरता का कोई लाभ नहीं. फिर भी प्रीति ने डा. सुधा के घर आते ही अपना पूरा ध्यान शिवम पर फोकस कर दिया था.

प्रीति ने घर में जमा लिया अपना प्रभाव

वह घर के कामकाज करने के साथसाथ पूरे दिन शिवम की ही चापलूसी में लगी रहती थी. जिस से शिवम भी उस के साथ खुश रहने लगा था. उस के साथसाथ प्रीति डा. सुधा का भी पूरा ध्यान रखती थी. जिस के कारण कुछ ही दिनों में प्रीति ने डा. सुधा का मन जीत लिया और वह जल्दी ही उन के घर के सदस्य की तरह बन गई थी.

खुश हो कर डा. सुधा ने जब प्रीति की तारीफ करनी शुरू कर दी, तब प्रीति उस घर की बहू बनने के सपने संजोने लगी थी. कुछ ही दिनों में उस के रहनसहन में भी काफी बदलाव आ गया था. उस ने पूरी तरह से खुद

> डा. सुधा के पास अकूत संपत्ति थी, लेकिन उन्हें दुख इसी बात का था कि उन का बेटा इस काबिल नहीं था कि उन के बाद वह पूरी तरह से अपनी देखरेख कर सके. इसी कारण उन्होंने समय रहते ही अपनी सारी संपत्ति बेटी आकांक्षा के नाम कर दी थी. जिस से उन की मौत के बाद वह उस की मालकिन बन जाए और अपने भाई की भी देखरेख करती रहे.

को डा. सुधा के परिवार के अनुरूप ही ढाल लिया था. वह हर रोज महंगे कपड़े पहन कर बनठन कर रहती थी.

कैंसर की बीमारी के चलते ही 7 अगस्त, 2023 को डा. सुधा की मौत हो गई. अपनी मां की मौत होने पर डा. आकांक्षा भी अपने घर आई. मां की मौत के बाद वह पहली बार प्रीति से मिली थी. उस से पहले उस ने उस का फोटो ही देखा था.

प्रीति को घर में देख कर उसे हैरत हुई. उस वक्त उस के साथ 2 अन्य महिलाएं भी थीं, इसलिए डा. आकांक्षा ने प्रीति से उन के बारे में जानकारी ली, तब उस ने नीलम नामक युवती को अपनी मौसी और उस के साथ आई दूसरी महिला प्रवेश को अपनी दूर की रिश्तेदार बताया.

प्रीति ने बताया कि वह उस से मिलने के लिए आई थीं. इस के बाद भी डा. आकांक्षा की समझ में यह बात नहीं आ रही थी कि अगर वह उस से मिलने ही आई थीं तो वह अभी तक उसी के पास क्यों ठहरी हुई हैं.

डा. सुधा की मृत्यु के बाद सभी संस्कार संपन्न हो चुके थे, फिर भी वह दोनों ही औरतें वहीं पर टिकी पड़ी थीं. जिन को देख कर डा. आकांक्षा का माथा ठनका. उस के बाद उस ने प्रीति से कहा कि अब उन्हें घर में मेड की जरूरत नहीं है. इसलिए आप लोग अपने घर जा सकती हो.

आकांक्षा की बात सुनते ही प्रीति बोली, ''दीदी, अब मैं यहां से कहां जाऊं, अब तो यही मेरा घर है. अब मैं इस घर की बहू और तुम्हारी भाभी हूं.''

यह बात सुनते ही डा. आकांक्षा को दिन में तारे नजर आ गए. वह बोली, ''क्या बकवास कर रही हो तुम? जानती हो कि क्या कह रही हो?''

''हां दीदी, मैं जो भी कह रही हूं, वह सच ही है. अगर तुम्हें विश्वास नहीं हो रहा तो अपने भाई से ही पूछ लो.''

लेकिन शिवम तो पहले ही मंदबुद्धि था. उस के बाद भी डा. आकांक्षा को विश्वास नहीं हुआ तो प्रीति ने आकांक्षा को शादी के फोटो दिखाते हुए विश्वास दिलाने की कोशिश की. जिस में वह अस्पताल के रूम में शिवम के साथ उस के गले में माला पहनाते हुए नजर आ रही थी.

यह सब देखते हुए उसे हैरत हुई. उसे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि उस की मम्मी उसे बिना कुछ बताए ही इतना बड़ा कदम कैसे उठा सकती थीं. डा. आकांक्षा की हर रोज ही अपनी मम्मी से बात होती थी. लेकिन एक दिन भी उन्होंने उस से इस बारे में जिक्र तक नहीं किया था.

फिर भी डा. आकांक्षा ने प्रीति से शादी के मामले में कोई अन्य प्रूफ दिखाने की बात

कही, लेकिन प्रीति के पास न तो कोर्ट मैरिज का कोई पेपर ही था और न ही किसी प्रकार का कोई अन्य सबूत. प्रीति के पास फोटो के अलावा कोई सबूत नहीं मिला तो उस ने तीनों महिलाओं को घर से निकल जाने को कहा. साथ ही डा. आकांक्षा ने तीनों को धमकी दी कि अगर वह सीधी तरह से घर से नहीं निकली तो वह उन्हें पुलिस के हवाले कर देगी.

पुलिस की धमकी सुन कर प्रीति ने फोन कर के सचिन को भी बुला लिया. डा. आकांक्षा सचिन को ठीक से जानती थी. सचिन के आते ही डा. आकांक्षा ने कहा, ''अंकल, आप ने तो प्रीति को हमारे यहां पर एक मेड के काम के लिए रखवाया था. फिर अब वह जो बकवास कर रही है, वह सब क्या नौटंकी है ?''

डा. आकांक्षा की बात सुनते ही सचिन ने बताया कि आप की मम्मी ने मेरे सामने ही आप के भाई की शादी प्रीति के साथ कराई थी. आप की मम्मी शिवम को ले कर काफी समय से परेशान थीं. बीमारी के दौरान उन्होंने ही मेरे सामने शिवम की शादी प्रीति के साथ करने की इच्छा जाहिर की थी.

उन्होंने कहा था कि अब मेरा तो पता नहीं कि कब मौत आ जाए. मेरी मौत के बाद मेरा बेटा बिलकुल ही अकेला पड़ जाएगा. मैं चाहती हूं कि मेरे जिंदा रहते ही मेरे बेटे की शादी हो जाए, जिस से मेरी मौत के बाद मेरा बेटा ठीकठाक रह सके. यही इच्छा जाहिर करते ही उन्होंने अस्पताल में एकदूसरे को माला पहना कर शादी की थी.

सचिन ने डा. आकांक्षा के सामने जो बात कही थी, वह भी उस के गले नहीं उतर रही थी. फिर भी उस ने कहा कि वह इस शादी पर विश्वास नहीं कर सकती. जब डा. आकांक्षा इस बात से सहमत नहीं हुई तो सचिन ने फोन कर के पुलिस को बुला लिया.





मुरादनगर स्थित यूआईएमटी (ऊपर) की चेयरपरसन के साथ धोखाधड़ी करने वाला सचिन (बाएं)

सचिन के बुलाने पर पुलिस आ भी गई, लेकिन पुलिस इस मामले में कुछ नहीं कर पाई तो वह भी वहां से चली गई. उस के बाद सचिन भी उसी घर में उन के साथ रहने लगा. सचिन ने डा. आकांक्षा से साफ शब्दों मे कहा कि अब इस संपत्ति की मालिक प्रीति है. वह ही शिवम की पत्नी है. वह इस घर से कहीं नहीं जाएगी.

उन सभी के घर में रहते डा. आकांक्षा की समझ में कुछ नहीं आ रहा था कि वह क्या करे. डा. आकांक्षा समझ चुकी थी कि यह सब उस की भाई की संपत्ति हड़पने का मायाजाल है. उस के बाद डा. आकांक्षा गाजियाबाद के वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों से मिलीं और अपने साथ हुई धोखाधड़ी की कहानी सुनाई.

पुलिस ने खोल दी फरजी शादी की पोल

22 सितंबर, 2023 को इस मामले को ले कर डा. आकांक्षा की ओर से सचिन, प्रीति और उस की सहयोगी महिलाओं के खिलाफ धोखाधड़ी कर के संपत्ति हड़पने का मुरादनगर



पुलिस हिरासत में संपत्ति हड़पने का षडयंत्र रचने वाला सचिन

थाने में मुकदमा दर्ज कराया गया. थाने में मुकदमा दर्ज होते ही पुलिस ने इस मामले में जांचपड़ताल शुरू कर दी.

जांच के दौरान पता चला कि सचिन पर पहले ही मुरादनगर, मसूरी और सिहानी गेट थाने में धोखाधड़ी के कई मामले दर्ज हैं. सचिन गाजियाबाद में नूरपुर गांव का रहने वाला था.

उसी जांचपड़ताल के दौरान इस शादी की हकीकत सामने आई कि करोड़ों की प्रौपर्टी को हड़पने के लिए इस गैंग ने यह षडयंत्र रचा था. उसी दौरान पुलिस जांच में पता चला कि प्रीति की भी इस मामले में पूरी भागीदारी थी. प्रीति इस से पहले इसी तरह से धोखाधड़ी कर कई लोगों को चूना लगा चुकी थी. इस से पहले वह 10 शादियां कर चुकी थी. पुलिस ने अपनी काररवाई करते हुए उस की 4 शादियों के दस्तावेज भी हासिल कर लिए थे.

यह सब जानकारी जुटाते ही पुलिस डा. सुधा के घर पर पहुंची तो पुलिस के पहुंचने से पहले ही सभी फरार हो चुके थे. उस के बाद पुलिस ने सचिन के गांव में उस के घर पर छापा मारा तो वह पुलिस क हत्थे चढ़ गया. पुलिस ने सचिन को गिरफ्तार किया और मुरादनगर थाने ले आई.

थाने लाते ही पुलिस ने उस से कड़ी पूछताछ की तो उस ने सारा राज आसानी से खोल दिया. सचिन ने स्वीकार किया कि सीधेसादे लोगों को अपने विश्वास में ले कर उन की शादी के बहाने उस का गैंग मोटी रकम ऐंठता था, जिस में प्रीति का अहम रोल था. सचिन ने पुलिस को बताया कि अब तक गैंग के लोग प्रीति की 10 शादियां करा कर करोड़ों रुपए कमा चुके हैं.

इस पूरे गैंग का संचालक सचिन ही था. वही प्रीति के साथ प्रवेश और नीलम के सहारे ही करोड़पति घरानों में पहले मेड की नौकरी दिलाता था और फिर उन की प्रौपर्टी हथियाने के लिए मंदबुद्धि, दिव्यांग या फिर अधिक उम्रदराज व्यक्तियों के साथ शादी कर उन को अपने जाल में फंसा कर करोड़ों कमाता था.

यह गैंग के सदस्य किस तरह से लोगों को अपने जाल में फंसाता था और किस तरह लोगों को लूट कर फरार हो जाते, यह सभी को सचेत करने वाली नसीहत भरी कहानी है.

सचिन फरजी शादी कर ब्लैकमेलिंग का चलाता था गैंग

सचिन गाजियाबाद जिले के गांव नूरपुर का रहने वाला था. उस ने मात्र हाईस्कूल ही पास किया था. वह शुरू से ही शातिर दिमाग था. प्रीति उस के रिश्ते की भांजी थी. वह पहले से ही घरों में मेड का काम किया करती थी.

प्रीति जब पहली बार किसी के घर में मेड के काम पर गई तो उस का लड़का विकलांग था, जिस की शादी नहीं हो पा रही थी. उस के पास करोड़ों रुपए की जमीनजायदाद थी. प्रीति ने उस की जमीनजायदाद को देख कर पहली बार गेम खेला और उस के लड़के के साथ शादी कर के उस घर से लाखों रुपए के जेवर और नकदी ले कर फरार हो गई थी.

इस के बाद सचिन उस से मिला. प्रीति का यह काम उसे अच्छा लगा. फिर वह उसी के साथ उस की सहायता कर के ऐसे ही घरों को तलाश करने लगा था, जिस घर में विकलांग या फिर मंदबुद्धि अनमैरिड युवा होते थे.

उस के बाद वह किसी भी तरह से उस परिवार से संपर्क कर के जानपहचान बढ़ा लेता था. उस के बाद मेड दिलाने के नाम पर प्रीति को वहां पर लगा देता था. फिर प्रीति उस घर में घुसते ही वहां पर अपना विश्वास जमा लेती और शादी कर के कुछ दिन वहीं पर रहती.

योजना के अनुसार वह उस परिवार पर तरहतरह के आरोप लगा कर मुकदमा दर्ज करा देती, जिस के बाद अधिकांश परिवार अपनी इज्जत के डर से उसे मोटी रकम दे कर समझौता कर लेते थे. यही काम करतेकरते उस ने दिल्ली एनसीआर में 3 शादियां की थीं. उस से पहले उस ने 3 शादियां हरियाणा में की थीं. जिस के बाद वह सभी को चूना लगा कर फरार हो जाती थी.

डा. सुधा के घर भी प्रीति को सचिन ने ही बतौर मेड के रूप में रखवाया था. सचिन का डा. सुधा के घर पहले से ही आनाजाना था. उन्हीं संबंधों के कारण एक दिन डा. सुधा ने

सचिन शुरू से ही शातिर दिमाग था. प्रीति उस के रिश्ते की भांजी थी. वह पहले से ही घरों में मेड का काम किया करती थी. प्रीति जब पहली बार किसी के घर में मेड के काम पर गई तो उस का लड़का विकलांग था. उस के पास करोड़ों रुपए की जमीनजायदाद थी. प्रीति ने उस की जमीनजायदाद को देख कर पहली बार गेम खेला और उस के लड़के के साथ शादी कर के उस घर से लाखों रुपए के जेवर और नकदी ले कर फरार हो गई थी.


कब्ज़, गैस, एसिडिटी
पेट सफा, तो हर रोग दफा
कब्ज़
एसिडिटी
गैस
सीने में जलन
पेट फूलना
अम्लीय स्वाद
भूख न लगना
20% EXTRA
Divisa
Dr. Juneja's
पेट सफा
Natural Laxative GRANULES
EFFECTIVE RELIEF FROM CONSTIPATION
Ayurvedic Proprietary Medicine
Safe for daily use
Net Wt.: 100g + 20g Extra = 120g
Clinically Tested*
*For efficacy and safety.
NO. 1 BRAND
INDIA 2016
Dr. Juneja's ®
पेट सफा
Natural Laxative Granules & Tablets
यदि आप कब्ज़, गैस और एसिडिटी से परेशान हैं तो आज ही लीजिए 'पेट सफा' आयुर्वेदिक ग्रेन्यूल्स/टेबलेट्स। पेट सफा स्वाद में अच्छा है, मुंह में चिपकता नहीं और इसकी आदत भी नहीं पड़ती, पहली रात से असर दिखाता है।
24x7 Helpline: 91197 88888 | www.petsaffa.com | Available at all medical & general stores

सचिन से किसी मेड को दिलाने की बात कही थी. सचिन का मकसद भी यही था. डा. सुधा के कहते ही उस ने प्रीति को उन के घर भेज दिया था.

डा. सुधा के घर जाते ही प्रीति ने मीठीमीठी बातें बनाते हुए उन पर पूरा विश्वास जमा लिया था. डा. सुधा का बेटा शिवम पहले से ही मंदबुद्धि था. उस में सोचनेसमझने की ज्यादा क्षमता नहीं थी. सचिन को यह भी पता था कि डा. सुधा की बीमारी आखिरी स्टेज पर पहुंच चुकी है, जिस के कुछ दिन बाद उन की मौत निश्चित है.

यही सोच कर उस ने प्रीति को समझा दिया कि वह किसी भी तरह से शिवम और डा. सुधा से प्यार जताते हुए उस के साथ उस के गले में माला डाल कर शादी की नौटंकी करे. फिर उस के बाद बाकी वह देख लेगा.

उस वक्त डा. सुधा की हालत ज्यादा ही खराब थी. न तो वह अधिक बोल सकती थीं और न ही ज्यादा चलफिर सकती थीं. उन की हालत का नाजायज फायदा उठाते हुए प्रीति ने एक दिन उन से बात करते हुए कहा, ''मैडम, हर रोज आप की हालत खराब होती जा रही है. अगर आप को कुछ हो गया तो आप के पीछे शिवम बाबू की देखरेख कौन करेगा. इसीलिए मैं चाहती हूं कि इस से पहले आप को कुछ हो जाए, आप शिवम बाबू की शादी मुझ से कर दो. ताकि आप के बाद मैं उन की पूरी देखरेख कर सकूं.''

हालांकि डा. सुधा की हालत दिनबदिन बिगड़ती ही जा रही थी. फिर भी वह प्रीति के कहने पर उस की शादी करने को तैयार न थीं.

सचिन और प्रीति का प्लान हुआ फेल

उसी दौरान डा. सुधा की तबीयत ज्यादा ही खराब हो गई, जिस के कारण उन्हें अस्पताल में भरती कराना पड़ा. उसी वक्त प्रीति ने फिर से डा. सुधा के सामने वही शादी की बात दोहराई.

डा. सुधा उस वक्त ऐसी हालत में थीं कि


डीसीपी विवेक यादव

वह कुछ कहनेसुनने में पूरी तरह से असमर्थ थीं. उन की हालत को देखते हुए प्रीति अपने साथ लाई माला ले कर शिवम के गले में डालते हुए फिर उसी तरह से उस से भी अपने गले में डलवा ली.

शिवम कुछ भी नहीं समझ पाया था. उस के साथ ही उस ने दोनों के माला डालते हुए कई फोटो भी खींच लिए थे. उस के साथ ही प्रीति ने डा. सुधा के साथ खड़े हो कर भी फोटो खिंचवाए थे. यह नौटंकी खत्म करने के बाद सभी डा. सुधा की मौत का इंतजार करने लगे.

जैसे ही 7 अगस्त, 2023 को डा. सुधा की मौत हुई, उस के बाद ही सचिन की पूर्व योजनानुसार प्रीति ने खुद को शिवम की पत्नी मान लिया और अपनी सहेली प्रवेश और नीलम को भी बुला लिया था. लेकिन डा. आकांक्षा के आगे उन का सारी योजना धरी की धरी रह गई. हालांकि सचिन ने शिवम की सारी संपत्ति हड़पने के लिए यह साजिश रची थी, लेकिन अपने इस मंसूबे में यह गैंग कामयाब नहीं हो पाया था.

इस केस का खुलासा करते हुए डीसीपी (रूरल) विवेकचंद्र यादव ने बताया कि अगर किसी तरह से यह केस पुलिस तक नहीं पहुंच पाता तो ये लोग अपनी योजना में हरगिज कामयाब नहीं हो पाते.

क्योंकि डा. सुधा ने पहले ही अपनी सारी प्रौपर्टी की वसीयत अपने बेटे के नाम करा दी थी. लेकिन बाद में अपने बेटे की हालत देखते हुए उन्होंने अपनी प्रौपर्टी अपनी बेटी डा. आकांक्षा के नाम कर दी थी. ताकि उन के खत्म होने के बाद उन की प्रौपर्टी सहीसलामत रहे. इस मामले में पुलिस ने इस गैंग के संचालक हिस्ट्रीशीटर सचिन को 2 अक्तूबर को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया था. प्रीति की तलाश में गाजियाबाद पुलिस की एक टीम हरियाणा में डेरा डाले हुए थी.

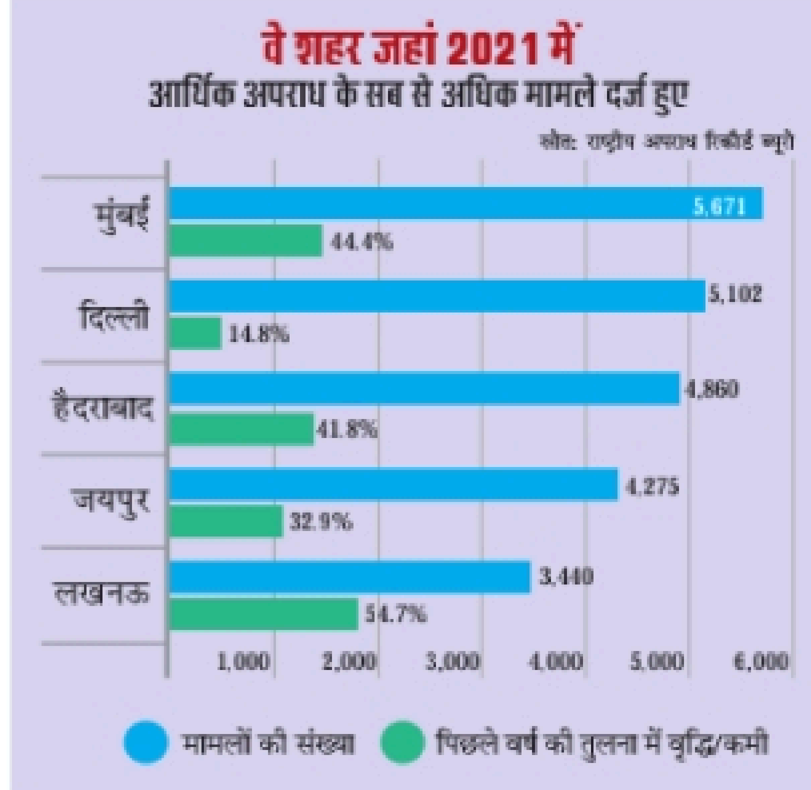
गाजियाबाद पुलिस की जांच में सामने आया कि प्रीति पर सोनीपत में भी कई मुकदमे दर्ज हैं. इसी वर्ष 2023 में भी सोनीपत सिटी कोतवाली में एक धमकी का और दूसरा आईटी ऐक्ट का मुकदमा दर्ज हुआ था.

इस के अलावा प्रीति ने वर्ष 2022 में भी एक लेखपाल के खिलाफ सोनीपत सदर कोतवाली में रेप का मुकदमा दर्ज कराया था, जिस में प्रीति कोर्ट में दिए बयान से पलट गई थी.

उस में प्रीति ने अपना केस वापस लेने के लिए उस लेखपाल से लाखों रुपए लिए थे. जिस की गिरफ्तारी के बाद ही इस पूरे गेम की फाइल खुल सकेगी. इस मामले में पुलिस ने उस के पूर्व में रहे पतियों से भी बातचीत की थी.

पुलिस पूछताछ के दौरान जानकारी मिली कि प्रीति पहले शादी करती और फिर अपने पतियों पर तरहतरह के आरोप लगा कर केस दर्ज करा देती थी. फिर उन से केस वापस लेने की एवज में अच्छीखासी मोटी रकम की मांग करती थी. उस के साथ ही वह दूसरे शिकार की तलाश में लग जाती थी.

कथा लिखने तक पुलिस यह भी जांच कर रही थी कि इस गैंग में और कितने लोग शामिल हैं. ●





डा. प्रियरंजन आशू दिवाकर जिस ने बाबू सिंह यादव की करोड़ों की जमीन धोखे से हड़प ली

भाजपा नेता डा. प्रियरंजन आशू दिवाकर और उस के साथियों ने बाबू सिंह यादव के साथ धोखाधड़ी कर उस की 6 करोड़ की 10 बीघा जमीन पर कब्जा कर लिया. इस सदमे में बाबू सिंह ने आत्महत्या कर ली. पति की मौत पर दरदर की ठोकरें खाने वाली विधवा बिटान देवी का कहना है कि योगी सरकार अपने नेता और अन्य को गिरफ्तार क्यों नहीं कर रही? आरोपियों की संपत्ति पर उन का बुलडोजर क्यों नहीं चला? आप भी जानिए कि बाबू सिंह किस तरह इस नेता के जाल में फंसा?

भाजपा नेता ने हड़पी करोड़ों की जमीन

❑ सुरेशचंद्र मिश्र



"दुआ में याद रखना"

नानी के निधन के बाद बाबू सिंह अपनी पत्नी बिटान देवी व दोनों बेटियों रूबी व काजल के साथ अहिरवां गांव में रहने लगा और नानी की वसीयत में मिली 10 बीघा जमीन पर खेती कर अपने परिवार का भरणपोषण करने लगा. समय बीतता रहा और समय के साथ उस की बेटियों की उम्र भी बढ़ती गई.

अहिरवां गांव पहले शहर की चकाचौंध से दूर था. लेकिन जैसेजैसे कानपुर शहर का विकास होता गया, वैसेवैसे गांव की अहमियत बढ़ती गई. अहिरवां गांव की जमीन भी अब कीमती हो गई. जो जमीन लाखों की थी, वह करोड़ों में तब्दील हो चुकी थी.

बाबू सिंह का एक रिश्तेदार था नरेंद्र सिंह यादव. वह अहिरवां गांव में ही रहता था. वह दिखावे के तौर पर तो बाबू सिंह का सगा था, लेकिन पीठ पीछे उस से जलता था. यह जलन उसे बाबू सिंह को नानी से वसीयत में मिली जमीन को ले कर थी. धीरेधीरे उस ने वसीयत वाली जमीन पर आंखें जमानी शुरू कर दीं. उस ने बाबू सिंह को शराब पीने का भी आदी बना दिया. वर्ष 2018 में नरेंद्र ने फरजी वसीयत बनवा कर अपनी दबंगई के बल पर बाबू सिंह की जमीन पर कब्जा जमा लिया.

बाबू सिंह यादव शाम को घर वापस आया तो उस के माथे पर चिंता की लकीरें थीं. वह कमरे में पड़े तख्त पर जा कर बैठ गया और दोनों हाथ माथे पर रख कर कुछ सोचने लगा. उस वक्त उस की पत्नी बिटान देवी रसोई में खाना बना रही थी. जबकि दोनों बेटियां रूबी और काजल कमरे में पढ़ाई कर रही थीं. पति को आया देख कर बिटान ने चाय बनाई, फिर आवाज लगाई, ''बेटा काजल, पापा को चाय दे दो.''

काजल चाय ले कर कमरे में पहुंची तो बाबू सिंह चिंतित बैठा था. उस के आंसू भी टपक रहे थे. पिता को दुखी देख कर काजल ने पूछा, ''क्या बात है पापा, आप बहुत परेशान नजर आ रहे हैं?''

''हां छोटू (काजल) मैं बहुत दुखी हूं. समझ में नहीं आ रहा कि क्या करूं, कहां जाऊं?'' काजल को घर में सब प्यार से छोटू कहते थे.

''पर बात क्या है पापा?'' काजल ने पूछा.

''छोटू, आज मैं खेत पर गया था. वहां बिल्डर व उस के आदमी प्लाटिंग कर रहे थे. उन्होंने चारों तरफ बाउंड्री भी बना ली. जब मैं ने प्लाटिंग का विरोध किया तो उन लोगों ने मुझे बेइज्जत कर भगा दिया. उन शातिरों ने मेरी जमीन भी छीन ली और पैसा भी नहीं दिया. मैं अब न घर का रहा, न घाट का. बेटा, हम हार गए. अब मैं जिंदा नहीं रहूंगा.''

बापबेटी की बातें सुन कर बिटान देवी घबरा गई. वह रसोई से कमरे में आ गई और पति से बोली, ''छोटू के पापा, तुम परेशान मत होओ. हम नमक रोटी खा कर रह लेंगे. जमीन चली गई तो चली जाने दो.''

तब बाबू सिंह ने कहा, ''छोटू की मां, महंगी जमीन के मालिक के रूप में हम इलाके में जाने जाते हैं. अब हम गांव में सीना तान कर नहीं चल पाएंगे. किसी से नजर तक नहीं मिला पाएंगे. लोग ताने भी मारेंगे.

ऐसे जीने से तो मर जाना ही बेहतर होगा.''

पति द्वारा जान देने की बात सुन कर बिटान देवी व उस की बेटियां घबरा गईं. उन्होंने अपने पापा को समझाया कि वे सब मिल कर संघर्ष करेंगी और फाइनेंशियल धोखाधड़ी कर हड़पी गई करोड़ों की जमीन वापस लेंगी. उन्हें कानून पर पूरा भरोसा है.

पत्नी व बेटियों के समझाने के बाद बाबू सिंह ने आधाअधूरा खाना खाया, फिर बाहर वाले कमरे में जा कर चारपाई पर लेट गया. बिटान व उस की दोनों बेटियां घर के अंदर वाले कमरे में जा कर सो गईं.

9 सितंबर, 2023 की सुबह कानपुर जिले के अहिरवां गांव में होहल्ला मचा कि किसी आदमी ने रेल से कट कर जान दे दी है. यह खबर सुनते ही बिटान देवी का माथा ठनका. वह पति के कमरे में गई तो चारपाई खाली थी. अब उस का दिल तेजी से धड़कने लगा और मन में अच्छेबुरे विचार आने लगे.

मन में चल रही तमाम आशंकाओं के बीच बिटान देवी ने दोनों बेटियों को साथ लिया और रेलवे लाइन की तरफ तेजी से चल दी. गांव के बाहर से ही रेलवे ट्रैक गुजर रहा था. अतः वहां तक पहुंचने में मांबेटियों को चंद मिनट ही लगे.

रेलवे ट्रैक के बीच में एक आदमी का क्षतविक्षत शव पड़ा था. इस शव को बिटान देवी ने देखा तो वह चीख पड़ी. क्योंकि शव उस के पति बाबू सिंह यादव का था. पिता का शव देख कर रूबी व काजल भी बिलख पड़ीं. इस के बाद तो जंगल की आग की तरह यह खबर अहिरवां गांव में फैली और देखते ही देखते घटनास्थल पर भीड़ जुट गई.

बाबू सिंह ने सदमे में कर लिया सुसाइड

इसी बीच किसी ने हादसे की जानकारी थाना चकेरी (कानपुर) पुलिस को दे दी. खबर पाते ही चकेरी थाने के एसएचओ अशोक कुमार दुबे अपनी टीम के साथ आ गए. उन की सूचना पर जौइंट पुलिस कमिश्नर आनंद प्रकाश तिवारी तथा एसीपी अमरनाथ यादव भी आ गए.

पुलिस अधिकारियों ने घटनास्थल का बारीकी से निरीक्षण किया. मृतक बाबू सिंह यादव की उम्र 50 साल के आसपास थी. साक्ष्यों के आधार पर उस ने ट्रेन से कट कर आत्महत्या की थी. जामातलाशी में उस के पास से एक पत्र बरामद हुआ.

इस पत्र को पुलिस अधिकारियों ने गौर से पढ़ा. पत्र में लिखा था, 'केंद्रीय और योगी जी सरकार, आप से मेरी शिकायत है कि आप के राज्य में आप की ही पार्टी के सदस्य आप का ही कानून तोड़ रहे हैं. आप की केंद्र सरकार ने कानून लागू किया था कि कोई भी लेनदेन 20 हजार से ऊपर का रजिस्ट्री से होगा. मुझे 6 करोड़ 29 लाख का चैक दे कर मेरी 6 बीघा जमीन ले ली गई. चैक फरजी था. और क्या लिखूं, लिखने को तो बहुत कुछ है. जीने का कुछ मतलब नहीं बचा. सारे फोटो फोन में हैं. आत्महत्या के जिम्मेदार डा. प्रियरंजन आशू दिवाकर, बबलू यादव हैं. हो सके तो बच्चों को न्याय मिले. छोटू बाय. बाबू सिंह.'

इस पत्र से स्पष्ट था कि बाबू सिंह की 6 बीघा जमीन की प्रियरंजन दिवाकर, बबलू आदि ने रजिस्ट्री करा ली और फरजी चैक दे दिया. उस ने आत्महत्या के लिए प्रेरित करने का दोषी प्रियरंजन दिवाकर व बबलू आदि


ट्रेन से कट कर जान देने वाले बाबू सिंह यादव

को ठहराया. पत्र में उस ने केंद्र व योगी सरकार की कानून व्यवस्था पर भी सवाल खड़े किए तथा बच्चों को न्याय दिलाने की मांग की.

बिटान ने कहा कि यदि उसे न्याय नहीं मिला तो वह भी दोनों बेटियों के साथ जान दे देगी. इस पर पुलिस अधिकारियों ने भरोसा दिया कि उन्हें न्याय जरूर मिलेगा और दोषी जेल जाएंगे.

भाजपा नेता और अन्य के खिलाफ हुई रिपोर्ट दर्ज

पूछताछ के बाद पुलिस अधिकारियों ने जरूरी काररवाई पूरी कर बाबू सिंह यादव के शव को पोस्टमार्टम के लिए लाला लाजपत राय अस्पताल भिजवा दिया. 10 सितंबर, 2023 की शाम बिटान देवी थाना चकेरी पहुंची. उस ने एसएचओ अशोक कुमार दुबे को एक लिखित तहरीर दी. तहरीर के आधार पर पुलिस ने भादंवि की धारा 420/306/



बाबू सिंह की पत्नी बिटान देवी

34/504/506 के तहत भाजपा के रसूखदार नेता डा. प्रियरंजन आशू दिवाकर निवासी श्याम नगर, बबलू यादव निवासी टटियन झनाका, जितेंद्र सिंह यादव निवासी अहिरवां गांव, कानपुर नगर, मधुर पांडेय निवासी 102ए, 100 फुटा रोड, कानपुर नगर, राहुल जैन निवासी बी 92, सेक्टर 31, नोएडा, गौतमबुद्ध नगर तथा शिवम सिंह चौहान निवासी मकरनपुर (मैनपुरी) के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर ली.

फाइनेंशियल धोखाधड़ी कर जमीन हड़पने तथा आत्महत्या के लिए प्रेरित करने का मुकदमा दर्ज होते ही आरोपी राहुल जैन, मधुर पांडेय, बबलू यादव, जितेंद्र यादव व शिवम भूमिगत हो गए. उन्होंने अपने मोबाइल फोन भी बंद कर लिए. भूमिगत हो कर सभी अपनेअपने बचाव का रास्ता खोजने लगे.

इधर पुलिस कमिश्नर आर.के. स्वर्णकार तथा जौइंट पुलिस कमिश्नर आनंद प्रकाश तिवारी ने किसान बाबू सिंह यादव की आत्महत्या के मामले को बेहद गंभीरता से लेते हुए आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए कानपुर शहर के तेजतर्रार इंसपेक्टरों को चुन कर 5 टीमें बनाईं.

राहुल जैन की गिरफ्तारी के लिए एक टीम को नोएडा भेजा गया. दूसरी टीम शुभम चौहान की गिरफ्तारी के लिए मैनपुरी भेजी गई. तीसरी टीम को मधुर पांडेय, बबलू यादव व जितेंद्र यादव की गिरफ्तारी के लिए कानपुर तैनात किया गया.

चौथी टीम को रसूखदार नेता प्रियरंजन आशू दिवाकर की गिरफ्तारी के लिए लगाया गया. पांचवीं टीम को रिजर्व रखा गया, ताकि सूचना मिलने पर उसे कहीं भी भेजा जा सके.

इन टीमों ने आरोपियों के घरों तथा संभावित ठिकानों पर छापे मारे, लेकिन कोई भी आरोपी गिरफ्त में नहीं आया.

इन टीमों ने लखनऊ, कानपुर, मैनपुरी, प्रयागराज, फतेहपुर, उन्नाव व जबलपुर के विभिन्न होटलों, आरोपियों के रिश्तेदारों व यारदोस्तों के आवासों पर छापेमारी की, लेकिन एक भी आरोपी हाथ नहीं आया.

आरोपी रसूखदार नेता डा. प्रियरंजन आशू दिवाकर को पकड़ने के लिए पुलिस टीम ने उन के श्याम नगर स्थित घर पर छापा मारा, लेकिन वह घर से फरार था. पुलिस टीम ने उस की पत्नी अनामिका, मां उर्मिला, भाभी रेनू तथा बेटे से सख्ती से पूछताछ की, लेकिन वे आशू दिवाकर के बारे में कोई जानकारी नहीं दे सके. टीम उस की तलाश में जबलपुर तक गई, पर उस का पता न चला.

एक भी गिरफ्तारी न होने से नाराज बिटान देवी का गुस्सा योगी सरकार पर फूट पड़ा. वह बोली, ''मेरा सुहाग लुट गया... बेटियां अनाथ हो गईं... जमीन छिन गई... रुपया भी नहीं मिला. योगीजी, इन हत्यारों, लुटेरों पर आप का बुलडोजर कब चलेगा? इतना बड़ा अपराध करने वाले आराम से कहीं छिपे बैठे है. योगीजी, आप की पुलिस जांच कर रही है कि लीपापोती के खिलवाड़ में लगी है. अपराधी गिरफ्तार न हुए और हड़पी गई जमीन वापस न मिली तो बेटियों के साथ मैं भी ट्रेन से कट कर जान दे दूंगी.''

जांच के नाम पर होती रही खानापूर्ति

गिरफ्तारी न होने से बिटान देवी व उस की बेटियों ने आरोपियों की फोटो जला कर आक्रोश जताया. पुलिस कमिश्नर आर.के. स्वर्णकार और जौइंट सीपी आनंद प्रकाश तिवारी से मुलाकात कर आरोपियों की जल्द से जल्द गिरफ्तारी की मांग की.

इस के बाद उन्होंने जा कर डीएम विशाखजी को ज्ञापन सौंपा और मांग की कि उन की जमीन का दाखिल खारिज रद्द कर के जमीन उन्हें वापस कराई जाए और आरोपी भाजपा नेता के घर बुलडोजर चलाया जाए.

बेटियों ने मुख्यमंत्री को संबोधित एक ज्ञापन भी उन्हें सौंपा. डीएम विशाखजी ने जल्द ही उचित काररवाई का उन्हें आश्वासन दिया.

धोखाधड़ी और आत्महत्या मामले की जांच थाना चकेरी के एसएचओ अशोक कुमार दुबे को सौंपी थी. उन्होंने जब मृतक बाबू सिंह के बैंक खाते को चैक किया तो पता चला कि उस के बैंक खाते में 2 चैक 5 लाख तथा 1 लाख 85 हजार के जमा हुए थे. ये दोनों

चैक पास हुए और खाते में पैसा आया. ये दोनों चेक मधुर पांडेय ने दिए थे. इस के बाद उस के खाते में कोई पैसा नहीं आया.

स्पष्ट था कि उस के साथ 6 करोड़ 29 लाख की फाइनेंशियल धोखाधड़ी की गई और जमीन हड़प ली गई. शातिरों ने जो चैक दिए थे, वे रजिस्ट्री होने के बाद छीन लिए थे और फोटोकापी उसे थमा दी थी. इस के बाद जांच अधिकारी ने सभी आरोपियों के 13 बैंक खातों को सीज करा दिया ताकि लेनदेन की पूरी जानकारी मिल सके.



डीएम विशाख जी को ज्ञापन सौंपती मृतक बाबू सिंह यादव की पत्नी और बेटियां

ननिहाल से मिली थी 10 बीघा जमीन

बाबू सिंह यादव मूलरूप से नर्वल (कानपुर) का रहने वाला था. उस के 2 अन्य भाई रामसिंह व अमर सिंह थे. तीनों भाइयों के बीच 12 बीघा जमीन थी. सभी के हिस्से में 4-4 बीघा जमीन आई. राम सिंह के 2 बेटे मुन्ना सिंह व विनय सिंह थे जबकि अमर सिंह के भी 2 बेटे धर्मेंद्र सिंह व जितेंद्र थे. तीनों भाइयों के बीच कोई विवाद नहीं था.

तीनों भाइयों में सब से छोटा बाबू सिंह था. बाबू सिंह का ननिहाल कानपुर नगर के चकेरी थाने के अहिरवां गांव में था. इस गांव में बाबू सिंह के नाना सुखदेव यादव अपनी पत्नी पूसा देवी के साथ रहते थे. उन के पास 10 बीघा जमीन थी. खेतीकिसानी से उन का जीवनयापन होता था.

सुखदेव यादव संपन्न तो थे, लेकिन उन के कोई बेटा नहीं था. अत: अपने बुढ़ापे का सहारा बनाने के लिए उन्होंने किसी बच्चे को गोद लेने तथा उसे अपना घरजमीन वसीयत करने का निश्चय किया. उन्हीं दिनों पूसा देवी की निगाह अपने नाती बाबू सिंह पर पड़ी. उस समय बाबू सिंह की उम्र 5 साल थी. पूसा देवी ने बाबू सिंह को ही गोद लेने तथा अपनी वसीयत सौंपने का निश्चय किया. इस के लिए उन्होंने अपने पति सुखदेव को भी राजी कर लिया.

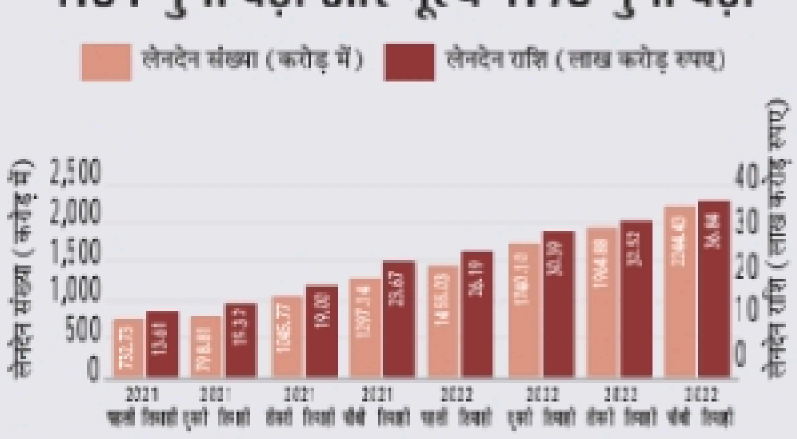
22 जुलाई, 1978 को पूसा देवी ने विधि सम्मत गोदनामा कर बाबू सिंह को गोद ले लिया. गोदनामा का पंजीकरण उप निबंधक कानपुर के कार्यालय में बही संख्या 4, जिल्द संख्या 782 के पेज संख्या 150-151 की क्रमांक संख्या 532 पर दर्ज किया गया. इस के बाद बाबू सिंह नानानानी के साथ अहिरवां गांव में रहने लगा. नानानानी ने घर और जमीन की वसीयत भी उसे कर दी.

कालांतर में पति सुखदेव की मौत के बाद पूसा देवी अपने मायके चली गईं. उन का मायका कानपुर की नर्वल तहसील के गांव घरूवा खेड़ा में था. बाबू सिंह भी उन के साथ चला गया. पूसा देवी ने बाकी का जीवन मायके में ही गुजारा. 14 नवंबर, 1997 को पूसा देवी का निधन हो गया.

नानी के निधन के बाद बाबू सिंह अपनी पत्नी बिटान देवी व दोनों बेटियों रूबी व काजल के साथ अहिरवां गांव में रहने लगा और वसीयत में मिली 10 बीघा जमीन पर खेती कर अपने परिवार का भरणपोषण करने लगा. समय बीतता रहा और समय के साथ उस की बेटियों की उम्र भी बढ़ती गई.

अहिरवां गांव पहले शहर की चकाचौंध से दूर था. लेकिन जैसेजैसे कानपुर शहर का विकास होता गया, वैसेवैसे गांव की अहमियत बढ़ती गई. अहिरवां गांव की जमीन भी अब कीमती हो गई. जो जमीन लाखों की थी, वह करोड़ों में तब्दील हो चुकी थी.

2022 में यूपीआई लेनदेन की संख्या 1.91 गुना बढ़ी और मूल्य 1.75 गुना बढ़ा



स्रोत: एनपीसीआई डाटा

बाबू सिंह का एक रिश्तेदार था नरेंद्र सिंह यादव. वह अहिरवां गांव में ही रहता था. वह दिखावे के तौर पर तो बाबू सिंह का सगा था, लेकिन पीठ पीछे उस से जलता था. यह जलन उसे बाबू सिंह को वसीयत में मिली जमीन को ले कर थी. धीरेधीरे उस ने वसीयत वाली जमीन पर आंखें जमानी शुरू कर दीं. उस ने बाबू सिंह को शराब पीने का भी आदी बना दिया. वर्ष 2018 में नरेंद्र ने फरजी वसीयत बनवा कर अपनी दबंगई के बल पर बाबू सिंह की जमीन पर कब्जा जमा लिया.

रिश्तेदार के घात से बाबू सिंह तिलमिला उठा. उसे जब कोई रास्ता नहीं सूझा तो जमीन वापसी के लिए उस ने कोर्ट में मुकदमा कर दिया. यही नहीं उस ने भतीजे जितेंद्र यादव से भी मदद मांगी. जितेंद्र भी अहिरवां में ही रहता था और प्रौपर्टी डीलिंग का काम करता था. उस ने चाचा को मदद का आश्वासन दिया.

जितेंद्र का साढ़ू था बबलू यादव. वह चकेरी थाने के टटियन झनाका में रहता था और भाजपा के रसूखदार नेता प्रियरंजन आशू दिवाकर की कार चलाता था. जितेंद्र ने बबलू को अपने चाचा बाबू सिंह की समस्या बताई और प्रियरंजन आशू दिवाकर के मार्फत चाचा

की मदद करने को कहा. बबलू ने तब बाबू सिंह की मुलाकात आशू दिवाकर से कराई. आशू दिवाकर ने उसे मदद करने का भरोसा दिया.

प्रियरंजन आशू दिवाकर मूलरूप से मैनपुरी का रहने वाला है. वहां उस का पुश्तैनी मकान है. उस के पिता रामप्रकाश दिवाकर शिक्षा विभाग में अधिकारी थे. 3 भाइयों में प्रियरंजन सब से छोटा है. कानपुर के श्याम नगर में भी उस का आलीशान मकान है.

वह स्वयं भी डाक्टर है और उस की पत्नी अनामिका भी डाक्टर है. आशू दिवाकर 1999 बैच का डाक्टर है. उस ने कानपुर मैडिकल कालेज से ही एमबीबीएस फिर एमएस की



पुलिस हिरासत में बाबू सिंह यादव की जमीन धोखे से हड़पने वाले मधुर पांडे और राहुल जैन

पढ़ाई की थी. उस की पत्नी डा. अनामिका यहीं पर फिजियोलौजी डिपार्टमेंट में कार्यरत है. उसे मैडिकल कालेज में आवास भी मिला हुआ है.

लेकिन डा. प्रियरंजन आशू दिवाकर ने डाक्टरी पेशा नहीं चुना. उसे तो राजनीतिक भूख थी, इसलिए उस ने भारतीय जनता पार्टी को अपने राजनीतिक करिअर के रूप में चुना.

भाजपा में उस ने अपनी मेहनत और लगन से कद बढ़ाया, जिस का परिणाम यह हुआ कि भाजपा ने 2007 में उसे मैनपुरी के किशनी विधानसभा क्षेत्र से टिकट दे दिया, लेकिन वह हार गया. इस के बाद वह सपा में चला गया. सपा ने उसे जिला पंचायत अध्यक्ष बना दिया. कुछ समय बाद वह फिर से पाला बदल कर भाजपा में आ गया.

2022 के विधानसभा चुनाव में भाजपा ने उसे पुन: किशनी से टिकट दिया, लेकिन वह फिर हार गया. इस के बाद भाजपा ने उसे बाल संरक्षण आयोग का सदस्य बना दिया. बाल आयोग में विभिन्न क्षेत्रों से सदस्यों को चुना जाता है. चूंकि प्रियरंजन आशू दिवाकर डाक्टर था, इसलिए उस का चयन मैडिकल क्षेत्र से किया गया था.

डा. प्रियरंजन आशू दिवाकर ने अपने ड्राइवर बबलू यादव की सिफारिश पर किसान बाबू सिंह की कोर्टकचहरी में जम कर पैरवी की और उस की जमीन नरेंद्र के चंगुल से मुक्त करा दी. लेकिन नरेंद्र व उस के बेटे फिर भी उसे परेशान करते रहे. इस गम में बाबू सिंह अधिक शराब पीने लगा. वह बीमार पड़ गया. आशू दिवाकर को जानकारी हुई तो उस ने बाबू सिंह को हैलट अस्पताल में भरती कराया और उस का इलाज कराया.

नरेंद्र से बाबू सिंह तो परेशान था ही, उस की बेटियां भी भयभीत रहती थीं. बेटियां जानती थीं कि इस समस्या से निजात रसूखदार नेता आशू दिवाकर ही दिला सकता है. अत: एक रोज बाबू सिंह की छोटी बेटी काजल ने एक भावुक पत्र लिख कर बबलू के मार्फत आशू दिवाकर को भिजवाया और मदद की गुहार लगाई. पत्र में काजल ने लिखा, 'नमस्ते आशू अंकल, मैं काजल यादव पुत्री बाबू यादव अहिरवां (चकेरी) में रहती हूं. आप के साथ जो बबलू यादव रहते हैं, उन के रिश्तेदार की बेटी हूं. एक बार मेरी आप से आप के श्याम नगर (कानपुर) वाले घर में मुलाकात हुई थी, जब पापा शराब पीने के कारण बहुत बीमार हो गए थे.

'आप ने हैलट में उन का इलाज कराया था. आप की पैरवी पर पापा मुकदमा तो जीत गए, लेकिन जमीन पापा को अभी भी नहीं मिल पाई. नरेंद्र यादव व उस के लड़के बहुत परेशान करते हैं. आप थोड़ी और मदद कर दीजिए, वरना पापा आत्महत्या कर लेंगे. अंकल, हमें पता है कि आप मंत्री बन गए हैं. प्लीज हेल्प मी अंकल.'

काजल के इस पत्र को पढ़ने के बाद डा. प्रियरंजन आशू दिवाकर भावुक हो गया. इस के बाद उस ने अपने रसूख के चलते नरेंद्र यादव व उस के बेटों पर शिकंजा कसा. उस की थाने में ही नहीं, कोर्टकचहरी तक हनक थी. अत: नरेंद्र यादव डर गया और उस ने बाबू सिंह की जमीन छोड़ दी. जमीन का कब्जा पा कर बाबू सिंह व उस का परिवार खुशी से झूम उठा. पूरा परिवार नेता का अहसानमंद हो गया.

धोखा कर कब्जाई 6 करोड़ की जमीन

डा. प्रियरंजन आशू दिवाकर ने बाबू सिंह को जमीन तो दिलवा दी लेकिन अब उस की निगाह बाबू सिंह की बेशकीमती जमीन पर जम गई. उस ने अपने ड्राइवर बबलू व उस के रिश्तेदार जितेंद्र यादव के मार्फत बाबू सिंह पर जमीन बेचने का दबाव बनाया.

जितेंद्र ने चाचा बाबू सिंह को समझाया कि वह झगड़ालू जमीन को बेच कर कानपुर देहात में ठिकाना बना लें. इस जमीन से उन्हें करोड़ों रुपए मिलेंगे. इस से वह बेटियों को पढ़ालिखा कर उन की शादी भी कर लेंगे और मकान भी बना लेंगे. फिर भी इतना पैसा बच जाएगा कि उन का जीवन आराम से गुजरेगा. हर तरह के झंझट और टेंशन से भी निजात मिल जाएगी.

बाबू सिंह पहले तो राजी नहीं हुआ, लेकिन

जब डा. प्रियरंजन आशू दिवाकर ने भी दबाव डाला तो बाबू सिंह राजी हो गया. उस ने पत्नी व बेटियों को भी राजी कर लिया. बाबू सिंह जब जमीन का सौदा करने को राजी हो गया तो शातिर दिमाग आशू दिवाकर ने उस की जमीन हड़पने का षडयंत्र रचा. इस षडयंत्र में उस ने अपने खास गुर्गे राहुल जैन, शिवम चौहान, मधुर पांडेय, बबलू व जितेंद्र यादव को भी शामिल कर लिया.

राहुल जैन डा. प्रियरंजन दिवाकर का बेहद करीबी था. वह बी 92, सेक्टर 31, नोएडा में रहता था. वह खुद को आशू का प्रतिनिधि बता कर रौब गांठता था. उस ने सी 15 सेक्टर 4 नोएडा में प्रतिनिधि कार्यालय खोल रखा था.



फरार अभियुक्त शिवम सिंह चौहान

इसी तरह शिवम चौहान मैनपुरी का था. आशू दिवाकर के हर कार्यक्रम में बढ़चढ़ कर हिस्सा लेता था, इसलिए वह आशू का खास था.

मधुर पांडेय भाजपा का युवा कार्यकर्ता था. वह यशोदा नगर कानपुर का रहने वाला था. वह अकसर श्याम नगर वाले घर में आशू से मिलने जाता था, इसलिए अच्छी जानपहचान थी. आशू दिवाकर ने इन सब को सस्ती जमीन दिलाने का लालच दिया था. बबलू ड्राइवर था और आशू के हर राज का जानकार था.

बाबू सिंह को जो 10 बीघा जमीन वसीयत में मिली थी, वह 7 रकबों में बंटी थी, जिस में आराजी संख्या 1609 में 0.287 हेक्टेयर, आराजी संख्या 1479 में 0.143 हेक्टेयर, आराजी संख्या 1480 में 0.287 हेक्टेयर, आराजी संख्या 1735 में 0.082 हेक्टेयर, आराजी संख्या 1742 में 0.210 हेक्टेयर, आराजी संख्या 1749 में 0.164 हेक्टेयर और आराजी संख्या 1747 में 0.051 हेक्टेयर जमीन दर्ज थी.



आरोपी बबलू यादव के घर पर नोटिस चस्पा करते पुलिसकर्मी

योजना के तहत 18 मार्च, 2023 को बाबू सिंह को कानपुर रजिस्ट्री कार्यालय लाया गया. पहली रजिस्ट्री मधुर पांडेय ने कराई, जिस में 0.103 हेक्टेयर जमीन के 6 लाख 85 हजार रुपए उस ने बाबू सिंह को 2 बैंक चैकों के जरिए दिए. जिस में एक चैक 5 लाख और दूसरा 1.85 लाख का था. दोनों चैक एक्सिस बैंक यशोदा नगर के थे. 15 हजार रुपया नगद भी दिया गया.

इस के बाद राहुल जैन ने 1.121 हेक्टेयर की एक के बाद एक 4 रजिस्ट्री कराईं, जिस का सौदा 6.29 करोड़ में हुआ. इस में राहुल जैन ने एक चैक 20 लाख और दूसरा 5 लाख का अपने हस्ताक्षर का बाबू सिंह को दिया.

ये दोनों चैक एक्सिस बैंक नोएडा ब्रांच के थे. इस के बाद शिवम सिंह चौहान ने 3 चैक एक 3.15 करोड़ का तथा 2 चैक 1.57 करोड़ के अपने हस्ताक्षर कर बाबू सिंह को दिए. ये तीनों चैक भारतीय स्टेट बैंक, मैनपुरी शाखा के थे.

बाबू सिंह इन चैकों को अपने खाते में जमा करता, उस के पहले ही डा. प्रियरंजन आशू दिवाकर ने बाबू सिंह को अपने श्याम नगर (कानपुर) वाले मकान पर बुलवा लिया और कहा कि चैक गलत बैंक के हैं, कैश नहीं होंगे. फिर देखने के बहाने पांचों चैक बाबू सिंह से छीन लिए. बाबू ने दोबारा चैक मांगे तो फोटो कापी थमा दी.

इस के बाद बाबू सिंह दोबारा असली चैक प्राप्त करने के लिए बबलू, आशू दिवाकर व राहुल जैन से गिड़गिड़ाता रहा, लेकिन उन्होंने चैक नहीं दिए. थकहार कर बाबू सिंह ने 30 मार्च, 2023 को शातिरों के खिलाफ सिविल जज (अपर वर्ग) कानपुर कोर्ट में मुकदमा दाखिल कर दिया और पैरवी करने लगा.

नेता के रसूख के आगे कुछ न कर सका बाबू सिंह

इधर राहुल जैन ने डा. प्रियरंजन आशू दिवाकर के रसूख के चलते रजिस्ट्री कराई गई, जमीन का दाखिल खारिज करा लिया. बाबू सिंह की आपत्ति के बावजूद दाखिल खारिज कर दिया गया. इतना ही नहीं, राहुल जैन ने जमीन के 2 मामूली टुकड़े 70-70 लाख में बेच भी दिए. एक टुकड़ा उस ने नई सब्जीमंडी निवासी राजेंद्र पांडेय को तथा दूसरा टुकड़ा आजाद नगर, रसूलाबाद (कानपुर देहात) निवासी नैंसी चंदेल व विजय लक्ष्मी को बेच दिया.

8 सितंबर, 2023 को बाबू सिंह जब खेत पर पहुंचा तो इसी जमीन पर बिल्डर चारदीवारी खींच कर प्लाटिंग कर रहे थे. बाबू सिंह ने

प्लाटिंग का विरोध जताया तो उसे बेइज्जत कर वहां से भगा दिया गया. इस सदमे को वह बरदाश्त नहीं कर पाया और उस ने 9 सितंबर की सुबह 4 बजे ट्रेन से कट कर आत्महत्या कर ली.

इधर राहुल जैन को गिरफ्तार करने गई पुलिस टीम एक सप्ताह से नोएडा व दिल्ली में डेरा डाले थी. उस ने नोएडा स्थित फ्लैट छोड़ दिया था और होटलों में फरारी काट रहा था. 16 सितंबर, 23 को पुलिस टीम को मोबाइल सर्विलांस के जरिए एक रिश्तेदार का नंबर मिला, जिस के जरिए पुलिस टीम मयूर विहार स्थित होटल आईएलडी पहुंची और सुबह 4 बजे राहुल जैन को गिरफ्तार कर थाना चकेरी लाया गया.



जौइंट पुलिस कमिश्नर आनंद प्रकाश तिवारी

पूछताछ में राहुल जैन पहले तो चुप्पी साधे रहा, फिर बोला कि आशू ने उसे कौड़ियों के भाव बेशकीमती जमीन दिलाने का लालच दे कर फंसा दिया. वह चैक देने व छीनने का जवाब नहीं दे सका, न ही शिवम द्वारा चैक देने का जवाब दे सका. पूछताछ के बाद उसे कानपुर कोर्ट में पेश किया गया, जहां से उसे जेल भेज दिया गया.

26 सितंबर, 2023 को पुलिस की कानपुर टीम ने मधुर पांडेय को अलीगढ़ से गिरफ्तार कर लिया. उसे चकेरी थाने लाया गया. पूछताछ में उस ने बताया कि उसे बबलू यादव व आशू दिवाकर ने सस्ती जमीन दिलाने के नाम पर फंसा दिया. बबलू ने उस से कहा था कि करोड़ों की जमीन लाखों में मिल जाएगी. पूछताछ के बाद मधुर को भी जेल भेज दिया गया.

पुलिस ने सक्रियता दिखाते हुए डा. प्रियरंजन आशू दिवाकर, शिवम सिंह, बबलू व जितेंद्र के खिलाफ कोर्ट से गैरजमानती वारंट प्राप्त कर उन पर 50 हजार का इनाम घोषित कर दिया. अर्थात जो भी उन्हें पकड़वाएगा, उसे यह इनाम दिया जाएगा.

इसी बीच पुलिस ने सीआरपीसी की धारा 82 के तहत काररवाई भी शुरू कर दी, लेकिन इसी दरम्यान आशू दिवाकर ने बिटान देवी द्वारा दायर एफआईआर को निरस्त करने की अरजी हाईकोर्ट में डाल दी, लेकिन हाईकोर्ट ने उस की अरजी खारिज कर दी.

पुलिस की ताबड़तोड़ दबिशों के बावजूद जब आशू दिवाकर, बबलू, जितेंद्र व शिवम सिंह चौहान गिरफ्त में नहीं आए तो पुलिस कमिश्नर आर.के. स्वर्णकार के आदेश पर चारों आरोपियों की इनाम राशि 50 हजार से बढ़ा



डीसीपी अमरनाथ यादव

कर एक लाख कर दी. यही नहीं, कोर्ट के आदेश से चारों को भगोड़ा भी घोषित कर दिया गया. पुलिस ने बबलू, जितेंद्र व शिवम के घर पहुंच कर डुग्गी पिटवा कर मुनादी कराई और नोटिस चस्पा किया.

अब कहां गया योगी का बुलडोजर

18 अक्तूबर, 2023 को सपा अध्यक्ष व पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव किसान बाबू सिंह के अहिरवां स्थित घर पहुंचे. उन्हें देखते ही दोनों बेटियां रूबी व काजल रो पड़ीं.

बाबू सिंह की पत्नी बिटान देवी हाथ जोड़ कर बोली कि हमें उम्मीद नहीं थी कि आप आएंगे. अखिलेश ने बाबू सिंह की तसवीर पर फूल चढ़ा कर उन्हें श्रद्धांजलि दी और परिवार के साथ आधा घंटे का समय बिताया.

अखिलेश यादव ने कहा कि आशू दिवाकर प्रदेश के डिप्टी सीएम का खास है. भाजपा उसे बचा रही है. वह उन के संपर्क में है. वह बोले, ''अब बुलडोजर क्यों नहीं चल रहा है? उस की चाबी खो गई या पेट्रोल डीजल नहीं है. बुलडोजर का ड्राइवर भाग गया है या फिर लखनऊ से अनुमति नहीं मिल रही है. जानबूझ कर ऐसे लोगों पर बुलडोजर नहीं चलाना चाहते हैं.''

उन्होंने बेटियों को आश्वासन दिया कि उन की पढ़ाईलिखाई और शादी के खर्च को ले कर कोई समस्या नहीं आएगी. रूबी बीएससी (फाइनल) की छात्रा है जबकि काजल इंटरमीडिएट की.

22 अक्तूबर, 2023 को जब पुलिस टीम भगोड़ा घोषित एक लाख के इनामी आरोपी डा. प्रियरंजन आशू दिवाकर के घर मुनादी कराने व नोटिस चस्पा करने पहुंची तो पता चला कि उस की मां उर्मिला देवी की मौत हो गई है. अतः पुलिस बिना मुनादी के ही वापस आ गई. लेकिन 2 दिन बाद मुनादी करा कर नोटिस चस्पा कर दिया.

पुलिस को अनुमान था कि आशू दिवाकर अपनी मां उर्मिला को कंधा देने अवश्य आएगा, अतः पुलिस अधिकारियों ने उसे गिरफ्तार करने के लिए सादे कपड़ों में पुलिस का जाल बिछाया. लेकिन गिरफ्तारी के डर से आशू मां को कंधा देने भी नहीं आया.

बहरहाल, कथा संकलन तक 2 आरोपी राहुल जैन व मधुर पांडेय कानपुर जेल में बंद थे. उन की जमानत नहीं हुई थी. 4 आरोपी शिवम चौहान, बबलू यादव, जितेंद्र यादव तथा प्रियरंजन आशू दिवाकर भगोड़ा घोषित हैं. उन पर एकएक लाख रुपए का इनाम घोषित है. पुलिस उन की सरगरमी से तलाश कर रही थी.

आरोप लगने पर भाजपा ने डा. प्रियरंजन आशू को पार्टी से निकाल दिया था. लेकिन वह बाल आयोग का सदस्य अभी भी है. पीड़िता बिटान देवी न्याय की तलाश में दरदर भटक रही थी. अभी तक उन्हें जमीन वापस नहीं मिली थी. पुलिस व प्रशासनिक अधिकारी रजिस्ट्री कैंसिल कराने तथा दाखिल खारिज निरस्त कराने का प्रयास कर रहे थे. ●

—कथा पुलिस सूत्रों पर आधारित

32 वर्षीय लोकेश श्रीवास ऐसा शातिर चोर है, जो बड़ी से बड़ी चोरियों को अकेले ही अंजाम देता है. छत्तीसगढ़ के इस सुपर चोर ने अगला निशाना दिल्ली को बना कर यहां के एक ज्वेलर के शोरूम में अकेले ही लौकर काट कर 25 करोड़ की सोने और डायमंड की ज्वेलरी साफ कर दी. अकेले ही उस ने इतनी बड़ी घटना को कैसे अंजाम दिया? पढ़िए, इस सुपर चोर की कहानी उसी की जुबानी.

पत्नी रमा को शादी के बहुत दिनों बाद ही यह बात पता चली कि उस का पति लोकेश श्रीवास एक शातिर चोर है. लोकेश ने उसे कभी नहीं बताया कि वह क्या करता है. जब घर के दरवाजे पर आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, तेलंगाना, ओडिशा, छत्तीसगढ़ के दुर्ग, भिलाई की पुलिस उस के पति को दबोचने के लिए आने लगी और घर में पति द्वारा छिपा कर रखा गया चोरी का माल बरामद होने लगा तो रमा को पता चला कि उस का पति शातिर चोर है.

लोकेश श्रीवास पहले एक सैलून में बाल काटने का काम किया करता था. उस के ख्वाब ऊंचे थे. बाल काटते वक्त उस का ख्वाब होता था कि उस के हाथ में सोने का कंघा, सोने की कैंची और सोने का उस्तरा हो, जिस से वह देश के प्रधानमंत्री के बाल काटे. प्रधानमंत्री तक तो उस की पहुंच संभव नहीं थी, लेकिन अपने सुनहरे ख्वाब पूरे करने के लिए उस ने 20 मई, 2006 को एक ज्वेलरी शोरूम में चोरी की. लाखों के गहने हाथ लगे तो लोकेश श्रीवास ने चोरी को ही अपना धंधा बना लिया.

लोकेश श्रीवास ने आंध्र प्रदेश के विजय नगर शहर में एक ज्वेलरी शोरूम में 6 किलोग्राम सोने के आभूषणों की चोरी की. तेलंगाना स्टेट में एक ज्वेलर के यहां 4 किलोग्राम, ओडिशा में 500 ग्राम, भिलाई के बजाज ज्वेलर के यहां से 17 लाख के आभूषणों पर हाथ साफ किया. सन 2019 में लोकेश श्रीवास ने भिलाई के आनंद नगर में पारख ज्वेलर के यहां से 15 करोड़ के आभूषण चोरी किए.

19 और 25 अगस्त, 2023 को बिलासपुर में मास्टरमाइंड लोकेश श्रीवास ने एक ही रात में 10 ज्वेलरी शोरूम को अपना निशाना बनाया था.

लोकेश श्रीवास को विभिन्न राज्यों की पुलिस ने कितनी ही बार पकड़ कर चोरी का माल बरामद किया. उसे जेल की सलाखों में भी डाला, लेकिन वह किसी न किसी तिकड़म से अपनी जमानत करवा लेता और बाहर आ कर फिर से किसी ज्वेलरी शोरूम को निशाना बनाता.

दिल्ली में स्थित थाना निजामुद्दीन के भोगल में स्थित उमराव सिंह ज्वेलर्स का शोरूम 25 सितंबर, 2023 को साप्ताहिक अवकाश की वजह से बंद था. 26 सितंबर को शोरूम के मालिक महावीर प्रसाद जैन सुबह 10 बजे दुकान पर पहुंचे तो वहां पूरा स्टाफ आ चुका था. सभी गपशप कर रहे थे.

मालिक को कार से उतरता देख उन्होंने अपने मालिक को अभिवादन किया. मुसकरा कर उन का अभिवादन स्वीकार करते हुए महावीर प्रसाद जैन ने बैग से चाबियों का गुच्छा निकाल कर एक कर्मचारी की तरफ बढ़ा दिया.

उस कर्मचारी ने शोरूम के ताले खोले और एक अन्य कर्मचारी के सहयोग से दुकान का शटर उठाया तो धूल का गुबार दुकान के भीतर से निकल कर दोनों से टकराया. दोनों





अकेले लोकेश ने की दिल्ली में 25 करोड़ की चोरी

❑ कमल दीप

धूल को हाथ से हटाने का प्रयास करते हुए बुरी तरह खांसने लगे.

''इतनी धूल शोरूम में कहां से आ गई ?'' महावीर प्रसाद जैन हैरानी से बोले.

''कल शोरूम बंद था न मालिक, इस की वजह से अंदर धूल जमा हो गई होगी.'' एक कर्मचारी ने अपनी राय प्रकट की.

''एक दिन में इतनी धूल दुकान में थोड़ी इकट्ठा हो जाएगी, जरा अंदर जा कर देखो तो...''

महावीर प्रसाद जैन कह ही रहे थे, उस से पहले ही एक युवा कर्मचारी हाथों से धूल हटाने की कोशिश करता हुआ शोरूम में घुस गया था. वह धूल के गुबार में किसी तरह आंखें जमाने में कामयाब हुआ तो उस के गले से चीख निकल गई.

वह चीखता हुआ बाहर भागा, ''मालिक अंदर स्ट्रांग रूम की दीवार टूटी हुई है...''

''क... क्या कह रहे हो ?'' महावीर प्रसाद घबरा कर बोले और जल्दी से शोरूम में घुस गए.

शोरूम में धूल ही धूल भरी हुई थी. अंधेरा भी था.

अन्य स्टाफ के लोग भी अंदर आ गए थे. धूल और अंधेरे के कारण कुछ देख पाना संभव नहीं था.

एक कर्मचारी ने समझदारी दिखाते हुए लाइट्स और एग्जास्ट फैन चालू कर दिए. थोड़ी देर में दुकान की धूल छंटी तो रोशनी में उन्होंने जो कुछ देखा, वह उन के होश उड़ाने के लिए काफी था. स्ट्रांगरूम की दीवार को तोड़ कर खिड़की जैसा रास्ता बना दिया गया था. फर्श पर ईंटों और सीमेंट का मलबा पड़ा था. यह रास्ता क्यों बनाया गया होगा, इस का अनुमान लगाते ही महावीर प्रसाद चीखे, ''स्ट्रांगरूम का लौक खोलो और लौकर चेक करो.''

स्ट्रांगरूम का दरवाजा खोला गया तो अंदर रखा लौकर टूटा हुआ था, उस में रखे सोने और हीरों के आभूषण गायब थे.

बड़ी दुकानों में सुरक्षा की दृष्टि से मजबूत स्ट्रांगरूम का निर्माण करवाया जाता है. दुकान बंद होने से पहले सारे आभूषण स्ट्रांगरूम के लौकर में रख दिए जाते हैं.

24 सितंबर रविवार को जब दुकान बंद की गई थी, महावीर प्रसाद ने अपने सामने सारे आभूषणों को स्ट्रांगरूम के लौकर में रखवाया था. अब वह लौकर खाली था. उस का मजबूत दरवाजा काट कर किसी ने सारे आभूषणों की चोरी कर ली थी.

महावीर प्रसाद खाली लौकर देखते ही गश खा कर गिर पड़े. अन्य कर्मचारियों के होश फाख्ता हो गए थे, उन की समझ में कुछ नहीं आ रहा था. अपने मालिक को बेहोश हो कर गिरता देख कर वे संभले. 2-3 कर्मचारी उन्हें उठा कर बाहर के हाल में लाए और चेहरे पर पानी के छींटे मार कर उन्हें होश में लाने का प्रयास करने लगे.

थोड़े प्रयास से महावीर प्रसाद होश में आ कर उठ बैठे. उन्होंने सब से पहले मोबाइल निकाल कर पुलिस कंट्रोल रूम को अपने यहां हुई चोरी की जानकारी दे दी.

मजबूत लौकर टूटने पर पुलिस हुई हैरान

भोगल का थाना क्षेत्र निजामुद्दीन था. कंट्रोल रूम से थाने को उमराव

> पुलिस ने अनुमान लगाया कि चोर इसी इमारत की सीढ़ियों से इमारत की छत पर पहुंचे. वहां से ज्वेलरी शोरूम की इमारत पर आए और सीढ़ी के ग्रिल दरवाजे का ताला तोड़ कर ग्राउंड फ्लोर पर आ गए. उन्होंने यह काम सोमवार को किया, क्योंकि उस दिन साप्ताहिक अवकाश के कारण शोरूम बंद था.

सिंह ज्वेलर्स के यहां लौकर तोड़ कर आभूषण चोरी चले जाने की सूचना दी गई तो थोड़ी देर में ही निजामुद्दीन के एसएचओ परमवीर और एसआई जितेंद्र रघुवंशी मय स्टाफ के उमराव सिंह ज्वेलर्स शोरूम पर पहुंच गए.

एसएचओ और एसआई जितेंद्र रघुवंशी ने दुकान में चोरों द्वारा तोड़ी गई स्ट्रांगरूम की डेढ़ फुट मोटी दीवार को देखा तो उन्हें बड़ा ताज्जुब हुआ. यह काम 1-2 घंटे का नहीं हो सकता था. लौकर का लोहे का मजबूत दरवाजा भी काटा गया था. इस में भी काफी समय लगा होगा.

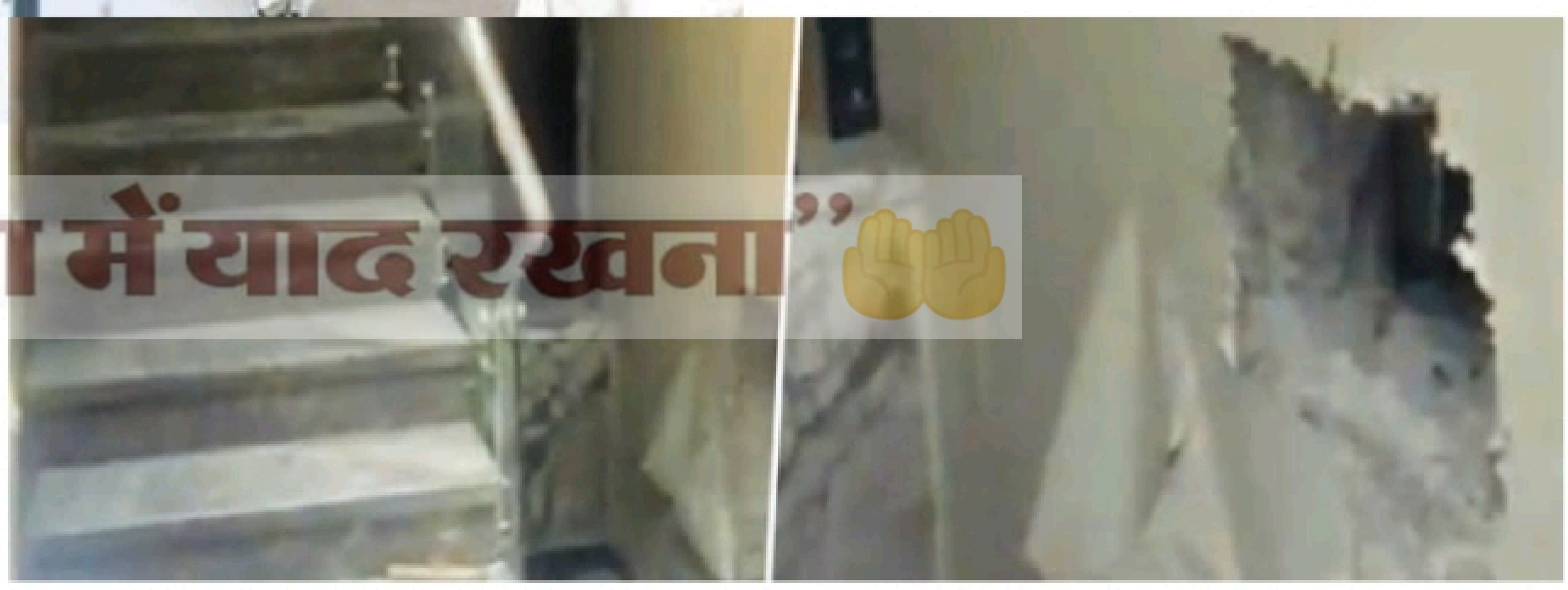
पुलिस का मानना था कि चोर रात भर ज्वेलरी शोरूम में रहे हैं और उन्होंने इत्मीनान से यह चोरी की है. उमराव सिंह ज्वेलर्स की दुकान ग्राउंड फ्लोर पर थी. यह 4 मंजिला इमारत में ऊपर के 3 मंजिल पर आवासीय फ्लैट हैं. पूरी छानबीन करने के बाद यह अनुमान लगाया गया कि चोर पड़ोस की छत से शोरूम की छत पर आए. ऊपर ग्रिल दरवाजे में मजबूत ताला था, उसे तोड़ कर वह सीढियों के रास्ते शोरूम में घुसे और आभूषणों पर हाथ साफ कर दिया.

एसएचओ और एसआई शोरूम के मालिक महावीर प्रसाद जैन के पास आए. वह पत्थर की मूरत बने बैठे थे. उन का चेहरा पसीने से तरबतर था.

''इस चोरी का आप को कैसे पता चला ?'' एसआई जितेंद्र रघुवंशी ने सवाल किया.

''सुबह हम ने जैसे ही शोरूम खोला तो अंदर धूल का गुबार भरा था. एग्जास्ट चलाने से जब धूल छंटी, तब हम ने स्ट्रांगरूम की दीवार को टूटा हुआ पाया. स्ट्रांगरूम का





उमराव सिंह ज्वेलर्स शोरूम में जांच करती पुलिस और (दाहिने) स्ट्रांगरूम की टूटी दीवार

दरवाजा खोल कर देखा गया तो लौकर का दरवाजा भी कटा मिला, उस में रखे सारे आभूषण गायब हैं सर.''

''आप के अनुमान से चोरों ने कितने मूल्य के आभूषण चोरी किए हैं ?''

''लौकर में लगभग 25 करोड़ के आभूषण थे, सभी चोरी कर लिए गए हैं. 5 लाख रुपए का कैश था, उसे भी चोर ले गए हैं.''

''25 करोड़ की चोरी!'' एसएचओ परमवीर का मुंह खुला का खुला रह गया. एसआई जितेंद्र रघुवंशी भी इतनी बड़ी चोरी की जानकारी पा कर चौंक गए कि यह किसी मामूली चोर का काम नहीं हो सकता.

इस की जानकारी एसएचओ परमवीर ने उच्चाधिकारियों को दी तो जिले से ले कर पुलिस हैडक्वार्टर तक के अधिकारी हरकत में आ गए. अधिकारियों की गाड़ियां उमराव सिंह ज्वेलर्स शोरूम की ओर दौड़ पड़ीं.

साउथईस्ट जिले के डीसीपी राजेश देव भी खबर पा कर तुरंत उमराव सिंह ज्वेलर्स शोरूम पर आ गए. उन्होंने शोरूम में जा कर बड़ी बारीकी से चोरों द्वारा की गई चोरी की वारदात का निरीक्षण किया.

स्ट्रांगरूम की 3 ओर की दीवारें लोहे की थीं, एक दीवार मोटे सरिया और कंक्रीट से बनाई गई थी. चोरों ने कंक्रीट की दीवार को तोड़ कर अंदर जाने का रास्ता बनाया था. वे छत के रास्ते से नीचे दुकान में उतरे थे. लौकर भी कटर से काट दिया गया था.

स्ट्रांगरूम में लोहे की बड़ीबड़ी 2 तिजोरियां भी रखी थीं, लेकिन चोरों ने उन के साथ छेड़छाड़ नहीं की. क्योंकि स्ट्रांगरूम के अंदर ही भारी मात्रा में सोने और हीरे के आभूषण मिल गए थे. स्ट्रांगरूम भी अलमारी जैसा था. उस में कई किलोग्राम चांदी के भी आभूषण थे, लेकिन चोर उन आभूषणों को नहीं ले गए.

डीसीपी राजेश देव ने फिगरप्रिंट एक्सपर्ट और तेजतर्रार इंसपेक्टर विष्णु दत्त और इंसपेक्टर दिनेश को भी वहां बुला कर जांच में लगा दिया. स्पैशल स्टाफ के इंसपेक्टर राजेंद्र डागर वहां आ गए. दुकान में 6 सीसीटीवी कैमरे थे, जिन की तार चोरों ने काट दी थी.

उन कैमरों की फुटेज कब्जे में ले ली गई. पड़ोस की इमारत में रहने वालों से पूछताछ की गई. इमारत में कई परिवार रहते थे. उन लोगों का कहना था कि उन्होंने ज्वेलरी शोरूम के आसपास किसी को संदिग्ध हालत में घूमते नहीं देखा, न उन लोगों ने ज्वेलरी शोरूम में घुसे चोरों के द्वारा अंदर की गई तोड़फोड की आवाजें सुनीं. चोर ज्वेलरी शोरूम में कब और कैसे घुसे, वे नहीं जानते.

पुलिस ने अनुमान लगाया कि चोर इसी इमारत की सीढ़ियों से इमारत की छत पर पहुंचे. वहां से ज्वेलरी शोरूम की इमारत पर आए और सीढ़ी के ग्रिल दरवाजे का ताला तोड़ कर ग्राउंड फ्लोर पर आ गए. उन्होंने यह काम सोमवार को किया, क्योंकि उस दिन साप्ताहिक अवकाश के कारण शोरूम बंद था.

उन्हें सोमवार का दिन और रात का पूरा वक्त स्ट्रांगरूम की दीवार तोड़ कर लौकर तक पहुंचने के लिए मिला. उन्होंने कटर से लौकर भी काट डाला और सारे आभूषण ले कर चले गए.

पुलिस की कई टीमें इस हाईप्रोफाइल चोरी का सुराग तलाशने में जुटी थीं. साइबर सेल टैक्निकल सर्विलांस पर काम कर रही थी. काल डिटेल्स खंगालने का भी काम जारी था.

छत्तीसगढ़ पुलिस से मिला सुराग

चोरों ने ज्वेलरी शोरूम में लगे सीसीटीवी कैमरों की वायर अंदर घुसते ही काट डाली थी, लेकिन वायर काटने से पहले की एक व्यक्ति की तसवीर सीसीटीवी फुटेज में कैद हो गई थी. उस व्यक्ति का हुलिया ज्यादा स्पष्ट नहीं था और पुलिस के लिए उसे पहचान

पाना भी आसान नहीं था, लेकिन जांच में जुटी पुलिस टीम ने हिम्मत नहीं हारी.

दूसरे दिन भोगल एरिया में लगे सीसीटीवी कैमरों को खंगालते वक्त पुलिस को एक फुटेज में उसी कदकाठी के एक व्यक्ति की तसवीर मिली, जैसी ज्वेलरी शोरूम में मिली थी. इस में उस व्यक्ति का चेहरा साफसाफ दिखाई पड़ रहा था. फोटो के सहारे पुलिस इस व्यक्ति का क्रिमिनल रिकौर्ड खंगालने में जुट गई.

दिल्ली के किसी भी थाने में इस व्यक्ति का फोटो नहीं था. हां, उस फोटो के जरिए गूगल पर इंटरस्टेट चोरों का रिकौर्ड खंगाला गया तो यह छत्तीसगढ़ के मशहूर चोर लोकेश श्रीवास के रूप में दर्ज मिला.

एसआई जितेंद्र ने स्पैशल स्टाफ के इंसपेक्टर राजेंद्र डागर, इंसपेक्टर विष्णु दत्त से विचारविमर्श किया. तीनों ने यह तय किया कि छत्तीसगढ़ पुलिस से इस लोकेश श्रीवास की पूरी जानकारी मालूम की जाए.

वह अभी छत्तीसगढ़ पुलिस को फोन करने वाले ही थे कि छत्तीसगढ़ के बिलासपुर थाने से एक एसआई की काल एसआई जितेंद्र के मोबाइल पर आ गई. उस सबइंसपेक्टर ने कहा, ''जितेंद्रजी, हम यहां रुटीन चेकिंग के लिए निकले थे. हमें आज लोकेश राव नाम का एक चोर हाथ लगा. यह लोकेश राव छोटीमोटी चोरियां करता है. एक चोरी के मामले में आंध्र प्रदेश की पुलिस को उस की तलाश थी.

''इस चोर का कहना है, मुझ जैसे छोटे चोर को क्यों पकड़ते हो, दिल्ली में शातिर चोर लोकेश श्रीवास ने बड़े ज्वेलरी शोरूम पर हाथ साफ किया है, उसे पकड़ो तो जानूं. मैं यह जानना चाहता हूं क्या दिल्ली में कोई बड़ा ज्वेलरी शोरूम लूटा गया है?''

''हां. कल यहां उमराव सिंह ज्वेलर्स के यहां 25 करोड़ के आभूषणों पर उसी लोकेश श्रीवास ने हाथ साफ कर दिया है.'' एसआई जितेंद्र ने बताया, ''हमें भोगल मार्किट में एक व्यक्ति संदिग्ध अवस्था में घूमता सीसीटीवी फुटेज में मिला है. गूगल पर सर्च करने से वह व्यक्ति शातिर चोर लोकेश श्रीवास ही निकला. वह आटो में सवार हो कर ज्वेलरी शोरूम से गया है, हम आटो का पता लगवा रहे हैं. आप ने हमारा विश्वास पक्का किया है. इस जानकारी के लिए आप का धन्यवाद. जल्द ही हम छत्तीसगढ़ आ सकते हैं.''

''वेलकम जितेंद्रजी. यहां हम आप का पूरा सहयोग करेंगे.'' कहने के बाद एसआई ने एक मोबाइल नंबर जितेंद्र रघुवंशी के वाट्सऐप पर भेज दिया. और कहा, ''यह लोकेश श्रीवास का मोबाइल नंबर है. आप इस से लोकेश की लोकेशन ट्रेस कर सकेंगे.''

उधर से नंबर मिलते ही एसआई जितेंद्र ने लोकेश श्रीवास का मोबाइल नंबर सर्विलांस सेल के पास भेज दिया, ताकि इस नंबर की लोकेशन मालूम हो सके.

> लोकेश श्रीवास ने आंध्र प्रदेश के विजय नगर शहर में एक ज्वेलरी शोरूम में 6 किलोग्राम सोने के आभूषणों की चोरी की. तेलंगाना स्टेट में एक ज्वेलर के यहां 4 किलोग्राम, ओडिशा में 500 ग्राम, भिलाई के बजाज ज्वेलर के यहां से 17 लाख के आभूषणों पर हाथ साफ किया. सन 2019 में लोकेश श्रीवास ने भिलाई के आनंद नगर में पारख ज्वेलर के यहां से 15 करोड़ के आभूषण चोरी किए.

इधर पुलिस की एक टीम उस आटो का पता तलाशने में जुट गई. जांच में उस आटो के मालिक का पता मिल गया.

पुलिस उस आटो मालिक के घर पहुंच गई. उसे लोकेश श्रीवास की फोटो दिखा कर पूछा गया कि कल रात इसे उमराव सिंह ज्वेलर्स के पास से बिठा कर कहां उतारा?

आटो वाले ने तुरंत बताया, ''वह सवारी मुझे एक हजार रुपया भाड़ा दे गई थी, इसलिए याद है. मैं ने उसे कश्मीरी गेट बसअड्डे पर उतारा था.''

पुलिस के 4 सिपाही साथ ले कर इंसपेक्टर विष्णुदत्त, इंसपेक्टर दिनेश और निजामुद्दीन थाने के एसआई जितेंद्र कश्मीरी गेट बसअड्डा पहुंच गए.

यहां हर स्टेट की ओर जाने वाली बसों के टर्मिनल पर सीसीटीवी कैमरे लगे थे. इंसपेक्टर दिनेश के इशारे पर पुलिस टीम ने सीसीटीवी कैमरों की फुटेज देखनी शुरू की तो उन्हें वह व्यक्ति छत्तीसगढ़ जाने वाली एक बस में सवार होता दिखाई दे गया.

सर्विलांस टीम ने भी पुष्टि कर दी कि इस फोन नंबर की लोकेशन छत्तीसगढ़ में शो हो रही है. इस से पूरी तरह स्पष्ट हो गया था कि मास्टरमाइंड चोर लोकेश श्रीवास ही है.

इंसपेक्टर विष्णु दत्त ने डीसीपी राजेश देव को यह जानकारी दे दी और बिलासपुर के एसआई के फोन की बात भी बता दी. डीसीपी पूरी संतुष्टि करना चाहते थे. उन्होंने लोकेश श्रीवास की तसवीर छत्तीसगढ़ पुलिस के पास फ्लैश करवा दी. वहां से जो कुछ बताया गया, उस से जांच में जुटी पुलिस टीम की बांछें खिल गईं.

पता चला कि वह व्यक्ति छत्तीसगढ़ के क्रिमिनल रिकौर्ड में दर्ज है. उस का नाम लोकेश श्रीवास उर्फ गोलू है. उम्र 32 साल. जानकारी मिली कि वह अब तक दरजनों ज्वेलरी शोरूम को अपना निशाना बना चुका है.

छत्तीसगढ़ पुलिस ने उसे कई बार पकड़ कर जेल में डाला था, लेकिन न जाने कैसे यह शातिर चोर अपनी जमानत करवा कर जेल से बाहर आ जाता है.

फिलहाल वह छत्तीसगढ़ पुलिस की कस्टडी में नहीं था. छत्तीसगढ़ पुलिस एक ज्वेलर के यहां हुई चोरी के केस में लोकेश श्रीवास को तलाश कर रही थी.

डीसीपी राजेश देव ने इस जानकारी पर राहत की सांस ली. लोकेश श्रीवास एक शातिर चोर है और उसी ने दिल्ली के भोगल इलाके में उमराव सिंह ज्वेलर्स के शोरूम में 25 करोड़ की ज्वेलरी पर हाथ साफ किया था. चूंकि वह छत्तीसगढ़ गया था, इसलिए डीसीपी को उम्मीद थी कि लोकेश श्रीवास को छत्तीसगढ़ में पकड़ा जा सकता है.

उन्होंने नारकोटिक्स सेल के इंसपेक्टर विष्णुदत्त शर्मा और इंसपेक्टर दिनेश कुमार को फ्लाइट से छत्तीसगढ़ जाने का आदेश दे दिया. दोनों इंसपेक्टर छत्तीसगढ़ पुलिस की मदद से लोकेश श्रीवास को तलाश कर के



सुपर चोर लोकेश श्रीवास से बरामद सोने के आभूषण

गिरफ्तार करने के लिए छत्तीसगढ़ रवाना हो गए. स्पैशल स्टाफ के इंसपेक्टर राजेंद्र डागर को सर्विलांस विभाग में रह कर लोकेश श्रीवास के मोबाइल काल पर नजर रखनी थी.

सुपर चोर की पत्नी चलाती है ब्यूटीपार्लर

32 वर्षीय लोकेश श्रीवास छत्तीसगढ़ राज्य के कवर्धा शहर में कैलाश नगर इलाके में रहता था. परिवार में मांबाप, पत्नी रमा और 2 बेटियां क्रमश: 11 वर्ष और 6 वर्ष है.

लोकेश श्रीवास का मकान तीनमंजिला है. वह अपने घर में कम ही रहता है. उस का ज्यादातर वक्त छत्तीसगढ़ और दूसरे राज्यों की जेलों में ही कटता है. लोकेश की पत्नी रमा मकान के निचले हिस्से में ब्यूटीपार्लर चलाती है. मकान का एक हिस्सा रमा ने किराए पर दे रखा है, जिस से वह अपने घर का खर्च चलाती है.

लोकेश श्रीवास शातिर चोर है, यह पत्नी रमा को शादी के बहुत बाद में पता चला था. लोकेश ने उसे कभी नहीं बताया कि वह क्या काम करता है. जब घर के दरवाजे पर आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, तेलंगाना, ओडिशा, छत्तीसगढ़ के दुर्ग, भिलाई की पुलिस लोकेश को दबोचने के लिए आने लगी और घर में लोकेश श्रीवास द्वारा छिपा कर रखा गया चोरी का माल बरामद होने लगा तो रमा को पता चला कि उस का पति शातिर चोर है.

लोकेश श्रीवास पहले एक सैलून में बाल काटने का काम करता था. उस के ख्वाब ऊंचे थे. बाल काटते वक्त उस का ख्वाब होता था कि उस के हाथ में सोने का कंघा, सोने की कैंची और सोने का उस्तरा हो, जिस से वह देश के प्रधानमंत्री के बाल काटे.

प्रधानमंत्री तक तो उस की पहुंच संभव नहीं थी, लेकिन अपने सुनहरे ख्वाब पूरे करने के लिए उस ने 20 मई, 2006 को एक ज्वेलरी शोरूम में चोरी की. लाखों के गहने हाथ लगे तो लोकेश श्रीवास ने चोरी को ही अपना धंधा बना लिया.

लोकेश श्रीवास ने आंध्र प्रदेश के विजय नगर शहर में एक ज्वेलरी शोरूम में 6 किलोग्राम सोने के आभूषणों की चोरी की. तेलंगाना स्टेट में एक ज्वेलर के यहां 4 किलोग्राम, ओडिशा में 500 ग्राम, भिलाई के बजाज ज्वेलर के यहां से 17 लाख के आभूषणों पर हाथ साफ किया. सन 2019 में लोकेश श्रीवास ने भिलाई के आनंद नगर में पारख ज्वेलर के यहां से 15 करोड़ के आभूषण चोरी किए.

19 और 25 अगस्त, 2023 को बिलासपुर में मास्टरमाइंड लोकेश श्रीवास ने एक ही रात में 10 ज्वेलरी शोरूम को अपना निशाना बनाया था.

लोकेश श्रीवास को विभिन्न राज्यों की पुलिस ने कितनी ही बार पकड़ कर चोरी का माल बरामद किया. उसे जेल की सलाखों में भी डाला, लेकिन वह किसी न किसी तिकड़म से अपनी जमानत करवा लेता और बाहर आ कर फिर से किसी ज्वेलरी शोरूम को निशाना बनाता.

उस ने 5 साल पहले चोरी के माल से 60 हजार की पल्सर मोटरसाइकिल खरीदी और 60 लाख रुपए से जिम खोला था, लेकिन वहां के कलेक्टर अमरीश कुमार शरण ने जिम को सील करा कर लोकेश श्रीवास को जिलाबदर कर दिया.

चूंकि उस वक्त देश में लोकसभा चुनाव होने वाले थे और लोकेश श्रीवास सैकड़ों चोरियां कर के पुलिस रिकौर्ड में अपना एक अलग ही क्रिमिनल रिकौर्ड दर्ज करवा चुका था, इसलिए उसे जिलाबदर करना बहुत जरूरी था.

शातिर मास्टरमाइंड चोर लोकेश श्रीवास इतनी चोरियां करने के बाद भी चैन से नहीं बैठा. छत्तीसगढ़ से 11 सौ किलोमीटर की दूरी तय कर के वह देश की राजधानी दिल्ली आया और 25 सितंबर, 2023 को उस ने साउथईस्ट दिल्ली के थाना निजामुद्दीन क्षेत्र के भोगल मार्केट में स्थित उमराव सिंह ज्वेलर्स के शोरूम में लगभग 25 करोड़ के आभूषणों पर हाथ साफ कर दिया. यह लोकेश श्रीवास द्वारा अब तक की गई चोरियों में सब से बड़ी चोरी मानी जा रही थी.

इसी सुपर चोर लोकेश श्रीवास को गिरफ्त में लेने के लिए दिल्ली पुलिस के इंसपेक्टर विष्णुदत्त और इंसपेक्टर दिनेश कुमार छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में एसपी संतोष सिंह के औफिस में पहुंचे थे.

शातिर चोर के बारे में उस के साथी से मिला सुराग

एसपी संतोष सिंह ने शातिर चोर लोकेश श्रीवास की पूरी हिस्ट्री दोनों को बताते हुए कहा, ''इंसपेक्टर, कमाल की बात यह है कि लोकेश श्रीवास अकेले ही चोरियां करता है. हम ने उस से इस विषय में पूछा था. उस का कहना था कि अकेले चोरी करने में वह अधिक सुविधा महसूस करता है. गैंग बना कर चोरी की जाए तो कोई न कोई गैंग का साथी बड़बोलेपन में फंसा सकता है. एक आदमी फंसा तो समझो सारा गैंग पकड़ में आया,

इसलिए मैं जो करता हूं अपने हिसाब से अकेला ही करता हूं.''

''कमाल की बात है सर. दिल्ली में उमराव सिंह ज्वेलरी शोरूम में जिस हिसाब से दीवार और लौकर काटा गया है, वह एक व्यक्ति का काम नहीं लगता.'' इंसपेक्टर विष्णुदत्त ने हैरानी से कहा.

''वह अकेले लोकेश श्रीवास के ही शातिर दिमाग और हाथों का कमाल होगा. आप देख लेना, जब वह पकड़ में आएगा, तब वह यही कहेगा, मैं ने दिल्ली के उमराव सिंह ज्वेलर्स के यहां अकेले ही 25 करोड़ के आभूषणों पर हाथ साफ किया था.''

''वह पकड़ में कैसे आएगा सर?'' विष्णुदत्त बोले, ''क्या हमें उस के कवर्धा वाले घर पर रेड करनी चाहिए?''

''वह वहां नहीं मिलेगा.'' एसपी संतोष सिंह बोले, ''दिल्ली से उमराव सिंह ज्वेलर्स के यहां चोरी करके वह छत्तीसगढ़ वाली बस में बैठा है, यह मुझे आप के डीसीपी राजेश देव ने बताया था. तभी मैं ने लोकेश श्रीवास को दबोचने के लिए पुलिस को अलर्ट कर दिया था. पुलिस ने बिलासपुर आने वाली बस और उस के कबीर नगर के घर पर दबिश दी, लेकिन वह नहीं मिला.

''बस से वह पहले ही उतर गया था, इस की सीसीटीवी कैमरों से फुटेज मिल गई है. हम यह मान कर चल रहे हैं कि लोकेश श्रीवास छत्तीसगढ़ वाली बस से बिलासपुर आया है, लेकिन सुरक्षा के मद्देनजर वह बसअड्डे तक आने से पहले ही रास्ते में उतर गया. उस की तलाश यहां की पुलिस कर रही है. उसे जल्द ही पकड़ लिया जाएगा.''

अभी एसपी संतोष सिंह ने अपनी बात खत्म की ही थी कि उन का लैंडलाइन फोन बजने लगा. उन्होंने रिसीवर उठा कर कान से लगाया, ''हैलो.''

''सर, यहां पर लोकेश राव चोर अभीअभी आंध्रा पुलिस के हाथ लगा है. उस ने गले में मोटी सोनी की चेन पहन रखी है. पूछताछ में उस ने बताया है कि यह चेन उसे लोकेश श्रीवास ने दी है.''

> ''साहब, मैं अकेले ही काम करने में विश्वास रखता हूं. मैं ने आज तक जितनी भी चोरियां की हैं, अकेले ही की हैं. मैं इस बार बड़ा हाथ मारना चाहता था. मुझे मालूम है कि बड़े ज्वेलर्स महानगरों में ही होते हैं. मैं ने दिल्ली का चुनाव किया. दिल्ली में बड़े ज्वेलर्स कहांकहां पर हैं, इस के लिए मैं ने गूगल पर सर्च किया.'' लोकेश ने बताया.

''ओह!'' एसपी संतोष सिंह खुशी से उछल पड़े, ''तब तो लोकेश राव यह भी जानता होगा कि लोकेश श्रीवास कहां है?''

''बेशक जानता होगा. उस से पूछताछ की जा रही है, आप कवर्धा आ जाइए सर, मैं कवर्धा थाने से बात कर रहा हूं.''

''हम आते हैं.'' एसपी संतोष सिंह उठते हुए बोले.

उन्होंने रिसीवर क्रेडिल पर रख दिया और वह इंसपेक्टर विष्णुदत्त और इंसपेक्टर दिनेश कुमार से मुखातिब हुए, ''चलिए, लोकेश श्रीवास हाथ आने ही वाला है.''

इंसपेक्टर विष्णुदत्त और इंसपेक्टर दिनेश कुमार ने कुरसी छोड़ दी. वह एसपी संतोष सिंह के साथ कक्ष से बाहर की ओर बढ़ गए. पुलिस का एक दस्ता भी उन के साथ था.

अकेले ही चुरा ले गया 25 करोड़ की ज्वेलरी

कवर्धा पुलिस थाने में कुरसी पर बैठा वह पतलादुबला व्यक्ति लोकेश राव था. लोकेश श्रीवास के नाम से मिलताजुलता नाम. काम छोटीमोटी चोरियां करना. उस ने आंध्र प्रदेश में चोरी की थी. वहां की पुलिस उस की तलाश में कवर्धा आई तो वह हत्थे चढ़ गया.

उस वक्त वह गले में सोने की मोटी चेन पहने था. पूछने पर उस ने बताया कि लोकेश श्रीवास उसे जानता है, उस ने अभी दिल्ली में किसी ज्वेलरी शोरूम में मोटा हाथ मारा है, खुश हो कर उस ने सोने की चेन उसे उपहार में दी है.

लोकेश राव से पुलिस लोकेश श्रीवास के ठिकाने का पता मालूम कर रही थी, लेकिन वह बारबार एक ही बात कह रहा था कि वह लोकेश श्रीवास का ठिकाना नहीं जानता.

''तुम अपने किसी दूसरे साथी का नामपता जानते हो, जो तुम्हारी तरह ही चोरियां करता हो?'' इंसपेक्टर विष्णुदत्त ने उसे घूरते हुए पूछा.

''हां, मेरा एक दोस्त है शिवा चंद्रवंशी, वह भी मेरी तरह चोर है.''

''शिवा चंद्रवंशी कहां रहता है?''

''वह कबीर धाम में रह रहा है, वहां उस ने किराए का कमरा ले रखा है.''

''चलो, हमें शिवा से मिलवाओ,'' इंसपेक्टर विष्णुदत्त ने कहा.

लोकेश राव इस के लिए न नहीं कह सका. वह सभी को अपने साथ ले कर कबीर धाम में शिवा के कमरे पर पहुंच गया. उस वक्त शिवा सो रहा था. अधिकारियों ने उसे सोते हुए ही दबोचा तो वह हड़बड़ा कर उठ बैठा. पुलिस को देख कर वह कांपने लगा.

''तुम लोकेश श्रीवास को जानते हो, यह लोकेश राव ने हम से कहा है. बताओ, इस वक्त लोकेश श्रीवास कहां है?'' इंसपेक्टर दिनेश कुमार ने अंधेरे में तीर चलाया.

''व.. वह भिलाई के स्मृतिनगर में है...'' शिवा चंद्रवंशी ने हकलाते हुए बताया.

''वह तुम से कब मिला था?''

''कल वह दिल्ली से मोटा माल ले कर आया था. यह कमरा उस ने पहले ही किराए पर ले लिया था ताकि माल यहां छिपा सके.''

शिवा के मुंह से यह रहस्य उजागर होते ही पुलिस टीम ने कमरे की तलाशी लेनी शुरू कर दी. तकिए, रजाई गद्दों और पलंग में छिपा कर रखे गए सोनेहीरों के आभूषणों को पुलिस ने बरामद किया. 19 लाख रुपया कैश भी बरामद हुआ.

यह आभूषण अनुमान से 18-19 किलोग्राम वजन के थे और इन की कीमत करोड़ों में आंकी जा सकती थी. यह आभूषण उमराव सिंह ज्वेलर्स के शोरूम से चुराए गए हैं या कहीं और से, यह लोकेश श्रीवास ही बता सकता था.

शिवा को ले कर छत्तीसगढ़ पुलिस टीम दिल्ली पुलिस टीम के साथ भिलाई के लिए



पुलिस की गिरफ्त में सुपर चोर लोकेश श्रीवास

रवाना हो गई. एसपी 2 सिपाहियों की कस्टडी में लोकेश राव को साथ ले कर अपने औफिस लौट आए.

भिलाई के स्मृति नगर के एक किराए के कमरे में लोकेश श्रीवास बड़े इत्मीनान से पलंग पर लेटा आराम कर रहा था. इस कमरे तक पुलिस पहुंच जाएगी, उसे जरा भी अनुमान नहीं था. पुलिस ने उसे कस्टडी में ले लिया. लोकेश श्रीवास और शिवा चंद्रवंशी को छत्तीसगढ़ की रायपुर के न्यायिक मजिस्ट्रैट की अदालत में पेश किया गया.

इंसपेक्टर विष्णु दत्त ने डीसीपी को फोन कर लोकेश श्रीवास के पकड़े जाने की खबर दे दी. डीसीपी के आदेश पर निजामुद्दीन थाने के एसआई जितेंद्र रघुवंशी रायपुर पहुंच गए. उन्होंने चोरी के आरोपी लोकेश श्रीवास की औपचारिक गिरफ्तारी और ट्रांजिट रिमांड तथा उस से जब्त किए गए आभूषणों को अपने कब्जे में लेने के लिए कोर्ट में दरख्वास्त की.

अदालत ने लोकेश श्रीवास की 72 घंटे की ट्रांजिट रिमांड मंजूर कर ली तथा लोकेश श्रीवास से जब्त संपत्ति भी जांच अधिकारी को सौंप दी.

अदालत में दुर्ग के एसीपी संजय कुमार ध्रुव भी मौजूद थे. उन्होंने दिल्ली से आए इंसपेक्टर विष्णु दत्त और इंसपेक्टर दिनेश कुमार तथा निजामुद्दीन थाने के एसआई जितेंद्र रघुवंशी की कस्टडी में महाचोर लोकेश श्रीवास को दिल्ली के लिए रवाना कर दिया.

चोरी के तरीके से पुलिस भी रह गई दंग

दिल्ली में लोकेश श्रीवास को थाना निजामुद्दीन लाया गया तो उसे देखने के लिए वहां भारी भीड़ जमा हो गई थी. डीसीपी राजेश देव, इंसपेक्टर विष्णुदत्त, इंसपेक्टर दिनेश कुमार, निजामुद्दीन थाने के एसएचओ परमवीर, एसआई जितेंद्र रघुवंशी और स्पैशल स्टाफ के इंसपेक्टर राजेंद्र डागर के सामने शातिर चोर लोकेश श्रीवास एकदम शांत खड़ा था. उस के चेहरे से नहीं लग रहा था कि 25 करोड़ की चोरी करने के बाद पकड़े जाने पर उसे खौफ हो.

वह पहले कितनी ही बार पकड़ा गया था, इसलिए उसे इस बार भी कस्टडी का कोई डर नहीं था. डीसीपी राजेश देव ने लोकेश श्रीवास के चेहरे पर नजरें गड़ा कर पूछा, ''छत्तीसगढ़ में रहते हो. तुम्हें यहां दिल्ली में उमराव सिंह ज्वेलर्स की जानकारी किस ने दी?''

''साहब, मैं अकेले ही काम करने में विश्वास रखता हूं. मैं ने आज एक जितनी भी चोरियां की हैं, अकेले ही की हैं. मैं इस बार बड़ा हाथ मारना चाहता था. मुझे मालूम है कि बड़े ज्वेलर्स महानगरों में ही होते हैं. मैं ने दिल्ली का चुनाव किया. दिल्ली में बड़े ज्वेलर्स कहांकहां पर हैं, इस के लिए मैं ने गूगल पर सर्च किया.

''दिल्ली के कितने ही ज्वेलर्स के नाम मेरे सामने आए. मैं चोरी के लिए इन में से किसी एक को टारगेट करना चाहता था. मैं 9 सितंबर, 2023 को सुबह करीब 11 बजे दिल्ली आया. 10 से 12 सितंबर तक चांदनी चौक में रहा और गूगल पर सर्च किए गए ज्वेलर्स की दुकानों पर जा कर उन की भोगोलिक स्थिति को चेक करता रहा. मुझे भोगल का उमराव सिंह ज्वेलर्स चोरी के लिए सब से आसान टारगेट लगा. क्योंकि इस के पास जो इमारत थी, उस में कई परिवार रहते थे. उस की सीढ़ियों से छत पर पहुंचा जा सकता था.''

कुछ क्षण को चुप होने के बाद लोकेश श्रीवास ने आगे कहना शुरू किया, ''मैं ने उमराव सिंह ज्वेलर्स की रेकी की. पास की इमारत से छत पर जा कर देखा. मुझे किसी ने भी नहीं टोका. शायद वहां रहने वाले लोग यही सोच रहे थे कि मैं किसी परिवार का मेहमान हूं. मैं ने उमराव सिंह ज्वेलर्स की दुकान में जा कर अंदर का मुआयना किया और फिर अपनी योजना को अंतिम टच देने लगा.

''12 सितंबर को मैं मथुरा-वृंदावन चला गया. मंदिरों में दर्शन करने के बाद 15 सितंबर को दिल्ली लौट आया. 17 सितंबर को मैं ने कश्मीरी गेट बस अड्डे से बस पकड़ी और मध्य प्रदेश चला गया. 21 सितंबर को मैं बस से साढ़े 7 बजे शाम को दिल्ली के सराय काले खां आया और सवा 9 बजे जंगपुरा पहुंचा और एक होटल में ठहरा .

''22 से 23 सितंबर तक मैं ने चोरी में इस्तेमाल होने वाले औजार एकत्र किए. मैं ने जीबी रोड से 1300 रुपए में कटर मशीन खरीदी. चांदनी चौक से मैं ने 100 रुपए का हथौड़ा खरीदा. मैं पेंचकस और प्लास अपने घर से लाया था. मैं ने ये औजार 23 सितंबर की रात को उमराव सिंह ज्वेलर्स की छत पर ले जा कर छिपा दिए.

''24 सितंबर को भोगल मार्किट से मैं ने कोल्डड्रिंक, चौकलेट, बिसकुट, ड्राईफ्रूट, केक आदि सामान खरीद कर अपने बैग में रख लिया. फिर 24 सितंबर की रात 11 बजे मैं पास



स्पैशल स्टाफ के इंसपेक्टर राजेंद्र डागर (दायं) और निजामुद्दीन थाने के एसआई जितेंद्र रघुवंशी

की इमारत की सीढ़ियों द्वारा छत पर पहुंचा. वहां से ज्वैलरी शोरूम की छत पर उतरा.

''वहां परछत्ती में ग्रिल का दरवाजा था, जिस पर ताला लगा था. मैं ने ग्रिल काट कर अंदर जाने का रास्ता बनाया और इत्मीनान से सीढ़ियां उतर कर नीचे शोरूम में पहुंच गया. मुझे मालूम था कि सोमवार को मार्केट की छुट्टी रहती है. मेरे पास 25 तारीख की शाम तक का समय था.

''मैं ने सब से पहले सीसीटीवी की तारें काटी, फिर आराम से सो गया. सुबह फ्रैश होने के बाद नाश्ता किया और स्ट्रांगरूम की दीवार काटने लगा. दीवार में अंदर जाने का रास्ता बन गया तो मैं ने अंदर जा कर लौकर का दरवाजा भी कटर से काट डाला और उस में रखे सोनेहीरों के सारे आभूषण बैग में भर लिए.''

''वहां से तुम्हें नकदी रुपया भी मिला होगा?'' एसआई जितेंद्र ने पूछा.

''हां, अलमारी में 5 लाख रुपए कैश था. वह भी मैं ने अपने बैग में भर लिया. मैं दुकान से 7 बजे बाहर निकला और छत पर आ कर पास वाली इमारत से नीचे आ गया.''

''यहां से तुम ने आटो किया और कश्मीरी गेट गए, जहां से तुम ने 8.40 बजे की छत्तीसगढ़ जाने वाली बस पकड़ ली.'' डीसीपी ने कहते हुए लोकेश श्रीवास को घूरा, ''इतना मोटा हाथ मारने के बाद तुम ने सरकारी बस में धक्के खाने का मन क्यों बनाया था?''

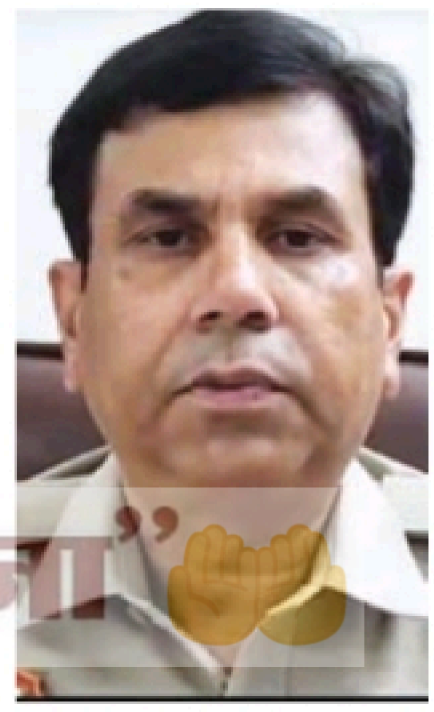
लोकेश श्रीवास मुसकराया, ''मैं ने अभी तक करोड़ों रुपए की चोरियां की हैं साब, लेकिन मुझ में अमीरों वाले ठाठ नहीं आए. मैं साधारण कपड़े पहनता हूं, साधारण ही रहता हूं क्योंकि दिखावा करने वाला अकसर लोगों की नजरों में आ जाता है. सरकारी बस में मैं ने लंबा सफर इसीलिए किया कि मुझे साधारण यात्री समझा जाए, कोई मुझ पर शक न करे.''

''यह शिवा और लोकेश राव तुम्हारे साथी रहे हैं चोरी के काम में...''

''नहीं साब!'' लोकेश श्रीवास ने बात काटी, ''मैं अकेला ही सारे काम को अंजाम देता हूं. वे छोटेमोटे चोर हैं, जेलों में उन से मेरी जानपहचान बनी. मैं ने दिल्ली में बड़ी चोरी करने की बात शिवा को बता दी थी और किराए पर कवर्धा में एक कमरा भी ले कर शिवा को वहां ठहरा दिया था. कवर्धा पहुंच कर मैं ने चोरी का माल वहां के कमरे में छिपा दिया. मुझ से गलती यह हुई कि मैं ने तरस खा कर लोकेश राव को सोने की एक चेन पहनने को दे दी थी और भिलाई चला गया.''

लोकेश श्रीवास द्वारा जुर्म कबूल करने के बाद डीसीपी ने प्रैस कौन्फ्रैंस कर लोकेश श्रीवास की उमराव सिंह ज्वेलर्स के यहां से 25 करोड़ की चोरी करने की पूरी कहानी बताते हुए उस से 18 किलो आभूषण और 12 लाख रुपए बरामद करने की जानकारी दी.''

महावीर प्रसाद जैन ने शातिर चोर लोकेश श्रीवास को 4 दिन में ही छत्तीसगढ़ जा कर



डीसीपी राजेश देव



एसएचओ परमवीर दहिया

गिरफ्तार करने वाली पुलिस टीम का आभार प्रकट करते हुए कहा, ''मैं ने तो उम्मीद ही छोड़ दी थी कि कुछ मिलेगा, लेकिन दिल्ली पुलिस ने ज्वैलरी और नकदी बरामद कर मेरे अंदर चेतना जगा दी. मैं दिल से इन्हें धन्यवाद देता हूं.''

पुलिस ने सुपर चोर लोकेश श्रीवास को न्यायालय में पेश कर दिया, जहां से उसे जेल भेज दिया गया. ●



दुपट्टे से बीवी का घोंटा गला

पंजाब में नशे के आदी एक व्यक्ति ने बीवी की तब हत्या कर दी, जब उन के बीच तूतूमैंमैं की नोंकझोंक के साथ झगड़ा बढ़ गया. वैसे तो यह उन के लिए आम बात थी और वे आए दिन किसी न किसी बात को ले कर झगड़ते रहते थे, लेकिन उस रोज बात कुछ ज्यादा बढ़ गई थी.

मोंगा स्थित गांव खोटे का रहने वाला निहाल सिंह 22 नवंबर, 2023 की रात को अपनी बीवी गुरप्रीत कौर से झगड़ रहा था. झगड़े की वजह उन का तीनों बच्चों को ले कर 4 दिन पहले मुक्तसर साहिब जाने की बात थी. उस वक्त निहाल सिंह ज्यादा नशे में गुस्से से पागल था. उस ने आव देखा न ताव, जैसे ही उन के बीच हाथापाई होने लगी, पति ने पास पड़े दुपट्टे से बीवी का गला घोंट दिया. जब वह बेजान हो गई, तब उस का नशा छूमंतर हो गया.


सांकेतिक तसवीर

अगले रोज इस की जानकारी गुरप्रीत के पिता केवल सिंह को हुई. उन्होंने ही इस की सूचना डीएसपी मंजीत सिंह को दी और अपने दामाद निहाल सिंह पर दुपट्टे से गला दबा बहू की हत्या करने का आरोप लगाया. मौके पर पहुंच कर पुलिस टीम ने शव को पोस्टमार्टम के लिए सिविल अस्पताल भेज दिया. ○

लापता युवती का मिला शव

बिहार के मुजफ्फरपुर जिले के पानपुर करयात ओपी इलाके में एक युवती का लावारिस शव मिलने के बाद सनसनी फैल गई. उस की छानबीन में पाया गया कि युवती का घर मात्र 3 किलोमीटर की दूरी पर है. उस की हालत देख कर लग रहा था कि उस के साथ सामूहिक दुष्कर्म किया गया है.



युवती 19 नवंबर की सुबह 11 बजे घर से निकली थी. वह लोकल बाजार से कुछ सामान खरीदने निकली थी. उस के बाद अगले रोज आपत्तिजनक स्थिति में कई तरह के सामान मिले. उस का शव 20 नवंबर, 2023 की दोपहर को पोखरनुमा गहरे पानी में तैरता हुआ मिला था.

युवती के परिवार के लोग मजदूरी कर जीवनयापन करते हैं. स्थानीय ओपी अध्यक्ष सुशील कुमार सिंह ने बताया कि प्रथमदृष्टया स्थानीय लोगों का कहना है कि पोखर से कुछ ही दूरी पर झाड़ी में कई तरह के आपत्तिजनक सामान मिले हैं. ●

कम ब्याज चुकाने के लालच में लोग ऐप से तुरंत लोन देने वाली कंपनियों के झांसे में फंस जाते हैं. किस्तें चुकाने के बाद भी ये कंपनियां ग्राहकों का कई तरह से उत्पीड़न शुरू कर देती हैं. आप भी जानिए कि 350 करोड़ रुपए की ठगी करने वाली 'कैश एडवांस लोन ऐप' कंपनी ग्राहकों का किस तरह से उत्पीड़न करती थी?



लोन ऐप से 350 करोड़ की ठगी

❑ उमेशचंद्र त्रिवेदी

फोन की घंटी बजी तो खाना खा रहे दिनेश रस्तोगी ने टेबल पर रखे मोबाइल की स्क्रीन पर चमक रहे नाम को देखा. स्क्रीन पर राकेश आहूजा का नाम देख कर दिनेश ने हाथ में पकड़ा रोटी का टुकड़ा वापस प्लेट में रख दिया और फोन उठा कर काल रिसीव कर ली, ''हां बोल आहूजा, इस वक्त कैसे फोन किया ?''

''तू अभी इसी वक्त मेरे घर आ जा दिनेश,'' दूसरी ओर से आहूजा का बहुत उतावला स्वर उभरा.

''खैरियत तो है... देख रहा है इस वक्त रात के 9 बज रहे हैं. मैं खाना खा रहा हूं और तेरी भाभी आशा मेरे सामने बैठी हुई है.''

''तू दोनों को कुछ देर के लिए छोड़ दे भाई. तेरा मेरे पास आना इस वक्त बहुत जरूरी है.''

''ऐसी क्या आफत आ गई तुझ पर, जो मुझे बुला रहा है.'' दिनेश ने हैरान स्वर में पूछा.

''अरे, अगर आहूजा बुला रहा है तो चले जाओ, कोई काम होगा उसे.'' दिनेश की पत्नी ने उन की बातचीत के बीच में टोका.

''ठीक है आहूजा, मैं आ रहा हूं.'' दिनेश ने कहा और काल डिसकनेक्ट कर मोबाइल जेब में डालते हुए उठ कर खड़ा हो गया. खूंटी पर टंगी पैंट पहन कर वह पत्नी से बोला, ''तुम खाना खा लेना. मैं जल्दी लौट कर आता हूं.''

''ठीक है.'' आशा ने गरदन हिला कर कहा और पति के खाने की थाली उस ने अपने सामने सरका ली.

दिल्ली के मौडल टाउन में रहने वाला दिनेश रस्तोगी मुसकराता हुआ बाहर निकल गया. उस ने बाइक स्टार्ट की और पास के ही कैंप इलाके में रहने वाले राकेश आहूजा के घर की तरफ रवाना हो गया.

थोड़ी देर में वह आहूजा के घर में उस के सामने खड़ा था, ''तुम्हें इस वक्त मुझे बुलाने की क्या जरूरत आ पड़ी आहूजा ?''

'' बैठ जा...'' आहूजा ने उस के कंधे पर हाथ रख कर कहा. दिनेश कुरसी पर बैठ गया. आहूजा ने अपना मोबाइल उठा कर उस का वाट्सऐप खोल कर एक फोटो दिनेश को दिखाते हुए कहा, ''इस लड़की के साथ तेरा कब से चक्कर चल रहा है ?''

दिनेश फोटो देख कर चौंक गया. फोटो में एक खूबसूरत लड़की उस के साथ खड़ी नजर आ रही थी. दिनेश उस लड़की को पहचानता तक नहीं था. वह हैरान हो कर बोला, ''यह कौन है राकेश ?''

''लड़की तेरे साथ खड़ी है, पूछ मुझ से रहा है. बता कौन है यह और इस से तेरा कब से चक्कर चल रहा है ? क्या भाभी इस के बारे में जानती हैं ?'' दिनेश ने एक साथ 2-3 प्रश्न पूछ लिए.

''कसम लेले भाई, मैं तो इस लड़की से कभी मिला ही नहीं, मैं इसे जानता तक नहीं.'' दिनेश हैरानपरेशान स्वर में बोला.

''कमाल है दिनेश, लड़की के साथ तू खड़ा ही है और इंकार में सिर हिला रहा है.''

''ठहर,'' दिनेश हाथ उठा कर बोला, ''मेरे फोन पर किसी की काल आ रही है.''

दिनेश ने मोबाइल जेब से निकाला. बाहर निकालने पर उस की घंटी साफ सुनाई देने लगी. उस की स्क्रीन पर एक अंजाना नंबर था. दिनेश ने काल रिसीव की और बोला, ''हैलो! आप को किस से बात करनी है ?''

''तुम दिनेश बोल रहे हो न ?'' दूसरी ओर से पूछा गया.

''हां, मैं दिनेश ही हूं. आप ?''

''मिस्टर दिनेश,'' दूसरी ओर से खरखराता स्वर उभरा, ''मैं अनुमान लगा रहा हूं कि तुम इस वक्त अपने दोस्त राकेश आहूजा के पास खड़े हो.''

''हां, वहां ही हूं.. लेकिन आप हैं कौन ?'' दिनेश ने हैरानी से पूछा.



दिल्ली पुलिस की आईएफएसओ विंग द्वारा पकड़े गए लोन ऐप के जालसाज

''तुम ने राकेश आहूजा के फोन में लड़की के साथ अपनी फोटो भी देख ली होगी. अब सुनो, हम तुम्हारी बीवी आशा रस्तोगी के मोबाइल पर इसी लड़की के साथ तुम्हारी न्यूड फोटो भी भेज सकते हैं.''

डबल रकम देने को मजबूर हो गया दिनेश

दिनेश के माथे पर पसीना छलक आया. वह बुरी तरह से परेशान हो गया था. फोन करने वाले के खतरनाक मंसूबे ने उसे ऊपर से नीचे तक हिला दिया था. आहूजा ही नहीं वह उस की पत्नी तक को जानता था. दिनेश थूक गटकते हुए बोला, ''आखिर तुम मुझ से क्या चाहते हो.. ? और तुम हो कौन ?''

''तुम ने मेरी कैश एडवांस लोन ऐप कंपनी से 2 लाख रुपए का लोन लिया था, यह याद है न तुम्हें ?''

''ओह!'' दिनेश ने गहरी सांस भरी, ''तुम कैश एडवांस लोन ऐप से बोल रहे हो. भाईसाहब, मैं लोन की किस्तें समय पर अदा कर रहा हूं. फिर मुझे तुम किसलिए इस तरह की फोटो भेज रहे हो ?''

''तुम ने 2 लाख का लोन लिया है, मुझे उस की वापसी 4 लाख की चाहिए.''

''यह... यह तो गलत है भाई, मैं 2 लाख के ब्याज सहित ढाई लाख तो दे सकता हूं, 4 लाख क्यों दूंगा.''

''मत देना, मैं तुम्हारी पत्नी आशा रस्तोगी को तुम्हारी उस लड़की के साथ न्यूड फोटो भेज देता हूं, जिसे तुम ने अपने दोस्त राकेश आहूजा के फोन में देखा है.''

''नहीं...तुम ऐसा मत करना, मैं तुम्हें 4 लाख रुपए किस्तों में दे दूंगा.'' दिनेश जल्दी से बोला. वह बुरी तरह डर गया था.

''ये हुई न समझदारी की बात.'' दूसरी तरफ से हंस कर कहा गया, ''ध्यान रखना, चालाकी दिखाओगे तो तुम्हारी गृहस्थी उजड़ने में समय नहीं लगेगा.''

''मैं कोई चालाकी नहीं करूंगा,'' दिनेश ने कहा.

दूसरी तरफ से काल डिसकनेक्ट कर दी तो दिनेश यूं धम्म से कुरसी पर गिर पड़ा, जैसे उस में कोई जान शेष न बची हो. वह पसीने से तरबतर हो गया था.

राकेश आहूजा उस की हताशा और मजबूरी पर स्तब्ध खड़ा था. दिनेश को कैश एडवांस लोन ऐप वालों ने इस ढंग से फांसा था कि वह 2 के 4 लाख देने को विवश था. उसे अपने दोस्त पर तरस आ रहा था, जिस ने अपनी गृहस्थी उजड़ने के डर से कैश एडवांस लोन ऐप कंपनी की बात मान ली थी.

कैश एडवांस ऐप लोन कंपनी की ओर से केवल दिनेश रस्तोगी को ही 2 की जगह 4 लाख में हलाल किया गया हो, ऐसा नहीं था. यह तुरंत कैश लोन उपलब्ध करवाने वाली कंपनी दिल्ली ही नहीं अन्य शहरों में भी उन से लोन लेने वाले लोगों को विभिन्न तरीकों से ब्लैकमेलिंग कर के लाखों की वसूली कर रही थी.

इस कंपनी द्वारा एक परिवार पश्चिम बंगाल में भी ठगा गया. उत्तम घोष प्रतिष्ठित और संपन्न व्यक्ति थे. पश्चिम बंगाल के जिला जलपाईगुड़ी के पौश इलाके में रहते थे. परिवार में पत्नी के अलावा एक ही बेटा था जय घोष. महत्त्वाकांक्षी और कुछ कर गुजरने की ललक रखने वाला 24 साल का बांका नौजवान.

पिता का मछली का बिजनैस था. वह चाहते थे कि जय घोष भी उन के बिजनैस में हाथ बंटाए, लेकिन जय घोष को पिता के इस मछली वाले बिजनैस में कोई दिलचस्पी नहीं थी. उस का झुकाव शुरू से कला और डेकोरेशन की ओर रहा था. वह इसी क्षेत्र में उतरना चाहता था.

उस ने इस के लिए अपने पिता से रुपए मांगे तो उन्होंने प्यार से समझाते हुए कहा, ''जय, तुम बेकार के काम में उलझ कर रुपयों की बरबादी करना चाहते हो. मैं ने बहुत मेहनत से रुपया इकट्ठा किया है. मैं चाहता हूं तुम मेरा मछली वाला बिजनैस ही संभालो.''

''नहीं पापा, मैं मछली का बिजनैस नहीं करूंगा. मुझे मछलियों से बास आती है, मैं कलाकृतियों का म्यूजियम खोलना चाहता हूं.''

''मुझे उस में दिलचस्पी नहीं है, मैं उस के लिए तुम्हें रुपया नहीं दूंगा.''

उत्तम घोष ने स्पष्ट मना किया तो जय पांव पटकता हुआ गुस्से में उन के कमरे से बाहर आ गया.

जय घोष एक लड़की से प्यार करता था. उस का नाम उर्वशी था. वह एक कला एंपोरियम में काम करती थी. सांवली रंगत वाली उर्वशी के नाकनक्श सांचे में ढले थे. वह बेहद खूबसूरत थी.

उर्वशी के पिता नहीं थे. अपना और मां का खर्च चलाने के लिए उर्वशी काम करती थी. वह गरीब थी, लेकिन दिल की अमीर थी. जय घोष एक नटराज की मूर्ति लेने के लिए कला म्यूजियम में गया था, तब उस की मुलाकात उर्वशी से हुई थी. उर्वशी ने ही उसे अटैंड किया था.

उस की मीठीमीठी बातों ने और मोहक मुस्कान ने जय घोष को इतना प्रभावित किया था कि वह उर्वशी को अपने दिल में बसा कर वापस घर लौटा था. इस के बाद वह अकसर उर्वशी की एक झलक पाने के लिए उस की दुकान में जाने लगा था.

उर्वशी भांप गई थी कि जय घोष उसे प्यार करने लगा है. उसे भी जय अच्छा लगने लगा था. वह भी अपना दिल हार गई थी. अब दोनों की मुलाकातें उस दुकान से बाहर भी होने लगी थीं. वे दोनों एकदूसरे को प्यार करने लगे थे.

उर्वशी ने ही जय को सुझाव दिया था कि वह कलाकृतियों का म्यूजियम खोले. जय ऐसा ही चाहता था, इस के लिए उस ने अपने पिता से रुपए मांगे थे. पिता ने उसे रुपया देने से स्पष्ट इंकार कर दिया था. जय घोष परेशान था. उस ने उर्वशी को अपनी समस्या बताई थी, तब उर्वशी ने सुझाव दिया था कि वह किसी बैंक या निजी कंपनी से लोन ले कर अपना काम शुरू कर सकता है.

जय घोष ने झटपट लोन देने वाली कैश एडवांस लोन ऐप कंपनी से 5 लाख रुपए लोन ले लिया था और अपना ब्रास की मूर्तियों का शानदार एंपोरियम खोल लिया था. उर्वशी अब उसी की दुकान पर काम करने लगी थी. एक दिन पार्क में मुलाकात के दौरान जय घोष ने उर्वशी का हाथ पकड़ कर यह वादा किया कि वह बहुत जल्द उस से शादी कर लेगा. तब वह इस दुकान की नौकरीपेशा वर्कर नहीं, मालकिन बनेगी.

लेकिन ऐसा कुछ होने से पहले ही एक ऐसी घटना घटी, जिस ने जय घोष को नीचे से ऊपर तक हिला कर रख दिया.

मंगेतर के न्यूड फोटो देख चौंका जय

उस दिन जय घोष सुबह जब एंपोरियम पहुंचा और उस ने ताला खोल कर शटर उठाया तो उसे फर्श पर एक बड़ा लिफाफा दिखाई दिया. शायद वह शटर के नीचे से सरकाया गया था. जय घोष ने सोचा कोई डाकिया उस की डाक को एंपोरियम बंद होने के बाद नीचे से अंदर डाल गया होगा. जय घोष ने उस लिफाफे को उठा कर उलटपलट कर देखा. जय को हैरानी हुई. उस लिफाफे पर न भेजने वाले का नाम था न पाने वाले का.

लिफाफे का मुंह खुला हुआ था. जय घोष ने लिफाफे में हाथ डाला तो उस में ए-4 साइज के फोटोग्राफ नजर आए, जिन्हें बाहर खींचते ही जय घोष यूं उछला जैसे उसे बिच्छू ने डंक


गैंग का सरगना 24 वर्षीय नितिन कुमार

मार दिया हो. वह उर्वशी के किसी अंतरंग क्षणों के न्यूड फोटो थे. उर्वशी के जिस्म पर वस्त्र की एक चिंदी भी नहीं थी. उस के साथ का युवक भी मादरजात नंगा था.

उर्वशी जो उस के दिल की मल्लिका थी, जिसे वह दिल की गहराई से प्यार करता था, उस की इन अश्लील फोटोग्राफ्स ने जय घोष की खोपड़ी घुमा दी.

उर्वशी इतनी बेहया, निर्लज्ज भी हो सकती है, यह वह कल्पना भी नहीं कर सकता था, लेकिन सच्चाई मुंह से बोल रही थी. इसे वह क्या कोई भी झुठला नहीं सकता था.

जय घोष का दिल टूट गया. वह पसीने से तरबतर हो गया. उस के ख्वाब बिखर गए थे. उर्वशी के साथ विवाह करने का सपना चूरचूर हो गया था.

जय को गश आ जाता. उस ने जल्दी से शोकेस का सहारा लिया और कुरसी पर बैठ गया. उस ने आंखें बंद कर लीं. काफी देर तक

वह उसी तरह बैठा रहा. अब उस ने अपने आप को संभाला, तब साढ़े 10 बज रहे थे.

उसे हैरानी हुई, उर्वशी अभी तक शौप पर नहीं आई थी. वह और दिन 10 बजे तक आ जाया करती थी.

जय घोष ने जल्दीजल्दी वह फोटोग्राफ्स लिफाफे में डाले और लिफाफा अपनी सीट के पास वाली अलमारी में रख दिया. उर्वशी का एक घिनौना रूप उस के सामने आ चुका था. वह अब उर्वशी को एक पल के लिए भी बरदाश्त नहीं करना चाहता था. वह उर्वशी के आने का रास्ता देखने लगा. उर्वशी उस रोज 11 बजे आई. उस के शरीर पर गहरे लाल रंग की साड़ी और ब्लाउज था. उस ने बालों का जूड़ा बनाया हुआ था. उस में गुलाब का फूल खोंसा हुआ था. उस दिन वह और दिनों की अपेक्षा बहुत हसीन लग रही थी.

उसे देख कर जय घोष खुश नहीं हुआ. वह सिर झुका कर अपने मोबाइल को देखता रहा.

''गुड मार्निंग जय!'' उर्वशी ने मुसकरा कर कहा तो जय ने कोई उत्तर नहीं दिया.

उर्वशी समझी कि जय उस के लेट आने से नाराज है. उस ने पास जा कर बड़ी संजीदगी से कहा, ''सौरी जय, मां की तबीयत खराब हो गई थी, मैं उन्हें दवा दिलवा कर आई हूं, इसी से लेट हो गई.''

''भाड़ में जाओ तुम और भाड़ में जाए तुम्हारी मां, तुम इसी वक्त यहां से दफा हो जाओ.'' वह गुस्से से दहाड़ा.

उर्वशी कांप गई. जय ने आज इतने क्रोध से उसे डांटा था, क्यों वह समझ नहीं पाई. वह हैरानी से जय को देखने लगी.

''सुना नहीं तुम ने...मैं कह रहा हूं तुम अभी इसी वक्त मेरी आंखों के सामने से चली जाओ.'' जय फिर दहाड़ा.

''क्या हो गया जय. आज तुम मुझ से यह कैसा बरताव कर रहे हो?''

''यह फूल तुम्हारे उसी यार ने तुम्हारे जूड़े में खोंसा है न, जिस के साथ तुम बंद कमरे में लिपटतीचिपकती हो.'' जय ने जहर उगला.

''जयऽऽ'' उर्वशी चीख पड़ी, ''तुम मेरी जान ले लो, लेकिन मुझ पर ऐसे गंदे आरोप मत लगाओ. मैं सिर्फ तुम्हें और तुम्हें ही प्यार करती हूं, किसी और के बारे में सोचना भी मत.''




आरोपी गोकुल बिस्वास, अशोक

''यह सतीसावित्री होने का ढोंग मेरे सामने मत करो उर्वशी, तुम्हारी असलियत मेरे सामने आ गई है. तुम बेहया, निर्लज्ज और कुलटा हो. अच्छा यही है, तुम मेरी आंखों के आगे से दफा हो जाओ.'' जय जहरीले स्वर में बोला.

उर्वशी की आंखें भर आईं. वह जय के पास आ कर उस के हाथ पकड़ कर अपनी गरदन पर रखते हुए रो पड़ी, ''लो घोंट दो अपनी उर्वशी का गला, लेकिन उसे इतनी गंदी गाली मत दो जय.''

जय ने उसे धक्का दे कर दूर धकेला और उठ कर अलमारी से वह लिफाफा निकाल लिया जो उसे सुबह फर्श पर मिला था. जय ने सारे फोटो निकाल कर शोकेस पर रखते हुए विष बुझे स्वर में कहा, ''यह देखो, तुम्हारी बेहयाई का सबूत...''

फोटो देख कर अचंभे से फैल गईं उर्वशी की आंखें

फोटोज पर नजर पड़ते ही उर्वशी की आंखें अचंभे से फैल गईं. वह हैरानी से उन फोटो को देखने लगी. फोटो में एक पराए पुरुष के साथ वह निर्वस्त्र मौजूद थी. थोड़ी देर वह ठगी सी खड़ी रही फिर बोली, ''यह सब झूठे फोटो हैं जय, मैं ऐसा करने से पहले मर जाना पसंद करूंगी.''

''इसे झुठला रही हो तुम, यह तो तुम्हारी निर्लज्जता का प्रमाण है उर्वशी. तुम्हें इस युवक के साथ मुंह काला करना था तो मेरे साथ प्यार का खेल क्यों खेला? मुझे किसलिए अपने प्रेमजाल में फांसा?''

उर्वशी की नजरें अभी भी उन फोटो पर थीं. एकाएक वह चौंकी. उस ने एक फोटो को उठा कर बहुत ध्यान से देखा. उस की आंखों में तीखी चमक उभर आई.

''ओह तो यह ट्रिकबाजी है,'' उर्वशी बड़बड़ाई फिर उस ने जय की कलाई पकड़ ली और उसे केबिन की तरफ घसीटते हुए बोली, ''मेरे साथ चलो जय, मैं तुम्हें कुछ दिखाना चाहती हूं.''

न चाहते हुए भी जय उस के साथ उस एंपोरियम के कोने में आराम करने के मकसद से बने केबिन में आ गया. उर्वशी ने केबिन बंद कर लिया और लाइट जला दी.

मरकरी ट्यूबलाइट्स की दुधिया रोशनी से केबिन जगमगा उठा.

''जय, मैं तुम्हें सच्चा प्यार करती हूं. मैं तुम्हारी नजरों में कुलटा, निर्लज्ज, बेहया नहीं बनना चाहती, इसलिए शादी से पहले मैं अपना यह पाक जिस्म तुम्हारे सामने बेपरदा कर रही हूं.'' कहते हुए उर्वशी ने अपने ब्लाउज के हुक खोल कर ब्लाउज को तन से जुदा कर दिया. फिर उसने अपनी गुलाबी रंग की ब्रा की बाईं स्ट्रिप बाएं कंधे से नीचे उतार कर अपना बायां वक्ष स्पष्ट नुमाया कर दिया.

''अच्छी तरह देख लो जय, मेरे इस वक्ष





मुस्तजाद गुलाम मोहम्मद नबीवाला, बलवंत और अनीश भाई अशरफ भाई विंची

पर काले रंग का छोटा सा मस्सा है. यह मैं तुम्हें इसलिए दिखाने केबिन में लाई हूं कि दूध का दूध और पानी का पानी हो जाए.''

जय ठगा सा उर्वशी का उघड़ा हुआ जिस्म देख रहा था. उर्वशी ने जब ब्रा यथास्थान कर ब्लाउज पहन लिया तो जय की तंद्रा टूटी.

''तुम ने यह मस्सा किस मकसद से मुझे दिखाया है उर्वशी ?'' उस ने हैरानी से पूछा.

उर्वशी उसे केबिन से वापस काउंटर के पास ले आई. उस ने एक फोटो उठा कर जय की तरफ बढ़ाते हुए कहा, ''इस में जो लड़की की नग्न देह है, वह मेरी नहीं है सिर्फ मेरी गरदन से ऊपर का हिस्सा मेरा है. लड़की की नग्न धड़ के बाएं वक्ष पर वह मस्सा नहीं है, जो मेरे वक्ष पर है. गौर से देख लो, यह ट्रिक फोटो की कारीगरी है. कंप्यूटर द्वारा इसे तैयार किया गया है.''

जय ने ध्यान से देखा तो उर्वशी की बात में सच्चाई नजर आई. उस ने सिर झुका कर रुआंसे स्वर में कहा, ''ओह! उर्वशी, मैं क्या कोई भी इन फोटो को देख कर धोखा खा जाएगा. मैं क्षमा चाहता हूं, मैं ने तुम्हें कितना गलत बोला. तुम पर निर्लज्जता का आरोप मढ़ा.''

''कोई बात नहीं,'' उर्वशी ने राहत की सांस ले कर कहा.

जय ने सभी फोटो लिफाफे में डाले फिर उन्हें अलमारी में रख कर बोला, ''मेरी समझ में नहीं आ रहा कि ये फोटो किस ने और किस मकसद से यहां भेजे हैं. वह यह सब दिखा कर के मुझ से क्या हासिल करना चाहता है ?''

''वह शाम तक मालूम हो जाएगा, जिस ने ये फोटो भेजे हैं, वह तुम्हें शाम तक फोन जरूर करेगा.'' उर्वशी ने कहा और अपने काउंटर पर आ गई.

जय घोष ने करा दी एफआईआर

दोपहर में ही जय घोष के मोबाइल पर एक फोन आ गया. जय ने रिसीव किया तो मालूम हुआ फोन कैश एडवांस लोन ऐप कंपनी से किसी व्यक्ति ने किया था.

''हैलो मिस्टर जय घोष. तुम ने अपनी मंगेतर उर्फ प्रेमिका उर्वशी की फोटोज तो अब तक देख लिए होंगे.''

''ओह यू!'' जय गुस्से से चीखा, ''तो यह तुम लोगों की बदमाशी है. तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मुझे ऐसी अश्लील फोटो भेजने की ?''

''हमारा काम यही है जय भाई,'' दूसरी तरफ वाला व्यक्ति बेहयाई से हंसा.

''अब ध्यान से सुनो, हमारी कैश एडवांस लोन ऐप कंपनी से तुम ने 5 लाख रुपए का जो लोन लिया है, मुझे बदले में 10 लाख रुपए चाहिए.''

''मुझे क्या पागल समझते हो तुम, मैं ने 5 लाख लिया है, वह मैं तुम्हें जायज ब्याज सहित लौटा दूंगा.''

''तुम 10 लाख ही दोगे जय घोष बाबू, नहीं दोगे तो तुम्हारी मंगेतर को मैं सोशल मीडिया पर बदनाम कर दूंगा. जो फोटो तुम्हें भेजी गई हैं, वह तुम्हारे मांबाप और दूसरे रिश्तेदारों को भी भेज दूंगा. तुम्हारा उर्वशी से शादी करने का ख्वाब बिखर जाएगा.''

''भेज दो.'' जय चिढ़ कर बोला, ''यह सब कंप्यूटर से किए हैं. मैं इस से नहीं डरता.''

''ओह! तो तुम्हें मालूम हो गया यह कंप्यूटर से तैयार किए गए फोटो हैं.'' दूसरी ओर वाला व्यक्ति चौंक कर बोला.

कुछ क्षणों तक दूसरी ओर खामोशी रही फिर गंभीर स्वर उभरा, ''जय, तुम किसकिस को बताओगे कि यह कंप्यूटर का खेल है. तुम्हारी प्रेमिका बदनाम हो कर आत्महत्या कर लेगी, फिर क्या करोगे.''

जय घोष ने गहरी सांस ली, ''ठीक है भाई, मैं तुम्हें 10 लाख ही दूंगा, लेकिन वादा करो कि यह फोटोग्राफ तुम दूसरी जगह शो नहीं करोगे.''

''मुझे रुपयों से मोह है जय बाबू. तुम मान गए हो इसलिए फोटो मैं जला दूंगा. तुम मुकरोगे तो मुझे सोचना पड़ेगा.'' कहने के बाद दूसरी तरफ से काल डिसकनेक्ट कर दी. जय घोष सिर पकड़ कर कुरसी में फंस गया. उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह 10 लाख रुपए कैसे लौटाएगा.

मोबाइल ऐप पर चलाई जा रही कैश एडवांस लोन कंपनी ने दिल्ली और पश्चिम बंगाल में ही लोगों को ठगा हो, ऐसा नहीं था. इस कंपनी ने अपना जाल पूरे देश में फैला रखा था. कंपनी ने कोलकाता, सूरत, केरल, में भी अपने शिकार फांसे थे.

ठगे गए पश्चिम बंगाल में जलपाईगुड़ी के जय घोष ने अपनी प्रेमिका उर्वशी के कहने

पर हिम्मत बटोर कर जलपाईगुड़ी पुलिस थाना सैंट्रल कालोनी, गेट बाजार पहुंच कर एसएचओ को पूरी घटना से अवगत कराया और खुद को प्रेमिका उर्वशी की न्यूड फोटो भेज कर 5 लाख के लोन के बदले 10 लाख मांगने के लिए ब्लैकमेलिंग करने वाली कैश एडवांस लोन ऐप कंपनी के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज करवा दी.

कोलकाता के एक व्यक्ति ने भी खुद को लोन एवं कंपनी द्वारा ठगे जाने की कंप्लेंट लिखवाई. दिल्ली के मौडल टाउन में रहने वाला दिनेश रस्तोगी अपने दोस्त जयगोपाल के साथ अपनी फरियाद ले कर थाना मौडल टाउन पहुंच गया.

ड्यूटी पर उस वक्त एसएचओ ललित कुमार मौजूद थे. उन के पास एसआई गिरीश भी बैठे हुए किसी लूट के मामले की चर्चा कर रहे थे.

दिनेश और जयगोपाल को सामने बैठा कर एसएचओ ललित कुमार ने गंभीरता से पूछा, ''आप दोनों बेहद परेशान लग रहे हैं, क्या बात है, मुझे बताइए.''

''साहब, मेरा नाम दिनेश रस्तोगी है. मैं मौडल टाउन में ही रहता हूं. मैं ने अपने मकान की मरम्मत के लिए कैश एडवांस लोन ऐप कंपनी से 2 लाख का लोन लिया था. यह कंपनी बहुत सस्ते ब्याज पर तुरंत लोन उपलब्ध करवा देती है. रुपया लेने के कुछ ही दिनों बाद मेरे दोस्त राकेश आहूजा, जो कैंप में रहता है, के पास इस कंपनी ने मेरे किसी अंजान लड़की के साथ न्यूड फोटो वाट्सऐप पर भेजे.

डीसीपी प्रशांत गौतम ने दोनों पीड़ितों की बात गौर से सुनी और उन की तहरीर ले कर उन्होंने एसीपी जयप्रकाश के नेतृत्व में एक टीम गठित कर कैश एडवांस लोन ऐप कंपनी के खिलाफ जांच करने के निर्देश दिए. इस टीम में एसआई सोनम जोशी, करमवीर, हरजीत, एएसआई नीरज पांडेय, सुरेंद्र राठी, हैडकांस्टेबल धर्मेंद्र, मोहित, राजेश, प्रदीप और कांस्टेबल राकेश दर्शन तथा दीपक को शामिल किया गया.

अब वह कंपनी इन फोटो के बदले 4 लाख रुपए जमा करने को कह रही है.

''ओह!'' एसएचओ ललित कुमार ने गहरी सांस ली, ''यह तो सरासर ब्लैकमेलिंग हुई.''

''मेरे साथ भी ऐसा ही घटा है साहब.'' पास बैठा जयगोपाल बोला, ''मुझे भी अश्लील फोटो दिखा कर ब्लैकमेल किया जा रहा है. मुझ से 5 लाख की जगह 10 लाख रुपए मांग रहे हैं.''

''यानी यह कंपनी जरूरतमंदों को लोन देने के बाद ब्लैकमेल कर के दोगुनातिगुना वसूल रही है सर.'' एसआई गिरीश कुमार बोले, ''यह कंपनी ऐसा इन के साथ ही नहीं, अन्य लोगों के साथ दिल्ली और आसपास के राज्यों में भी कर रही होगी.''

''ठीक कह रहे हैं आप, इस की तह में जाने के लिए इस की जांच क्राइम ब्रांच से करवानी अनिवार्य है,'' एसएचओ ने कहा, ''मैं डीसीपी प्रशांत पी. गौतमजी से बात करता हूं.''

दिनेश की शिकायत पर क्राइम ब्रांच ने शुरू की जांच

एसएचओ ललित कुमार ने इंटैलिजेंस फ्यूजन एंड स्ट्रैटेजिक औपरेशन (आईएफएसओ) के डीसीपी प्रशांत पी. गौतम को कैश एडवांस लोन ऐप कंपनी द्वारा जरूरतमंदों को लोन मुहैया करवा कर उन्हें ब्लैकमेल करने की बात बताई और दिनेश व जयगोपाल को द्वारका में स्थित उन के औफिस भेज दिया.

डीसीपी प्रशांत गौतम ने दोनों पीड़ितों की बात गौर से सुनी और उन की तहरीर ले कर उन्होंने एसीपी जयप्रकाश के नेतृत्व में एक टीम गठित कर कैश एडवांस लोन ऐप कंपनी के खिलाफ जांच करने के निर्देश दिए.

इस टीम में एसआई सोनम जोशी, करमवीर, हरजीत, एएसआई नीरज पांडेय, सुरेंद्र राठी, हैडकांस्टेबल धर्मेंद्र, मोहित, राजेश, प्रदीप और कांस्टेबल राकेश दर्शन तथा दीपक को शामिल किया गया.

इस टीम ने राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल (एनसीआरपी) पर इस कंपनी की खोज की तो मालूम हुआ इस कंपनी के



डीसीपी
प्रशांत पी.
गौतम

खिलाफ दिल्ली में 102 और देश भर में 1,977 लोगों ने ठगे जाने की शिकायत दर्ज करवाई है.

यह संख्या कम नहीं थी. अनुमान लगाया गया कि अब तक इस कंपनी ने करोड़ों रुपए लोगों की लोगों की जेबों से झटक लिए हैं.

इस के बाद आईएफएसओ की पूरी टीम इन ठगों के गरेबान तक हाथ डालने के इरादे से पूरी मेहनत से जुट गई. उन्होंने उन बैंक खातों की जांच की, जहां लोन चुकाने वाले किस्तें जमा करवाते थे, उन के स्वामित्व के विवरण एकत्र किए गए. पता चला ये खाते दिल्ली, सूरत केरल और कोलकाता के हैं.

पुलिस टीम गहता से जांच में जुटी थी. बाद में टीम आरोपियों तक पहुंचने में सफल हो गई और टीम ने अलगअलग शहरों में दबिश दे कर 6 लोगों को गिरफ्तार कर लिया.

यह 6 लोग थे मुस्तजाब गुलाम मोहम्मद नवीवाला (सूरत), अनीश भाई अशरफ विंची (सूरत), गोकुल बिस्वास (नादिया पश्चिम बंगाल), अशोक (सुलतानपुरी, दिल्ली), बलवंत (सुलतानपुरी, दिल्ली) और नितिन कुमार (महिपालपुर, दिल्ली).

गैंग का सरगना निकला दिल्ली का नितिन

इन से की गई पूछताछ में पता चला कि इन का सरगना दिल्ली का नितिन कुमार था. 24 वर्षीय नितिन के परिवार में मम्मीपापा और 2 बहनें हैं. नितिन ने बीएससी पास की, अब वह एमबीए की पढ़ाई कर रहा है. इस ने 12वीं क्लास के बाद एसबीआई क्रेडिट कार्ड सेल्स में काम किया था.

साल 2018 से 2020 तक अलगअलग बैंकों में सेल्स, पर्सनल लोन डिपार्टमेंट में



एसीपी
जयप्रकाश



एसआई
सोनम जोशी

नौकरी की. 2020 के बाद इस ने स्काइलेन इनोवेशन टैक्नोलौजी प्रा. लिमिटेड कंपनी जौइन की. यह एक चाइनीज लोन ऐप कंपनी थी. इस के मालिक अल्बर्ट और डेन नाम के चाइनीज थे. यहां से इसे लोन ऐप का काम समझ में आया.

इस ने 2021 में नोएडा में पे-मी इंडिया नाम की ऐप कंपनी में जौब की और फिर यह जौब छोड़ कर दिसंबर 2021 में इस ने ऐप के माध्यम से लोन देने का खुद का काम शुरू कर दिया. इस ने बहुत शातिर ढंग से लोन लेने वाले लोगों का मोबाइल डाटा चुरा कर, उस में मौजूद कौन्टैक्ट नंबर और गैलरी में मौजूद फोटो द्वारा ब्लैकमेलिंग कर के 2 लाख की जगह 4 लाख रुपए वसूलने शुरू किए.

अभी तक मिली जानकारी के आधार पर नितिन कुमार ने देश भर में लोगों से लोन एवं ठगी से 350 करोड़ रुपए वसूल किए थे.

पकड़े गए मुस्तजाब गुलाम मोहम्मद नवीवाला 32 साल का है. इस के परिवार में अम्मीअब्बू के अलावा पत्नी और बेटी है. यह 9वीं क्लास तक पढ़ा है. इस ने डिलीवरी का काम शुरू किया. अब टेक्सटाइल फील्ड में काम करता है. 2021 में जब कोविड के कारण लौकडाउन लगा तो काम मंदा पड़ गया. पैसे की तंगी आने पर एक व्यक्ति महमूद भगद और उस के भाई रेहान भगद के कहने पर आर.आर. इंटरप्राइज नाम की प्रोपराइटरशिप रजिस्टर करवाई और उस का एडीएफसी बैंक में अकाउंट खुलवाया और उसे महमूद को इस्तेमाल करने को दे दिया. बदले में महमूद ने उसे एक लाख रुपया दिया, जो इस ने बहन की शादी में लगा दिया.

बाद में जरूरत पड़ने पर महमूद 10-15 हजार रुपए इसे देता रहता था. अकाउंट के सभी कागजात, पासबुक, डेबिट कार्ड रेहान और महमूद को दे दिए थे, जिन का इस्तेमाल वही कर रहे थे.

36 वर्षीय अशोक के परिवार में मां, भाई, भाभी उन के 3 बच्चे, खुद की पत्नी और 2 बच्चे हैं. यह 8वीं क्लास तक पढ़ा है. इस ने ड्राइविंग सीखी और टैंपो चलाने लगा. फिर भाई बलवंत के साथ मिल कर प्रीवकामरवाक प्राइवेट लिमिटेड कंपनी खोली, उस का आईसीआईसीआई बैंक में खाता खुलवाया, जिसे बाद में गुरुचरण सिंह को इस्तेमाल करने को दे दिया.

इस के बदले में उस ने इसे एक लाख रुपए दिए जो इस ने घर खर्च में इस्तेमाल कर लिए. गुरुचरण नितिन की ही गैंग का है, जो फरार है.

अनीश भाई अशरफ विंची की उम्र 51 साल है. इस के परिवार में बीवी और 2 बच्चे हैं. यह प्राइवेट गाड़ी चलाता है.

2021 में कोविड के कारण काम बंद हो गया, पैसे की तंगी के कारण यह परेशान हो गया. तब महमूद भाई और रेहान ने एचडीएफ सी बैंक में उस का अकाउंट उसी के नाम पर खुलवाया, जिसे महमूद भाई इस्तेमाल करता था. महमूद भाई ने इस के बेटे की बीमारी का पूरा खर्चा दिया था.

ऐसा ही नदिया के रहने वाले गोकुल बिश्वास की कहानी है. उस का अकाउंट खुलवा कर महमूद भाई इस्तेमाल कर रहा था. यह महमूद और रेहान नितिन के ही लिए काम करते थे.

इन पकड़े गए आरोपियों के अकाउंट खुलवाने का मकसद लोन ऐप से लोगों को जो रुपया दिया जाता था, उस की वापसी इन्हीं अकाउंट में करवाई जाती थी. आईएफएसओ की टीम ने इन पकड़े गए अभियुक्तों के बैंक खातों में जमा 60 लाख रुपए फ्रीज करवा दिए. इन के पास से 7 मोबाइल फोन, एक लैपटाप, 15 डेबिट कार्ड बरामद किए गए.

क्राइम ब्रांच ने इन्हें कोर्ट में पेश कर जेल भेज दिया. कथा लिखने तक गुरुचरण, महमूद भाई और रेहान फरार थे, उन की तलाश की जा रही थी. ●

भोपाल, मध्य प्रदेश



रोमानियन ठग
आयोनियल मिउ

“दुआ में याद रखना”



छायांकन: मॉडलिंग

रोमानिया का जालसाज एटीएम क्लोनिंग से अकाउंट साफ

❑ वेणीशंकर पटेल ‘ब्रज’

रोमानिया का आयोनियल मिउ जालसाजी करने के मकसद से ही भारत आया था. उस ने अपने शातिर दिमाग से बैंक औफ बड़ौदा के अनेक खाताधारकों के अकाउंट से लाखों रुपए उड़ा दिए. ऐसी क्या वजह थी कि वह केवल बैंक औफ बड़ौदा के खाताधारकों को ही अपना निशाना बनाता था?



“दुआ में याद रखना”

डिजिटल तकनीक के इस युग में बैंक अकाउंट में सेंध लगाने वाले जालसाज भी नईनई तरकीबें अपना रहे हैं. इन जालसाजों का नेटवर्क भारत में ही नहीं विदेशों में भी फैला हुआ है. रोमानिया के एक जालसाज ने भोपाल और इंदौर के ग्राहकों के बैंक अकाउंट से दिल्ली के एटीएम बूथों से लाखों रुपए उड़ा दिए. भोपाल क्राइम ब्रांच की टीम ने एक महीने तक दिल्ली शहर में रुक कर इन जालसाजों को आखिर कैसे खोज निकाला ?

भोपाल के रहने वाले सैयद फारुख अली ने बैंक औफ बड़ौदा की ब्रांच में लगी पासबुक प्रिंटिंग मशीन में अपनी पासबुक डाली तो कुछ ही देर में उन की पासबुक प्रिंट हो कर बाहर निकल आई. बैंक से बाहर निकल कर उन्होंने पासबुक चैक की तो एक एंट्री देख कर वह चौंक पड़े.

इसी साल जुलाई की 9 तारीख को उन के बैंक खाता नंबर 3537010000**XXXX** से 75 हजार रुपए की रकम की निकासी एटीएम कार्ड के जरिए होनी दिखाई गई थी. सैयद फारुख अली को आश्चर्य इस बात पर हो रहा था कि उन्होंने यह रकम निकाली ही नहीं थी. वह हैरान थे कि यदि किसी और ने यह रकम निकाली है तो उन के मोबाइल पर ओटीपी क्यों नहीं आया. फारुख अली ने फिर से बैंक काउंटर पर जा कर इस की शिकायत की तो बैंक क्लर्क ने उन्हें डपटते हुए कहा, ''आप ने एटीएम कार्ड से रुपए निकाले हैं, इस में बैंक क्या कर सकता है.''

सैयद फारुख अली मुंह लटकाए अपने घर आ गए. वह प्रौपर्टी के कारोबार से जुड़े हुए हैं. मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल की बीडीए कालोनी कोहेफिजा में रहने वाले 38 वर्षीय सैयद फारुख अली जानना चाहते थे कि उन के खाते से ये पैसे किस ने निकाले हैं. लिहाजा 10 जुलाई, 2023 को वह साइबर क्राइम ब्रांच में एक शिकायत ले कर पहुंच ही गए.

थोड़ी देर इंतजार कर वह साइबर क्राइम ब्रांच के डीसीपी श्रुतकीर्ति सोमवंशी के पास पहुंचे तो अरजी ले कर उन के सामने हाजिर फरियादी को देखते ही डीसीपी बोले, ''कहिए, क्या समस्या है ?''

फारुख अली ने कागज पर लिखी अरजी उन की टेबल पर रखते हुए कहा, ''साहब, मेरे बैंक खाते से 75 हजार रुपए किसी जालसाज ने निकाल लिए हैं, जबकि मैं ने ऐसा कोई ट्रांजैक्शन नहीं किया है.''

''कौन से बैंक में है आप का अकाउंट ?''

''जी सर, बैंक औफ बड़ौदा में मेरा अकाउंट है.'' फारुख अली ने बताया.

''किसी को ओटीपी तो नहीं बताया, मोबाइल पर किसी लिंक पर क्लिक तो नहीं किया ?'' डीसीपी सोमवंशी ने फारुख से पूछा.

''नहीं सर, न तो कोई ओटीपी आया और

न ही किसी लिंक पर मेरे द्वारा क्लिक किया गया है,'' फारुख हाथ जोड़ कर बोले.

डीसीपी सोमवंशी ने सैय्यद फारुख की अरजी को ले कर उन्हें भरोसा दिलाया कि जल्द ही साइबर पुलिस जांच कर के जालसाज तक पहुंचेगी और उन के अकाउंट से फरजी तरीके से निकाली गई रकम उन्हें वापस दिलाई जाएगी.

डीसीपी सोमवंशी के निर्देश पर फारुख अली की तरफ से अज्ञात व्यक्ति के खिलाफ आईपीसी की धारा 419, 420 के तहत मामला दर्ज किया कर लिया गया.

इस शिकायत के अगले दिन अशोका गार्डन, भोपाल के विनोद सहदेव और सतीश बजरंगी ने भी अपने बैंक अकाउंट से रुपए निकाले जाने की शिकायत थाने में दर्ज कराई.

फारुख अली की शिकायत के बाद 5 दिन के भीतर ही भोपाल के अलगअलग पुलिस थानों में 53 लोगों ने अपने साथ हुए इसी तरह के फ्रौड की शिकायतें दर्ज कराईं.

इसी तरह इंदौर के विभिन्न थानों में अनेक शिकायतें दर्ज हुईं. ताज्जुब की बात यह थी कि ये सारे फ्रौड बैंक औफ बड़ौदा के ग्राहकों के साथ ही हुए थे.

2023 के जुलाई महीने में हुए इस फ्रौड को पुलिस और बैंक अधिकारी भी नहीं समझ पा रहे थे. शिकायतकर्ताओं का कहना था कि न उन के पास कोई ओटीपी आया, न कोई काल आई, न ही कोई लिंक आया, न ही कहीं एटीएम में कार्ड यूज किया, न ही फोन पर उन्होंने कोई ऐप डाउनलोड किया, इस के बावजूद उन के अकाउंट से लाखों रुपए निकाल लिए गए.

> जालसाजों ने भोपाल में इस तरह से बैंक औफ बड़ौदा के 75 खाताधारकों के एटीएम की स्कीमिंग कर दिल्ली के 9 एटीएम बूथों से करीब 16-17 लाख रुपए निकाले. जालसाज लगातार रोमानिया के कई लोगों से संपर्क में था. उस ने एटीएम कार्ड बनाने की विधि औनलाइन सीखी. वह पहले रोमानिया और यूरोपीय देशों में सक्रिय साइबर फ्रौड करने वाले गिरोह के साथ काम करता था.

पुलिस टीम ने दिल्ली में डेरा डाल आरोपियों को खोज निकाला

मामले की गंभीरता को देखते हुए भोपाल के पुलिस कमिश्नर हरिनारायण चारी मिश्रा के निर्देश पर एक पुलिस टीम बनाई. एसआई रमन शर्मा के नेतृत्व में टीम दिल्ली पहुंची. टीम में हैडकांस्टेबल, आदित्य साहू, कांस्टेबल तेजराम सेन, प्रताप सिंह, सुनील कुमार को शामिल किया गया था. जांच में पुलिस टीम को यह जानकारी मिली कि ज्यादातर पैसे दिल्ली में स्थित एटीएम कियोस्क से निकले हैं, इसलिए टीम दिल्ली पहुंच गई.

टीम को पता चला कि जालसाजों ने दिल्ली के अलगअलग क्षेत्रों में स्थित 9 एटीएम कियोस्कों से पैसे निकाले थे, इसलिए टीम ने सब से पहले उन 9 एटीएम कियोस्कों के सीसीटीवी कैमरे खंगाले, जहां से जालसाजों द्वारा पैसे निकाले गए थे. ये एटीएम कियोस्क ग्रेटर कैलाश, चाणक्यपुरी और नेहरू प्लेस में स्थित थे. जिन खाताधारकों के फोन पर एटीएम से पैसे निकालने के मैसेज आए थे. पुलिस को उन की टाइमिंग मैच करते हुए आसपास के 200 सीसीटीवी कैमरों के फुटेज देखे, मगर कोई भी क्लू हाथ नहीं आ रहा था.

इस की वजह यह थी कि आरोपी एटीएम से रुपए निकालते वक्त पहचान छिपाने के लिए टोपी और स्कार्फ से खुद को ढंक लेते थे. रुपए निकाल कर वे आटो से या पैदल आते और गलियों में गायब हो जाते थे.

भोपाल क्राइम ब्रांच की टीम को दिल्ली में आरोपियों की पतासाजी करते हुए 20 दिन से अधिक हो गए थे. अपने घरपरिवार से दूर रहते हुए पुलिस टीम के सदस्यों को घर की



रोमानिया के ठग का साथी फिरोज अहमद

याद भी सता रही थी. एक दिन हैडकांस्टेबल आदित्य साहू अपने टीम लीडर एसआई रमन शर्मा से बोले, ''सर, हम ने दिल्ली के सैकड़ों एटीएम बूथों को चैक कर लिया है, लेकिन आरोपियों का कुछ पता नहीं चल रहा है. अब तो हमें वापस लौटना चाहिए.''

''सभी लोग कुछ दिन और धैर्य रखें, हमारी मेहनत जरूर सफल होगी, कोई न कोई क्लू हमें अपराधियों तक जरूर पहुंचाएगा.'' एसआई रमन शर्मा बोले.

इस के बाद टीम फिर नए जोश के साथ आरोपियों की पतासाजी में जुट गई. पुलिस टीम जब दिल्ली के नेहरू प्लेस के कैमरों की आखिरी फुटेज देख रही थी तो इस फुटेज के आखिरी कुछ सेकेंड्स में हर बार पैदल या आटो से रवाना हो जाने वाले ये लोग एक टैक्सी में बैठ कर जाते दिखे. इस फुटेज में टैक्सी का नंबर भी साफ दिख रहा था.

टैक्सी के इसी नंबर के सहारे पुलिस टैक्सी प्रोवाइडर कंपनी रंजीत ब्रदर्स के औफिस पहुंच गई. वहां पुलिस टीम को बताया गया कि इस टैक्सी को फिरोज नाम के किसी शख्स ने बुक किया था. कंपनी से पुलिस को टैक्सी बुक करने वाले का मोबाइल नंबर और घर का पता भी मिल गया. जब पुलिस ने उस मोबाइल पर काल करने की कोशिश की तो वह नंबर बंद था.

भोपाल पुलिस की टीम जब कंपनी के बताए हुए एड्रेस पर पहुंची तो घर के मकान मालिक ने बताया कि यहां पर फिरोज और आयोनियल मिउ नाम के 2 लोग रहते थे. उन्होंने कुछ दिन पहले ही घर छोड़ा है. इस के बाद पुलिस उस घर की तलाशी में जुटी तो तलाशी के दौरान टीम के एक सदस्य की नजर घर के दरवाजे के पीछे रखे एक डस्टबिन पर गई.

सबूत की उम्मीद में डस्टबिन को पलटा तो उस में एक फूड डिलीवरी की परची मिली. उस परची पर एक मोबाइल नंबर लिखा हुआ था. पुलिस जांच में सामने आया कि वह मोबाइल नंबर फिरोज नाम के शख्स का ही दूसरा नंबर था, जिस की लोकेशन उस समय मुंबई की थी.

टीम ने कुछ दिन दिल्ली में रुक कर दोनों की और जानकारी खंगालनी शुरू कर दी. मोबाइल नंबर को सर्विलांस पर लगाया तो 2-3 दिन बाद फिरोज का लोकेशन अलर्ट मिला. वह मुंबई से दिल्ली आ चुका था. वह दिल्ली के पहाड़गंज के किसी होटल में ठहरा हुआ था.

भोपाल पुलिस की टीम सक्रिय हुई और सीधे उस होटल में दबिश दी. पुलिस टीम को होटल में 2 लोग मिले, जब उन से पूछताछ की तो एक ने अपना नाम फिरोज दूसरे ने अपना नाम आयोनियल मिउ बताया. आयोनियल रोमानिया का रहने वाला था.

पता चला कि फिरोज दिल्ली में किसी लड़की से मिलने आया था और आयोनियल भी उस के साथ ठहरा हुआ था. ठगी के दोनों आरोपियों को पुलिस 18 अगस्त, 2023 को दिल्ली से भोपाल ले कर आई और उन से सख्ती से पूछताछ की तो बैंक खातों से ठगी के एक नए तरीके की कहानी सामने आई.

जालसाजों ने भोपाल में इस तरह से बैंक औफ बड़ौदा के 75 खाताधारकों के एटीएम की स्कीमिंग कर दिल्ली के 9 एटीएम बूथों से करीब 16-17 लाख रुपए निकाले. जालसाज लगातार रोमानिया के कई लोगों से संपर्क में था. उस ने एटीएम कार्ड बनाने की विधि औनलाइन सीखी. वह पहले रोमानिया और यूरोपीय देशों में सक्रिय साइबर फ्रौड करने वाले गिरोह के साथ काम करता था.

रोमानिया से भारत आया था जालसाज

पुलिस पूछताछ में 50 साल के आयोनियल ने कुबूल किया कि वह 2015 में टूरिस्ट वीजा पर भारत घूमने आया था. उसे भारत में उपयोग हो रहे एटीएम और उस की पुरानी तकनीक की पूरी जानकारी थी. उस ने बाकायदा इस पर एक स्टडी की हुई थी. वह रोमानिया से सब से पहले मुंबई पहुंचा था. आयोनियल मिउ की मुलाकात जब फिरोज से हुई थी, उस ने टूटीफूटी हिंदी में फिरोज से कहा, ''मुझे रहने के लिए रूम चाहिए.''

''मैं आप के लिए अपने घर का रूम रेंट पर देने को तैयार हूं.'' फिरोज ने उसे समझाते हुए कहा.



डीसीपी (क्राइम ब्रांच) श्रुतकीर्ति सोमवंशी

फिरोज ने यह सोच कर रूम किराए पर दे दिया कि विदेशी नागरिक से अच्छाखासा किराया वसूल कर लेगा. उस ने फिरोज का घर किराए पर लिया था. फिरोज को तब आयोनियल के मंसूबों के बारे में कुछ भी पता नहीं था.

आयोनियल को हिंदी और अंगरेजी ठीक से नहीं आती थी. उसे अपने फ्रौड के काम के लिए भारत में किसी ऐसे व्यक्ति की जरूरत थी, जो उस के लिए सारी व्यवस्थाएं आसानी से कर दे. उस ने इस के लिए फिरोज को राजी किया. फिरोज के पास उस समय कोई काम नहीं था, तब आयोनियल मिउ ने उसे समझाया, ''मेरे काम में सहयोग करो तो तुम्हें मैं रातोंरात अमीर बना दूंगा.''

फिरोज के राजी हो जाने के बाद उस ने फिरोज को अपना पूरा प्लान टूटीफूटी भाषा में समझाया. जल्दी अमीर बनने के चक्कर में फिरोज उस का हर तरह से साथ देने को तैयार हो गया था. सब से पहले दोनों ने मुंबई में फ्रौड की शुरुआत की, लेकिन कुछ महीनों के बाद आयोनियल को मुंबई पुलिस ने गिरफ्तार कर उस का पासपोर्ट जब्त कर लिया.

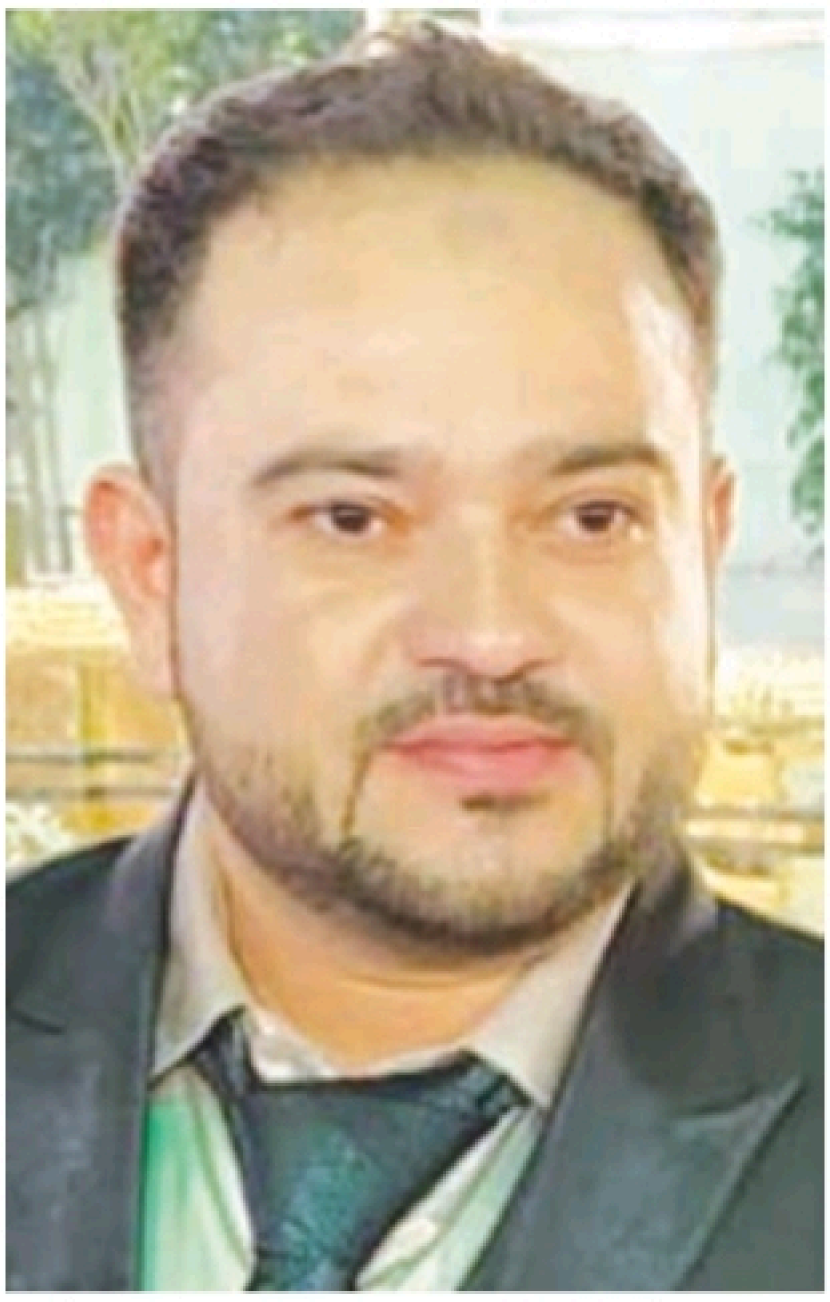
बिना पासपोर्ट के वह रोमानिया नहीं जा सका. उसे पैसों की जरूरत थी. वह दूसरा कोई काम भी नहीं जानता था, इस के बाद उस ने फिरोज के साथ मिल कर फुलप्रूफ प्लान बनाया. फिरोज उस के लिए गाड़ी, होटल से ले कर और तमाम व्यवस्थाएं जुटाता था.

फिरोज का काम एटीएम बूथों में डिवाइस लगाने, उन्हें निकालने, पैसे निकालने, मकान बुक करने, कार व आटो बुक करने, बाजार से सामान लाने का था. आयोनियल मिउ किसी से फोन पर ज्यादा बात नहीं करता था, वह सिर्फ फिरोज से ही बात करता है, बाकी किसी से संपर्क नहीं रखता, ताकि वह कौन है और क्या करता है, किसी को पता न चल सके.

आयोनियल मिउ रैकी कर टारगेट तय करता था. क्लोनिंग से प्राप्त डाटा को मशीन और लैपटाप के जरिए मिलान करना और मशीन के जरिए नया एटीएम कार्ड बनाने का काम करता था. कई बार वह एटीएम बूथ में जा कर पैसे निकालने का काम भी खुद करता था.

साल 2015 में रोमानिया से भारत आ कर वह दिल्ली में रुका. 2015 में ठाणे के पैठ बाजार थाना क्षेत्र में उस ने इसी तरह की धोखाधड़ी की और गिरफ्तार हो गया. इस के बाद उस ने 2017 में मुंबई में धोखाधड़ी की और फिर पकड़ा गया. गिरफ्तारी के बाद उस का पासपोर्ट जब्त हो जाने के कारण वह अब अवैध रूप से भारत में रह रहा था.

फिलहाल वह दोनों मामलों में जमानत पर है. 2018 में उस का परिवार भारत मिलने आया था. वह नाइजीरिया के कई लोगों से लगातार फोन से संपर्क में रहता था.



ठगी का शिकार होने वाले फारुख अली

बैंक औफ बड़ौदा के एटीएम में फिट किए स्कीमर डिवाइस

मई 2023 में फिरोज और आयोनियल दोनों भोपाल आए, मुंबई निवासी फिरोज अहमद ने अपने पहचान पत्र से भोपाल के डोरा क्षेत्र में औनलाइन एक मकान किराए पर लिया, जिस में दोनों जालसाज करीब एक महीने तक ठहरे थे.

दोनों ने भोपाल में रेकी कर बैंक औफ बड़ौदा के पुराने तकनीक वाले 3 एटीएम बूथों को पहचान कर उन में एटीएम क्लोनिंग मशीन लगाई और मशीन के ऊपर हाई रिजोल्यूशन कैमरे लगाए.

वह एटीएम में सुबह आटो से जाते और क्लोनिंग मशीन और कैमरे लगा कर चले आते थे. शाम को जा कर उपकरण निकाल लाते थे. इस की मदद से लोगों के एटीएम की डिटेल्स और पासवर्ड पता किए.

इस के बाद दोनों 25 जून को इंदौर पहुंचे और यही काम यहां के 2 एटीएम के साथ किया. 3 और 4 जुलाई के दौरान दोनों दिल्ली पहुंचे और वहां कुछ एटीएम कार्ड के क्लोन तैयार किए. इस के बाद 10 जुलाई के बाद दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रों में स्थित एटीएम से पैसे निकाल लिए. भोपाल और इंदौर में बैठे लोगों के मोबाइल पर पैसा निकलते ही मैसेज आने लगे तो लोग चौंक गए कि वह तो कभी दिल्ली गए ही नहीं और एटीएम उन की जेब में है. ऐसे में दिल्ली के एटीएम से किस ने उन के पैसे निकाल लिए. इस के बाद 15 दिन के भीतर 100 से ज्यादा लोगों ने साइबर फ्रौड की शिकायतें इंदौर-भोपाल में कीं.

12वीं पास आयोनियल साइबर फ्रौड करने के मामले में इतना शातिर था कि वह स्कीमर से एटीएम के क्लोन बना लेता था. एटीएम के जरिए किसी के अकाउंट से पैसे निकालने के लिए पासवर्ड जानने के लिए उस ने फिरोज के जरिए एटीएम मशीन के कीपैड के ऊपर लगने वाले कई प्लेट्स मंगवाए. इन प्लेट्स के बीच में स्पैशल कैमरा फिट किया.

ये कैमरा एक माइक्रो एसडी कार्ड और छोटी बैटरी से कनेक्टेड था. आयोनियल ने कैमरे से लैस प्लेट्स को एटीएम मशीन के कीपैड पर कुछ इस तरह सेट किया कि सीधे इस की नजर पासवर्ड वाले नंबर्स पर ही पड़े.

इस के बाद दोनों सुबह से शाम तक उस एटीएम के बाहर ही भटकते रहते थे, जहां ये डिवाइस फिट करते थे. दोनों कैमरे की बैटरी खत्म होने से पहले ही प्लेट निकाल लेते थे. इस के बाद ट्रांजैक्शन टाइमिंग के हिसाब से हिडन कैमरे में रिकौर्डेड कोड को मैच करते थे. जिस कार्ड का पास कोड मैच होता, उस का क्लोन तैयार कर के रख लेते थे.

आरोपी ने भोपाल आ कर बैंक औफ बड़ौदा के एटीएम बूथों की रेकी की. फिर सुनसान जगह पर लगे बूथ में स्कीमिंग डिवाइस के साथ हिडन कैमरे फिट किए. इस के जरिए उन्होंने डाटा चुराया. इस के बाद वह पुराने गिफ्ट कार्ड का इंतजाम करते थे, इस में चुराए गए खाताधारक का डाटा डिजिटल एमएसआर (एटीएम कार्ड का क्लोन तैयार करने वाली मशीन) से उस में भर देते थे.

इस काम में आयोनियल मिउ माहिर था.उस ने रोमानिया में ही यह सब सीखा था. बाद में हिडन कैमरे की मदद से पिन नंबर हासिल कर लेते थे और फिर क्लोन कर बनाए नए एटीएम

से बूथ में जा कर रुपए निकालते थे. रोमानियन नागरिक आयोनियल मिउ मईजून महीने में भोपाल आया था. इस दौरान रातीबड़ के गांव मैंडारा में औनलाइन ऐप का उपयोग कर वह होम स्टे में रुका था. उसे रुकवाने और कार का इंतजाम फिरोज ही करवाता था. वह अपने ही दस्तावेज उस के नाम के साथ लगाया करता था.

आयोनियल मिउ का पासपोर्ट और वीजा तो पुलिस के पास 6 साल से जब्त है. मिउ पर 2017 में 2 साइबर अपराध मुंबई में दर्ज हैं, फिलहाल वह जमानत पर है, उस की जमानत भी फिरोज ने करवाई थी.

मास्टरमाइंड आयोनियल मिउ रोमानिया और यूरोपियन जालसाजों के गिरोह में रह कर काम कर चुका है. वह विदेश से क्लोनिंग मशीन और हिडन कैमरे ले कर आया था. उक्त क्लोनिंग कियोस्क पुरानी तकनीक की हैं, जो मैग्नेटिक एटीएम कार्ड का डाटा ही कैप्चर कर सकती हैं. बैंक औफ बड़ौदा की कुछ पुरानी एटीएम मशीनें हैं. जालसाज के पास जो मशीनें थीं, वह पुरानी डिजाइंस के एटीएम मशीनों में ही लग सकती थी, इस कारण वह बैंक औफ बड़ौदा के एटीएम कियोस्क को चुनता था.



सीपी हरिनारायण चारी मिश्र, एसआई (क्राइम ब्रांच) रमन शर्मा, कांस्टेबल तेजराम सेन, कांस्टेबल सुनील कुमार

रोमानिया के आयोनियल के पास जो स्कीमर मशीन थी, वह चिप वाले एटीएम डिवाइस का क्लोन तैयार नहीं कर सकती थी. बैंक औफ बड़ौदा के कुछ खाताधारक अब भी पुराने ढर्रे के एटीएम कार्ड्स उपयोग कर रहे थे. पुराने एटीएम कार्ड में चिप नहीं लगी थी, इन के पीछे ब्लैक कलर की एक मैग्नेटिक स्ट्रिप होती थी, जिसे एटीएम मशीन रीड करती थी. इस के अलावा जिन एटीएम कियोस्क में डिवाइस फिट किए गए, वो भी अपडेटेड नहीं थी. इस कारण यहां से डाटा चुराना आसान था. यही कारण था कि आयोनियल ने बैंक औफ बड़ौदा को चुना.

रोज 50 हजार की कोकीन का सेवन करता था आयोनियल

जालसाज गिफ्ट वाउचर वाले कार्ड को एमएसआर मशीन से एटीएम के रूप में बनाता था. स्कीमिंग डिवाइसेस से एटीएम कार्ड की जानकारी लेता था. उसी समय ग्राहक द्वारा डाले गए पिन नंबर की जानकारी वह मशीन की स्क्रीन के ऊपर लगाए गए हाई रिजोल्यूशन कैमरे से निकाल लेता था. दोनों के डाटा को मैच करने के बाद वह एसएमआर मशीन से उक्त डाटा को गिफ्ट वाउचर के कार्ड में डालता था, जिस के बाद एटीएम कार्ड के रूप में इस्तेमाल कर पैसे निकालता था.

पूछताछ में पता चला है कि जालसाज आयोनियल मिउ ड्रग्स का आदी था. वह रोज 40 से 50 हजार रुपए की कोकीन या अन्य सिंथेटिक ड्रग्स का सेवन करता था. डीसीपी ने बताया कि हैवी ड्रग एडिक्ट होने के कारण भोपाल में जब रहने आया तो करीब एक महीने के उपयोग के लिए अपने साथ दिल्ली से ही बड़ी मात्रा में कोकीन ले कर आया था. बिना पासपोर्ट वीजा का एक अंतरराष्ट्रीय जालसाज भोपाल में किराए के कमरे में एक महीने रहा.

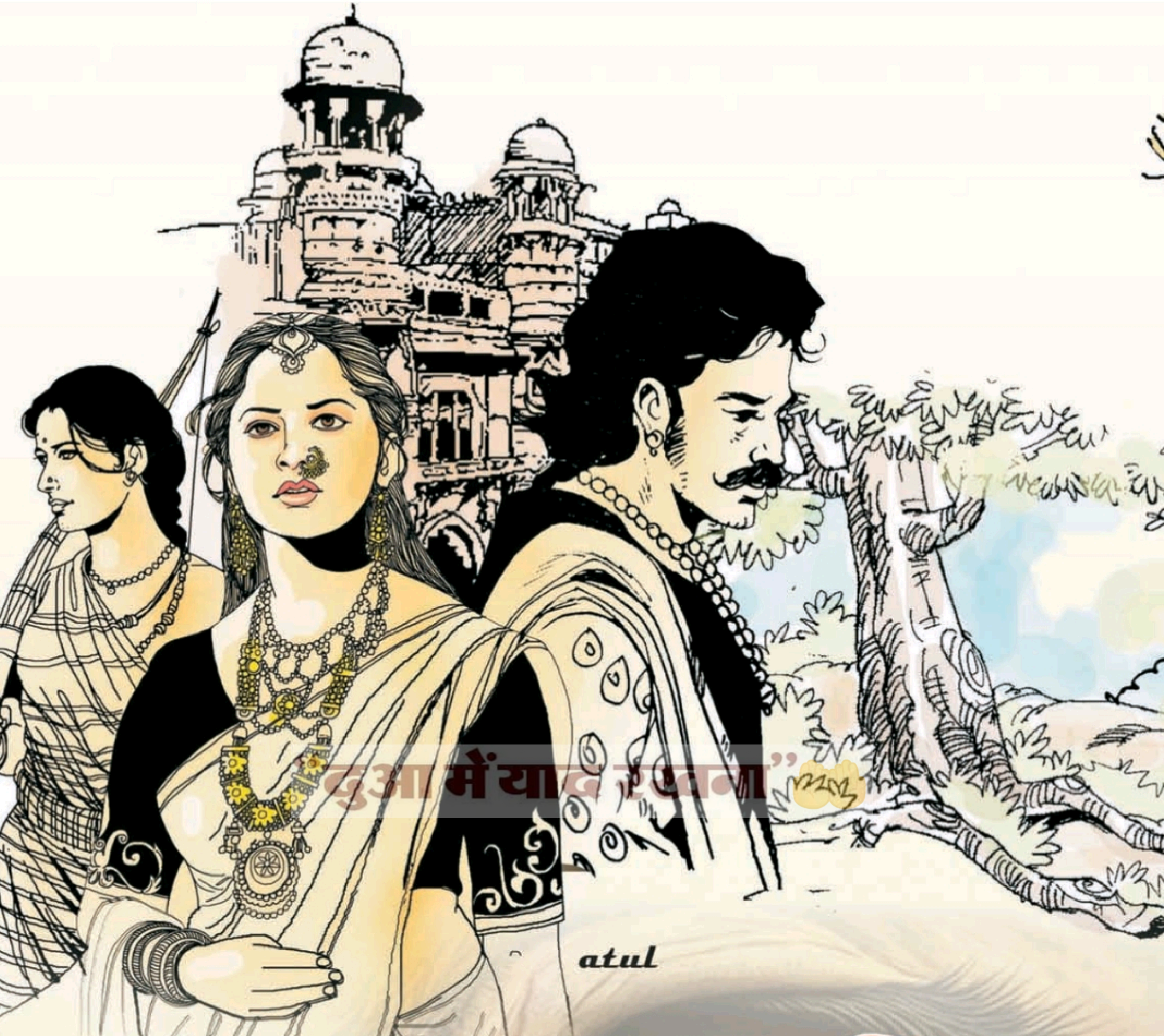
आयोनियल मिउ का पासपोर्ट जब्त होने के कारण भोपाल में फिरोज ने अपने दस्तावेज से मकान किराए पर लिया था. 19 अगस्त, 2023 को भोपाल पुलिस कमिश्नर हरिनारायण चारी मिश्रा ने बैंक औफ बड़ौदा ठगी मामले का खुलासा एक प्रैस कौन्फ्रैंस में करते हुए बताया कि रोमानिया का रहने वाला आयोनियल केवल कैश में डील करता था. उस का कोई बैंक अकाउंट नहीं है.

पुलिस को फिरोज के कुछ बैंक डिटेल्स हाथ लगे हैं. उस की छानबीन की जा रही है. वहीं दोनों ने फरजी तरीके से 16 लाख रुपए जमा किए थे, जो दोनों ने अय्याशी में उड़ा दिए. दोनों के हर दिन का खर्चा करीबन 60 हजार रुपए था. दोनों दिल्ली के महंगे होटलों में अय्याशी करने ही पहुंचे थे, लेकिन पकड़े गए. आयोनियल मिउ कोकीन और दूसरे नशे का भी आदी है, उसे ठीक से अंगरेजी नहीं आती, इसलिए पूछताछ में पुलिस को परेशान होना पड़ा.

भोपाल, इंदौर के साथ कई शहरों में जालसाजी करने के बाद वह अपने साथी फिरोज के साथ जयपुर में ठगी करने के लिए ही जाने वाला था. दोनों राजस्थान के जयपुर में रैकी भी कर चुके थे, लेकिन उस से पहले ही दबोच लिए गए. भोपाल पुलिस ने दोनों से पूछताछ करने के बाद उन्हें कोर्ट में पेश किया, जहां से उन्हें जेल भेज दिया गया. ●

—कथा पुलिस सूत्रों पर आधारित





मृगनयनी

❑ कस्तूर सिंह भाटी

खूबसूरत निन्नी उर्फ मृगनयनी के भोले सौंदर्य को पाने के लिए मालवा के सुलतान गयासुद्दीन खिलजी ने अपने सिपाहियों को भेजा, लेकिन धनुर्धर निन्नी ने सिपाहियों को घायल कर दिया. उस की बहादुरी के किस्से सुन कर ग्वालियर के राजा मानसिंह तोमर भी निन्नी से मिलने पहुंच गए. उन के दिल में भी निन्नी की मोहिनी मूरत बस गई. उन्होंने निन्नी के सामने शादी का प्रस्ताव रखा तो क्या राजा मानसिंह उसे अपनी रानी बनाने में सफल हो सके?



"दुआ में याद रखना"

उन दिनों अकसर मुगलों के आक्रमण होते रहते थे, सिकंदर लोदी और गयासुद्दीन खिलजी ने कई बार ग्वालियर के किले पर धावा बोला, पर वह सफल नहीं हो सका. तब उस ने आसपास के गांवों को नष्ट कर उन की फसलें लूटना शुरू कर दीं. उस ने कई मंदिरों को तोड़फोड़ डाला और लोगों को इतना तंग किया कि वे हमेशा भयभीत बने रहते. खासकर स्त्रियों को ही भय रहता. उन दिनों औरतों का खूबसूरत होना खतरे से खाली न रहता. कारण, मुगल उन पर आंखें गड़ाए रहते थे.

गांवों की कई सुंदर, भोली लड़कियां उन की शिकार हो चुकी थीं. ऐसे समय में ग्वालियर के पास राई नामक गांव में एक गरीब गुज्जर (गुर्जर) किसान के यहां निन्नी नामक एक सुंदर लड़की थी. सिकंदर लोदी के आक्रमण के समय उस के मातापिता मारे गए थे और एक भाई के सिवा उस का संसार में कोई न था. वही उस की रक्षा और भरणपोषण करता था.

उन के पास एक कच्चा मकान और छोटा सा खेत था, जिस पर वे अपनी गुजरबसर करते थे. दोनों भाईबहन शिकार में निपुण थे और जंगली जानवर मारा करते थे. दोनों अपनी गरीबी में भी बड़े खुश रहते और गांव के सभी सामाजिक और धार्मिक कार्यों में हिस्सा लेते थे. उन का स्वभाव और व्यवहार इतना अच्छा था कि पूरा गांव उन्हें चाहता था.

धीरेधीरे निन्नी के अनुपम भोलेसौंदर्य की खबर आसपास के क्षेत्र में फैलने लगी और एक दिन मालवा के सुलतान गयासुद्दीन को भी इस का पता लग गया.

वह तो औरत और शराब के लिए जान देता ही था. उस ने झट अपने आदमियों को बुलवाया और राई गांव की खूबसूरत लड़की निन्नी गूजरी को अपने महल में लाने के लिए हुक्म दिया.

अंत में 2 घुड़सवार इस काम के लिए चुने गए. सुलतान ने उन से साफ कह दिया कि यदि वे उस लड़की को लाने में कामयाब नहीं हुए तो उन का सिर धड़ से अलग कर दिया जाएगा और यदि वे उसे ले आए तो उन्हें मालामाल कर दिया जाएगा.

निन्नी गूजरी अपनी एक सहेली लाखी के साथ जंगल में शिकार को गई थी. उस रोज शाम तक उन्हें कोई शिकार नहीं मिला और वे निराश हो कर लौटने ही वाली थीं कि उन्हें दूर झाड़ी के पास कुछ आहट सुनाई दी.

लाखी थक कर चूर हो गई थी, इसलिए वह तो वहीं बैठ गई, किंतु निन्नी अपने तीर और भालों के साथ आगे बढ़ गई. झाड़ी के पास पहुंचने पर उस ने शिकार की खोज की, पर उसे कुछ नजर नहीं आया. वह लौटने ही

वाली थी कि फिर से आहट सुनी. उस ने देखा कि झाड़ी के पास एक बड़े वृक्ष के पीछे से 2 घुड़सवार निकले और उस की ओर आने लगे. पहले तो निन्नी कुछ घबराई, लेकिन फिर अपना साहस जुटा कर वह उन का सामना करने के लिए अड़ कर खड़ी हो गई.

जैसे ही घुड़सवार उस से कुछ कदम दूरी पर आए, उस ने कड़कती हुई आवाज में चिल्ला कर कहा, ''तुम लोग कौन हो और यहां क्यों आए हो ?''

दोनों सवार घोड़ों से उतर गए. उन में से एक ने कहा, ''हम सुलतान गयासुद्दीन के सिपाही हैं और तुम्हें लेने आए हैं. सुलतान तुम्हें अपनी बेगम बनाना चाहता है.''

सवार के मुंह से इन शब्दों के निकलते ही निन्नी ने अपना तीर कमान पर चढ़ा उस की एक आंख को निशाना बना तेजी से चला दिया. फिर दूसरा तीर दूसरी आंख पर चलाया, किंतु वह उस की हथेली पर अड़ कर रह गया, क्योंकि सवार के दोनों हाथ आंखों पर आ चुके थे.

इसी बीच दूसरा सवार घोड़े पर चढ़ कर तेजी से वापस लौटने लगा. निन्नी ने उस पर पहले भाले से और फिर तीरों से वार किया. वह वहीं धड़ाम से नीचे गिर गया. पहले सवार की आंखों से खून बह रहा था.

निन्नी ने एक भाला उस की छाती पर पूरी गति से फेंका और चीख कर वह भी जमीन पर लोटने लगा. फिर निन्नी तेजी से वापस चल पड़ी और हांफती हुई लाखी के घर पहुंची.

लाखी पास के नाले से पानी पी कर लौटी थी और आराम कर रही थी. निन्नी से घुड़सवारों का हाल सुन उस के चेहरे का रंग उड़ गया. निन्नी ने उसे हिम्मत दी और शीघ्रता से वापस चलने को कहा. दूसरे दिन पूरे राई गांव में निन्नी की बहादुरी का समाचार बिजली की तरह फैल गया.

ग्वालियर के राजपूत राजा मान सिंह तोमर को भी इस घटना की सूचना मिली. वे इस बहादुर लड़की से मिलने के लिए उत्सुक हो उठे. उस के बाद तो जो भी आदमी राई गांव से आता, वह इस लड़की के बारे में अवश्य पूछता.

एक दिन गांव का पुजारी मंदिर बनवाने की फरियाद ले मान सिंह तोमर के पास पहुंचा. उस ने भी निन्नी की वीरता के कई किस्से राजा को सुनाए. राजा को यह सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि निन्नी अकेली कई सूअरों और अरने भैंसों को केवल तीरों और भालों से मार गिराती है. अंत में मानसिंह ने पुजारी के द्वारा गांव में संदेश भेज दिया कि वे शीघ्र ही गांव का मंदिर बनवाने और लोगों से मिलने गांव आएंगे.

राजा के आगमन की सूचना पाते ही गूजरों में खुशी की लहर फैल गई. हर कोई उन के स्वागत की तैयारियों में लग गया. लोगों ने अपने कच्चे मकानों को छापना और लीपनापोतना शुरू कर दिया.

राजा मान सिंह तोमर ने सब के सामने निन्नी की सुनी हुई बहादुरी की भी तारीफ की और दूसरे दिन निन्नी के हाथों से जंगली जानवरों के शिकार को देखने की इच्छा प्रकट की. पुजारी ने निन्नी के भाई अटल की ओर इशारा किया, अटल ने बिना निन्नी से पूछे खड़े हो कर स्वीकृति दे दी.

जिन के पास पैसे थे, उन्होंने अपने लिए उस दिन पहनने के लिए नए कपड़े बनवा लिए. किंतु जिन के पास पैसे नहीं थे, उन्होंने भी नदी के पानी में अपने पुराने फटे कपड़ों को खूब साफ कर लिया और उत्सुकता से उस दिन हर दरवाजे पर आम के पत्तों के बंदनवार बांधे गए और सब लोग अपने साफ कपड़ों को पहन, गांव के बाहर रास्ते पर राजा के स्वागत के लिए जमा हो गए.

सामने औरतों की कतारें थीं. वे अपने सिर पर मिट्टी के घड़ों को उठाए थीं. उन घड़ों में पानी भरा था. उन घड़ों पर मीठे तेल के दीपक जल रहे थे. सब के सामने निन्नी को खड़ा किया गया था, जो एक थाली में अक्षत, कुमकुम, फूल और आरती उतारने के लिए घी का एक दीपक रखे हुए उस ने मोटे मगर साफ कपड़े पहने थे.

उस के बाजू में गांव का पुजारी खड़ा था. बाकी पुरुष पंक्ति बना कर औरतों के पीछे खड़े हुए थे. जैसे ही राजा मान सिंह की सवारी पहुंची, पूरे गांव के लोगों ने मिल कर एक स्वर से उन की जयजयकार की. फिर पुजारी ने आगे बढ़ कर पहले उन का स्वागत किया. उन के भाले पर हल्दी और कुमकुम का टीका लगाया और माला पहनाई.

राजा ने ब्राह्मण के पैर छुए और पुजारी ने उन्हें आशीर्वाद दिया. इस के बाद पुजारी ने राजा को निन्नी का परिचय कराया. निन्नी सिर झुकाए खड़ी थी. उस ने झट कुमकुम, अक्षत राजा के माथे पर लगाया. फूल उन की पगड़ी पर फेंके और आरती उतारने लगी.

मानसिंह की निगाह निन्नी के भोले से सुंदर मुखड़े पर अटकी हुई थी. आरती समाप्त होते ही मानसिंह ने देखा कि निन्नी के फेंके फूलों में से एक जमीन पर गिर पड़ा है. उन्होंने झुक कर उसे उठाया और अपनी पगड़ी में खोंस लिया. कई स्त्रियों ने यह दृश्य देखा और आपस में एकदूसरे की तरफ देखते हुए मुसकराने लगीं. विशेषकर लाखी चुप न रह सकी और उस ने निन्नी को चिकोटी दे कर धीरे से कान में कह ही दिया, ''राजा ने तुम्हारी पूजा स्वीकार कर ली है, अब तो तू जल्दी ही ग्वालियर की रानी बनेगी.''

यह सुनते ही निन्नी के गोरे गालों पर लज्जा की लालिमा छा गई.

''चल हट,'' कह कर वह भीड़ में खो गई और राजा मंदिर की ओर चल पड़े. मंदिर के पास ही राजा का पड़ाव डाला गया. रात के समय लोगों की सभा में राजा ने मंदिर बनवाने के लिए 5 हजार रुपए के दान की घोषणा की.

गांव में कुआं खुदवाने तथा सड़क सुधारने के लिए 10 हजार रुपए देने का वायदा किया. अंत में राजा ने गांव के लोगों को मुगलों से सतर्क रहने को कहा. साथ ही मुगलों से सामना करने के लिए तैयार रहने को कहा.

राजा मान सिंह तोमर ने सब के सामने निन्नी की सुनी हुई बहादुरी की भी तारीफ की और दूसरे दिन निन्नी के हाथों से जंगली जानवरों के शिकार को देखने की इच्छा प्रकट की. पुजारी ने निन्नी के भाई अटल की ओर



इशारा किया, अटल ने बिना निन्नी से पूछे खड़े हो कर स्वीकृति दे दी.

इस के बाद बहुत रात तक भजनकीर्तन हुआ और फिर लोग अपनेअपने घर चले गए. दूसरे दिन शिकार की तैयारियां हुईं, राजा मानसिंह के लिए एक मचान बनाया गया. निन्नी ने अपने सब हथियार साफ कर के उन्हें तेज किया.

बीचबीच में निन्नी विचारों में खो जाती. कभी ग्वालियर की रानी बनने की मधुर कल्पना उसे गुदगुदा जाती तो कभी अपने एकमात्र प्रिय भाई का खयाल, गांव का सुखी, स्वतंत्र जीवन, सांक नदी का शीतल जल और जंगल के शिकार का आनंद उसे दूसरे संसार में ले जाते.

इसी समय अटल ने तेजी से घर में प्रवेश किया और निन्नी को जल्दी चलने के लिए कहा. राजा ने जंगल की ओर कूच कर लिया था. इसी समय लाखी भी आ गई और निन्नी अपनी सखी लाखी के साथ शिकार के लिए चल पड़ी.

कुछ हथियार निन्नी रखे थी और कुछ उस ने लाखी को पकड़ा दिए थे. जंगल में राजा के आदमी ढोल पीट रहे थे ताकि जानवर अपने छिपे हुए स्थानों से बाहर निकल पड़ें. राजा मानसिंह मचान पर बैठे थे. निन्नी और लाखी एक बड़े झाड़ी के नीचे खड़ी हुई थीं.

थोड़ी देर के बाद हिरण और अन्य जानवर झाड़ी से निकले, हिरणों का झुंड भागने लगा. निन्नी ने एक तीर जोर से चलाया, जो मादा हिरण को लगा और वह वहीं पर गिर पड़ी. नर हिरण तेजी से भागा पर निन्नी ने उसे भी मार गिराया. इस के बाद 3-4 हिरण और एकएक तीर में मार गिराए. इस के बाद निन्नी ने दौड़ कर 2 हिरण के बच्चों को गोद में उठा लिया, जो अकेले बच गए थे. उन्हें उठा कर निन्नी एक झाड़ी के नीचे ले आई.

मान सिंह ने यह दृश्य देखा और मन ही मन निन्नी के कोमल हृदय की प्रशंसा करने लगे. इस के बाद तो एकएक कर के कई जंगली जानवर बाहर निकले और निन्नी ने कभी तीरों और कभी भालों से उन्हें मार गिराया. फिर एक बड़ा जंगली अरना भैंसा निकला, निन्नी ने पूरी ताकत से 2 तीर चलाए, जो सीधे भैंसे के शरीर को भेद गए, किंतु वह गिरा नहीं. घायल होने के कारण वह क्रोध में आ कर चिंघाड़ता हुआ निन्नी की ओर झपटा. मानसिंह ने अपनी बंदूक निकाल ली और वे भैंसे पर गोली चलाने ही वाले थे कि उन्होंने देखा, निन्नी ने दौड़ कर अरने भैंसे के सींग पकड़ लिए हैं और पूरा जोर लगा कर वह उन्हें मरोड़ रही है. फिर बिजली की सी गति से उस ने एक तेज भाला उस के माथे पर भोंक दिया.

भैंसा अंतिम बार जोर से चिंघाड़ा और जमीन पर गिर पड़ा. मानसिंह मचान से उतरे और सीधे निन्नी के पास गए. उन्होंने अपने गले से कीमती मोतियों की माला उतारी और उसे निन्नी के गले में पहना दी. निन्नी ने झुक कर राजा को प्रणाम किया और एक ओर हो गई.

लाखी ने देखा, राजा और निन्नी चुप खड़े हैं. वह जानवरों के शरीरों से तीर और भाले निकालने का बहाना कर वहां से खिसक गई. तब मानसिंह ने निन्नी का हाथ अपने हाथों में में लेते हुए कहा, ''शक्ति और सौंदर्य का कैसा सुंदर मेल है तुम में. निन्नी, सचमुच तुम तो ग्वालियर के महल में ही शोभा दोगी. क्या तुम मुझ से विवाह करने के लिए तैयार हो ?''

निन्नी के पास जवाब तुम देने के लिए शब्द ही नहीं थे. वह क्षण भर मौन रही. फिर अत्यंत नम्र और भोले स्वर में बोली, ''फिर मुझे गांव का यह सुंदर स्वतंत्र जीवन कहां मिलेगा. वहां मुझे शिकार के लिए जंगल और जानवर कहां मिलेंगे और यह सांक नदी, जिस का शीतल जल मुझे इतना प्यारा लगता है, वहां कहां मिलेगा ?''

मानसिंह जो निन्नी का हाथ अभी भी अपने हाथों में लिए थे, बोले, ''तुम्हारी सब





गुर्जर किसान की बेटी निन्नी, जिस का नाम असल में मृगनयनी था, ग्वालियर की गूजरी रानी के नाम से इतिहास में प्रसिद्ध हुई. उस में जैसी सौंदर्य की कोमलता थी, वैसी ही शूरवीरता भी थी. राजा मानसिंह उसे बहुत ही चाहते थे और कुछ समय तक ऐसा लगा कि राजा उस के पीछे पागल है, किंतु निन्नी ने उन्हें हमेशा कर्तव्य की ओर प्रेरित किया.

इच्छाएं वहां भी पूरी होंगी. निन्नी, केवल वचन दो, मैं तुम्हारे लिए सांक नदी को ग्वालियर के महल तक ले जा सकता हूं.''

निन्नी अब क्या कहती, वह चुप हो गई. और मानसिंह उस के मौन का अर्थ समझ गए. इसी समय अटल और अन्य लोग वहां पहुंचे और निन्नी का हाथ छोड़ राजा मानसिंह उन में मिल गए. उसी दिन संध्या समय मानसिंह ने पुजारी के द्वारा अटल गुज्जर के पास निम्मी से विवाह का प्रस्ताव भेजा.

पहले अटल विश्वास न कर सका, किंतु जब स्वयं मानसिंह ने उस से विवाह की बात कही, तब तो अटल की खुशी का ठिकाना न रहा. दूसरे ही दिन विवाह होना था. अटल इंतजाम में लग गया. लोग उस से पूछते कि वह पैसा कहां से लाएगा और इतना बड़ा ब्याह कैसे करेगा? अटल गर्व से जवाब देता, ''मैं कन्या दूंगा और एक गाय दूंगा. सूखी हल्दी और चावल का टीका लगाऊंगा. घर में बहुत से जानवरों के चमड़े रखे हैं, उन्हें बेच कर बहन के गले के लिए चांदी की एक हंसली दूंगा और क्या चाहिए?''

मानसिंह ने अटल की कठिनाइयां सुनीं तो उसे संदेश भेजा कि वे ग्वालियर से शादी करने को तैयार हैं और दोनों तरफ का खर्चा भी वे पूरा करेंगे. इस से अटल के स्वाभिमान को बड़ा धक्का पहुंचा. उस ने तुरंत संदेशा भेजा कि उसे यह बात मंजूर नहीं. आज तक कहीं ऐसा नहीं हुआ कि लड़की को लड़के के घर ले जा कर विवाह किया गया हो, गरीब से गरीब लड़की वाले भी अपने घर में ही लड़की का कन्यादान देते हैं.

इस पर मानसिंह चुप हो गए. अटल ने रात भर जाग कर सब तैयारियां कीं. उस ने जंगल से लकड़ी और आम के पत्ते ला कर मंडप बनाया. अनाज बेच कर कपड़े का एक जोड़ा निन्नी के लिए तैयार किया तथा गांव वालों को बांटने के लिए गुड़ लिया.

इस तरह दूसरे दिन वैदिक रीति से राजा मान सिंह और निन्नी का ब्याह पूरा हुआ. गांव के लोगों से जो कुछ बन पड़ा, उन्होंने निन्नी को दिया. विदाई के समय निन्नी अटल से लिपट कर खूब रोई. उस ने रोते हुए कहा, ''भैया, अब लाखी को भाभी बना कर जल्दी घर ले आओ. तुम्हें बहुत तकलीफ होगी.''

भाई ने उसे आश्वासन दिया और इस प्रकार निन्नी भाई की झोपड़ी को छोड़ ग्वालियर के महल के लिए रवाना हो गई. विवाह के बाद महल की राजपूत रानियों ने गुर्जर जाति की रानी का विरोध किया.

इसी कारण राजा मान सिंह ने 'गूजरी महल' का निर्माण करवाया. वहीं, गुर्जर किसान की बेटी निन्नी, जिस का नाम असल में मृगनयनी था, ग्वालियर की गूजरी रानी के

नाम से इतिहास में प्रसिद्ध हुई. उस में जैसी सौंदर्य की कोमलता थी, वैसी ही शूरवीरता भी थी. राजा मानसिंह उसे बहुत ही चाहते थे और कुछ समय तक ऐसा लगा कि राजा उस के पीछे पागल है, किंतु निन्नी ने उन्हें हमेशा कर्तव्य की ओर प्रेरित किया.

वह संगीत और चित्रकला सीखने लगी, जिस से उस का समय व्यस्त रहता और मानसिंह भी उस समय अपने राज्य के कार्यों में लगे रहते. युद्ध के समय मृगनयनी हमेशा मानसिंह को उत्साहित कर प्रजा की रक्षा के लिए तत्पर रहती थी. इस प्रकार मृगनयनी सचमुच एक योग्य कुशल रानी सिद्ध हुई. उस ने राज्य में संगीत, चित्रकला, शिल्पकला को प्रोत्साहन दिया. ग्वालियर में बने हुए मान मंदिर और गूजरी महल आज भी उस समय की उन्नत शिल्पकला के नमूने हैं.

राई गांव से गूजरी महल तक बनी हुई नहर जिस में सांक नदी का जल ग्वालियर तक ले जाया गया था, आज भी दिखाई देता है. मानसिंह सांक नदी का जल नहर बना कर ग्वालियर ले आए और गूजरी महल तक पहुंचा कर अपना वादा निन्नी से पूरा किया. निन्नी की यह शर्त थी जो राजा ने पूरी की.

राजा मानसिंह को मृगनयनी से 2 बेटे हुए थे- एक का नाम राजे, दूसरे का बाले था. मान सिंह ने निन्नी सहित 9 रानियों से विवाह किए थे. निन्नी से पहले मानसिंह के 8 रानियां थीं. मानसिंह की बड़ी रानी से एक बेटा विक्रमादित्य था, जो मानसिंह के पीछे राजा हुआ.

मृगनयनी अपने दोनों बेटों राजे और बाले को गूजरी महल छोड़ टिगड़ा के जंगलों में चली गई. उन्होंने एक नया गोत्र अपनाया जो आज गुर्जर में आता है 'तोंगर', जिस का अर्थ यह है तोमर+गुर्जर = तोंगर.

मृगनयनी के बेटों को क्षत्रिय राजपूतों में शामिल नहीं किया गया था. क्योंकि क्षत्रिय वो है, जो एक क्षत्राणी की कोख से जन्मा हो, मगर मृगनयनी तो गुर्जर जाति से थी. इस कारण उसे गूजरी महल से टिगड़ा के जंगलों में बेटों को ले कर जाना पड़ा. मृगनयनी के बेटों ने नया गोत्र तोंगर अपनाया. मृगनयनी के बेटों को कुछ जागीर दे कर गुर्जरों में शामिल

राजा मान सिंह तोमर और मृगनयनी की प्रेम गाथा आज भी बड़े चाव से ग्वालियर में लोगों से सुनी जाती है. एक समय ऐसा भी आया, जब राजा मान सिंह और मृगनयनी का स्वर्गवास हो गया. तब मान सिंह तोमर की 8 रानियों सहित एक हजार महिलाओं ने जौहर करके अग्निस्नान किया था.

किया गया. ये राजपूत राजा मान सिंह तोमर के गूजरी पत्नी के वंशज आज तोंगर गुर्जर कहलाते हैं और तोमर राजपूतों का समर्थन करते हैं चुनाव वगैरह में. राजपूत राजा की गूजरी रानी निन्नी.

मृगनयनी ने ग्वालियर के तोमर राज्य में चार चांद जोड़ दिए और उस काल को इतिहास में अमर कर दिया. राजा मान सिंह तोमर ने 1486 से 1516 तक शासन किया. अपने शासन काल में उन्होंने कई जंग जीतीं और वे संगीत प्रेमी भी थे.

निन्नी की आंखें बहुत सुंदर एवं हिरणी की तरह बड़ीबड़ी थीं, इसलिए मानसिंह ने उन का नाम मृगनयनी रख दिया और वे इसी नाम से प्रख्यात हो गईं.

मानसिंह जब भी किले से बाहर जाते या आते थे, वे मृगनयनी से जरूर गूजरी महल में जा कर मिलते थे. मृगनयनी रानी से मिलने में आसानी हो, इसलिए महल से एक सुरंग सीधे नीचे गूजरी महल तक बनाई गई थी. इसी सुरंग से होते हुए महाराजा मान सिंह रानी मृगनयनी से मिलने आया करते थे.

महाराजा मानसिंह अगर सब से ज्यादा किसी से प्रेम करते थे, तो वह थी मृगनयनी.

महाराजा मान सिंह तोमर और रानी मृगनयनी के प्रेम की निशानी है ग्वालियर किले पर वर्ष 1506 में बना 'गूजरी महल'.

वर्ष 1922 में पुरातत्त्व विभाग ने इस महल को संग्रहालय में बदल दिया. इस में 28 गैलरी हैं, जिन में लगभग 9 हजार कलाकृतियां हैं. यह गूजरी महल आज ग्वालियर किले का प्रमुख आकर्षण है और लाखों पर्यटक इसे देखने आते हैं. राजा मान सिंह तोमर और मृगनयनी की प्रेम गाथा आज भी बड़े चाव से ग्वालियर में लोगों से सुनी जाती है. एक समय ऐसा भी आया, जब राजा मान सिंह और मृगनयनी का स्वर्गवास हो गया.

तब मान सिंह तोमर की 8 रानियों सहित एक हजार महिलाओं ने जौहर करके अग्निस्नान किया था. उस काल में मुगलों ने जहांजहां हिंदू सम्राटों को शिकस्त दी. वहां के राजपूत राजाओं के कुल की नारियों ने जौहर कर के अपनी लाज बचाई थी, राजा मान सिंह और मृगनयनी की प्रेम कहानी कल की सी लगती है. ●

घर बैठे 2 मिनट में कर सकते हैं साइबर धोखाधड़ी की शिकायत



भारत में बढ़ रही साइबर फ्रौड की घटना के शिकार होने पर साइबर अपराध पोर्टल पर औनलाइन शिकायत दर्ज की जा सकती है. इस के लिए भारत सरकार ने एक विशेष औनलाइन पोर्टल शुरू किया है.

सरकारी पोर्टल साइबर धोखाधड़ी सहित साइबर अपराधों से संबंधित शिकायतों का निपटारा करता है. यहीं साइबर क्राइम कंप्लेंट नंबर भी दिए गए हैं. वह नंबर 1930 है. इस पर काल भी की जा सकती है.

साइबर धोखाधड़ी के मामलों में वित्तीय धोखाधड़ी और नौकरी में धोखाधड़ी के अलावा और भी कई दूसरे अपराध शामिल हैं. साइबर धोखाधड़ी को औनलाइन धोखाधड़ी या इंटरनेट धोखाधड़ी के रूप में भी जाना जाता है.

यह एक ऐसा अपराध है, जिस में कोई व्यक्ति पैसे चुराने के लिए इंटरनेट का उपयोग करता है. जालसाज किसी भी व्यक्ति को निशाना बना कर उस की व्यक्तिगत जानकारी हासिल करने के लिए एसएमएस, काल, ईमेल, वाट्सऐप मैसेज या अन्य तरीकों से संपर्क कर सकता है.

जालसाज एक व्यक्ति या कोई संस्था, गिरोह या फरजी कंपनी के रूप में हो सकता है. वह संवेदनशील जानकारी के लिए कंप्यूटर, मोबाइल डिवाइस या नेटवर्क को हैक करने के लिए ऐप्स या वेबसाइटों के लिए वैसा लिंक भेज सकते हैं, जो संदिग्ध होता है.

उस के जरिए बैंक खाता संख्या, क्रेडिट कार्ड विवरण, सामाजिक सुरक्षा संख्या और व्यक्तिगत जानकारी पर कब्जा करने की मंशा होती है.

राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल:

राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल भारत सरकार की एक औनलाइन वेबसाइट है, जो पीड़ितों/शिकायतकर्ताओं को साइबर धोखाधड़ी सहित साइबर अपराध की औनलाइन शिकायत करने में मदद करती है. यह पोर्टल साइबर अपराधों से संबंधित शिकायतों को लेता है और महिलाओं और बच्चों के खिलाफ साइबर अपराधों पर विशेष ध्यान देता है.

2 मिनट में औनलाइन रिपोर्ट करें दर्ज

साइबर धोखाधड़ी सहित साइबर अपराध के बारे में कोई भी शिकायत दर्ज कराने के लिए राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल (हेल्पलाइन नंबर -1930) पर संपर्क किया जा सकता है. आप अपनी शिकायत दर्ज कराने के लिए नजदीकी पुलिस स्टेशन से भी संपर्क कर सकते हैं. आप अपनी शिकायत **cybercrime.gov.in** के जरिए औनलाइन भी दर्ज करा सकते हैं.

पोर्टल पर शिकायत दर्ज करने के स्टेप

-अपना वेब ब्राउजर खोलें और वेबपेज **https://cybercrime.gov.in** पर जाएं.

-होमपेज पर 'फाइल अ कंप्लेंट' पर क्लिक करें.

-अगले पृष्ठ पर नियम और शर्तें पढ़ें और स्वीकार करें.

-'रिपोर्ट अदर साइबर क्राइम' बटन पर क्लिक करें.

-'नागरिक लौगिन' विकल्प चुनें और नाम, ईमेल, फोन नंबर आदि सहित आवश्यक विवरण दर्ज करें.

-अपने रजिस्टर्ड फोन नंबर पर भेजे गए ओटीपी को दर्ज करें और कैप्चा भरें, फिर सबमिट बटन पर क्लिक करें.

-अगले पेज पर फार्म में उस साइबर क्राइम की डिटेल्स दर्ज करें, जिस की आप रिपोर्ट करना चाहते हैं.

-फार्म को 4 भागों में बांटा गया है, सामान्य जानकारी, पीड़ित की जानकारी, साइबर अपराध की जानकारी और पूर्वावलोकन. प्रत्येक अनुभाग में सभी प्रासंगिक विवरण भरें और यह सुनिश्चित करने के लिए भरी गई जानकारी का पूर्वावलोकन करें कि यह सही है.

-जानकारी की समीक्षा करने के बाद 'सबमिट' बटन पर क्लिक करें.

-आप को एक घटना विवरण पृष्ठ पर निर्देशित किया जाएगा. यहां, विवरण और अपराध के सहायक साक्ष्य, जैसे स्क्रीनशौट या फाइल का उल्लेख करें. विवरण दर्ज करने के बाद 'सहेजें और अगला' पर क्लिक करें.

-अगले पृष्ठ पर कथित संदिग्ध के बारे में जानकारी की आवश्यकता है. यदि आप के पास संदिग्ध के बारे में कोई जानकारी है तो विवरण भरें.

-अब जानकारी को वेरिफाई करें और 'सबमिट' बटन पर क्लिक करें.

-आप को एक पुष्टिकरण संदेश प्राप्त होगा कि आप की शिकायत दर्ज कर ली गई है और आप को शिकायत आईडी और आप की शिकायत से संबंधित अन्य विवरणों के साथ एक ईमेल भी प्राप्त होगा. बस हो गई रिपोर्ट दर्ज.

रिपोर्ट दर्ज करने के लिए दस्तावेज

यदि आप औनलाइन लेनदेन, लौटरी घोटाले, एटीएम लेनदेन, फरजी काल या इंटरनेट बैंकिंग से संबंधित साइबर धोखाधड़ी का मामला दर्ज कर रहे हैं तो आप को बैंक विवरण, पता और आईडी प्रमाण जैसे सहायक साक्ष्य के साथ कथित धोखाधड़ी लेनदेन का प्रमाण संलग्न करना होगा और कोई संदिग्ध संदेश या ईमेल जो आप को प्राप्त हुआ हो, उस की भी जानकारी दे दें.

-संवाददाता ❍



युवकों की बर्बर हत्या

कुल्चे खाने गए युवक का कत्ल

वारदात लुधियाना (पंजाब) की है, जहां 22 नवंबर, 2023 को 2 बाइक सवारों द्वारा 20 वर्षीय युवक की उस समय तेज धारदार हथियार से हत्या कर दी, जब वह अपने दोस्त के साथ हैबोवाल के रघुबीर पार्क में कुल्चे खाने गया था. हमलावरों ने उस के



दोस्त पर भी हमला किया, जिस से वह घायल हो गया. दिनदहाड़े वारदात को अंजाम दे कर बाइक सवार भाग निकले.

पुलिस कमिश्नर कुलदीप सिंह चहल के जौइन करने के एक दिन बाद हुई इस हत्या के बारे में एसपी मंदीप सिंह संधू ने बताया कि वारदात की तहकीकात घटनास्थल के आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज की मदद और मृतक के घायल दोस्त से की गई.

मृतक रघुबीर पार्क का रहने वाला था और वह अपने दोस्त आशु के साथ बाइक से कुल्चे खाने गया था. वहीं पर उन को बाइक सवार 2 युवक मिल गए थे. उन के साथ मृतक राहुल का करीब डेढ़ साल पहले भी झगड़ा हो चुका था.

वे उस रोज भी मिलते ही झगड़ पड़े. लड़ाई तूतूमैंमैं से शुरू हुई और देखते ही देखते मारपीट होने लगी. इसी दौरान युवकों ने तेजधार हथियार निकाल लिया और राहुल पर ताबड़तोड़ वार कर दिए.



राहुल इस वार से खून से लथपथ वहीं जमीन पर गिर कर तड़पने लगा. इस झगड़े का बीचबचाव करने पहुंचे आशु पर भी आरोपियों ने हमला कर दिया, जिस से वह भी घायल हो गया.

मरणासन्न राहुल को छोड़ कर दोनों हमालवर युवक फरार हो गए. आशु ने तुरंत राहुल के घर वालों को सूचना दी और वहां लोगों की मदद से राहुल को डीएमसी अस्पताल पहुंचाया, जहां राहुल को डाक्टरों ने मृत घोषित कर दिया. ❍

नाबालिग ने चाकू से गोदा

घटना उत्तरपूर्वी दिल्ली की है, जहां एक युवक की हत्या 21 नवंबर,2023 को चाकू गोद कर कर दी गई. दिल्ली पुलिस ने सीसीटीवी फुटेज के आधार पर इस वारदात को अंजाम देने के आरोप में एक नाबालिग को गिरफ्तार किया. पूछताछ में उस ने हत्या के पीछे की जो मंशा बताई, वह बेहद चौंकाने वाली थी.



उत्तरपूर्वी दिल्ली के डीसीपी जौय टिर्की ने बताया कि उन्हें सूचना मिली कि एक लड़के को चाकू मार दिया गया है और घायल को अस्पताल भेज दिया गया है, जहां डाक्टरों ने युवक को मृत घोषित कर दिया.

मामला सामने आने के बाद पुलिस ने सीसीटीवी फुटेज की जांच की और आरोपी की पहचान की. इस मामले में हत्यारोपी 16 साल का नाबालिग लड़का निकला.

डीसीपी के मुताबिक आरोपी किशोर ने इस घटना को अंजाम देने के लिए जिस चाकू का इस्तेमाल किया, उसे पुलिस ने बरामद कर लिया है. आरोपी ने बताया कि उस का मकसद चोरी की वारदात को अंजाम देना था. आरोपी पैसे चुराने की कोशिश कर रहा था, जब पीड़ित ने विरोध किया तो पहले उस का गला दबाया और फिर चाकू मार दिया. ❍

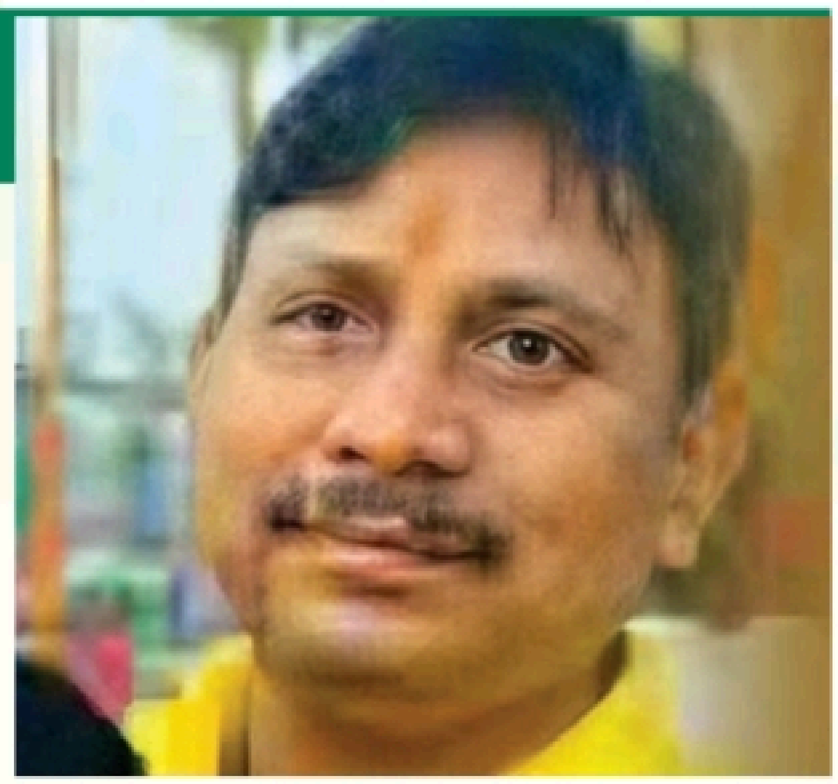
एयरफोर्स जवान का रेता गला

यह वारदात बिहार के मुख्यमंत्री के क्षेत्र नालंदा जिले की है. एयरफोर्स का जवान छठ पूजा में घर आया था. उस की 3 साल पहले ही शादी हुई थी. रहुई थाना इलाके के इमामगंज गांव की गली में 21 नवंबर को दिनदहाड़े बदमाशों ने धारदार हथियार से उस की गला रेत कर हत्या कर दी और फरार हो गए.

परिजन तुरंत उसे ले कर सदर अस्पताल पहुंचे, लेकिन डाक्टर उसे बचा नहीं पाए. मृतक जवान की पहचान भुवनेश्वर प्रसाद के 34 वर्षीय बेटे रंजीत कुमार के रूप में हुई.

घटना के संबंध में बताया जाता है कि मृतक रंजीत कुमार छठ पूजा पर छुट्टी ले कर गांव आया था. उस के घर वालों का आरोप है कि पहले के विवाद को ले कर घटना को अंजाम दिया गया है. रंजीत कुमार दिल्ली में एयरफोर्स में टेक्नीशियन के पद पर काम करता था.

मृतक के बड़े भाई धर्मवीर ने बताया कि गांव में किसी से पहले उस का विवाद हो गया था, लेकिन उस मामले को गांव के स्तर पर सुलझा लिया गया था. धर्मवीर ने बताया कि गांव की गली से रंजीत गुजर रहा था. इसी दौरान बदमाशों ने धारदार हथियार से गला रेत कर उस की हत्या कर दी.



रहुई थाने के एसएचओ नंदन कुमार सिंह ने बताया कि सूचना मिलने पर पुलिस सदर अस्पताल पहुंची थी, लेकिन परिजन शव ले कर कहीं दूसरे जगह चले गए थे. मामले की जांच की जा रही है. ●

ठाणे, महाराष्ट्र

ठाणे शहर में साइबर अपराधियों ने पेमेंट गेटवे सेवा मुहैया कराने वाली एक कंपनी के खाते को हैक कर विभिन्न बैंकों के खातों से करोड़ों की रकम साफ कर दी. आप भी जानें कि इन साइबर अपराधियों ने इतने सुरक्षित सिस्टम में आखिर कैसे सेंध लगाई?



पेमेंट गेटवे हैक कर 16 हजार करोड़ का फ्रौड

❑ शंभु सुमन

मुंबई में दादर वेस्ट स्थित स्लम बस्ती की रहने वाली सबीना पैसे निकालने अपने बैंक गई थी. उस के पास एटीएम कार्ड था, लेकिन वह ब्लौक हो चुका था. वह एक मेड थी और जहां काम करती थी, उस की मालकिन ने उसे औनलाइन 20 हजार रुपए भिजवाए थे. यह पेमेंट मालकिन ने अपने खाते से नहीं, बल्कि अपने पति के अकाउंट से कराया था.

उस के मोबाइल पर इस का मैसेज तो नहीं आया था, फिर भी वह आश्वस्त थी कि उस के अकाउंट में पैसे अवश्य आ गए होंगे. कारण ऐसा पहले भी कई बार हो चुका था, लेकिन उस के खाते में पैसे आ गए थे और अकसर अपने एटीएम कार्ड से ही पैसे निकालती रही थी.

पैसे निकालने के लिए सबीना बैंक गई और पैसे निकालने का फार्म भरवा कर कैशियर के पास पहुंची तो कैशियर ने बताया कि तुम्हारा अकाउंट बंद है, पहले इसे ऐक्टिव करा लो. उस के बाद में पैसे निकल पाएंगे.

कैशियर की बात सुन कर सबीना दूसरे काउंटर पर पहुंच कर विदड्रा की परची आगे बढ़ाते हुए बोली, ''मैडमजी, कैशियर बोल रहे हैं कि मेरा अकांउट बंद है!''

''इधर दो, चैक करती हूं. तुम्हारा अकाउंट है?'' उस काउंटर पर बैठी बैंक कर्मचारी बोली.

सबीना ने पैसा निकालने की परची मैडम की ओर बढ़ा दी. बैंक कर्मचारी परची ले कर कंप्यूटर पर चैक करने लगी. कुछ समय बाद



बोली, ''तुम्हें केवाईसी करवानी होगी. अकाउंट बंद है. जाओ रिसैप्शन के पास इस का फार्म ले लो.'' कहते हुए उस कर्मचारी ने परची सबीना को वापस कर दी.

''मैडमजी, पैसा कैसे निकलेगा?'' सबीना उदासी के साथ बोली.

''केवाईसी के बाद. फार्म के साथ आधार कार्ड और पैन कार्ड की फोटोकापी लगाना. अपनी फोटो भी चिपका देना. फार्म जमा करने के बाद ही तुम्हारा अकाउंट एक्टिवेट होगा.''

''लेकिन मैडम, पैसा? मुझे पैसे की सख्त जरूरत है!'' सबीना फिर बोली.

''तुम्हारा पैसा कहीं नहीं गया. अकाउंट एक्टिवेट होते ही 2 दिन में ट्रांजैक्शन शुरू हो जाएगा. अभी कहीं से उधार ले कर काम चला लो.'' कर्मचारी उसे समझाते हुई बोली.

उस के कहे अनुसार सबीना ने अगले रोज केवाईसी का फार्म भर कर बैंक में जमा कर दिया. उस के बाद उसे 2 दिन बाद पासबुक ले कर आने को कहा.

2 दिन बाद माह का दूसरा शनिवार था. उस रोज बैंक में छुट्टी होने के कारण सबीना सोमवार को बैंक जा पाई थी. इसी महिला कर्मचारी के पास जा कर उस ने अपने अकाउंट के बारे में पता किया. उन्होंने मासूमियत के लहजे में सबीना को बताया कि उस के अकाउंट में कुछ प्रौब्लम आ रही है, जा कर पीछे बैठी मैडम से मिल लो.

सबीना प्रोबेशनरी औफिसर के पास गई. उन से अपने अकाउंट के बारे में पूछा. उन्होंने

फाइलों में से उस की केवाईसी का फार्म निकाला और पूछा, ''क्या तुम ने औनलाइन केवाईसी करवाई थी?''

केवाईसी का चक्कर

यह नया सवाल सुन कर सबीना भौचक बनी रही. कुछ सेकेंड बाद धीमे से बोली, ''नहीं मालूम.''

''अरे, किसी ने तुम से फोन कर के केवाईसी के लिए कहा था?'' मैडम ने पूछा.

''नहीं तो!'' सबीना बोली.

''कोई बात नहीं, तुम्हारे अकाउंट की प्रौब्लम सौल्व करने में वक्त लगेगा. मैं ने इस के लिए आगे कंप्लेन डाल दी है.'' मैडम बोली.

''आज नहीं होगा?'' सबीना ने पूछा.

''नहीं, हफ्ता भर लगेगा, लेकिन हो सकता है, एकदो दिनों में भी हो जाए.'' मैडम बोली.

इसी बीच असिस्टेंट मैनेजर भी वहां आए. वह अपने हाथ में सबीना की तरह ही किसी दूसरे का फार्म लिए हुए थे. वह बोले, ''निशा, इसे देखना यह क्यों बंद है?...और हां, इस में क्या प्रौब्लम आ रही है?''

''इस का दूसरा बैंक है, जो अब यूनियन बैंक औफ इंडिया में मर्ज हुआ है. पिछले अकाउंट का डेटा शो नहीं कर रहा है. उस का डेट औफ बर्थ नहीं दिखा रहा है. उस की वजह से आगे



इसी थाने में दर्ज हुआ था मामला

लौगइन करने नहीं दे रहा है.'' असिस्टेंट मैनेजर को समझाते हुए निशा ने कहा.

''तो क्या करना है?...सर्वर की प्रौब्लम तो नहीं न! इन दिनों तो सर्वर ठीक चल रहा है.''

''नहीं, ऐसा कुछ नहीं लगता है. वैसे मैं ने इसे भी कंप्लेन में डाल दिया है...औनलाइन ट्रांजैक्शन के गेटवे या यूपीआई का भी कोई कारण हो सकता है.'' दूसरी मैडम बोली.

सबीना दोनों की बातें चुपचाप सुनती रही. वह समझ नहीं पा रही थी कि दोनों बैंककर्मी किस तरह से उस की समस्या का समाधान निकाल रही हैं? उन की बातें खत्म हो गई तब वह बोली, ''इस के लिए मैनेजर से मिलना होगा मैडमजी.''

''मैनेजर आने ही वाले हैं, उन से भी बात करती हूं.'' असिस्टेंट मैनेजर बोले.

इसी बीच एक लंबा सा आदमी उन के पास आया और बोला, ''क्या बात है? क्या प्रौब्लम आ रही है. केवाईसी की कई शिकायतें आ रही हैं. एक आदमी केबिन में बैठा हुआ है, उसे पैसा जमा करवाना है. बोल रहा है, उस का अकाउंट क्लोज शो हो रहा है.''

''उस का भी केवाईसी नहीं होगा.'' असिस्टेंट मैनेजर बोले.

''नहीं, ऐसा नहीं है. उस ने पिछले हफ्ते ही ढाई लाख रुपए जमा करवाए हैं. यह रही उस की परची. तो फिर ऐसा क्यों?... चेक करो! इन दिनों बैंकिंग गेटवे को ले कर भी अनेक शिकायतें आ रही हैं. हैकर उसे ही टारगेट करने लगे हैं. इसलिए सतर्क हो कर अकाउंट हैंडल करो.''

प्रोबेशनरी औफिसर सबीना की ओर मुखातिब हो कर बोली, ''तुम्हें चिंता करने की जरूरत नहीं है. जैसा मैडम ने कहा है, तुम एक हफ्ते बाद आ कर पता कर लेना.'' इस आश्वासन के बावजूद सबीना निराश मन से अपनी खोली लौट आई.

उस के जाने के बाद बैंक मैनेजर ने दोनों मैडम को हिदायत देते कहा कि महाराष्ट्र की ठाणे पुलिस एक कंपनी के पेमेंट गेटवे सिस्टम को हैक करने के सिलसिले में 3 लोगों को

देश में 77.41 फीसदी पहुंचा फाइनेंशियल फ्रौड

साइबर क्राइम में फाइनेंशियल फ्रौड टौप पर पहुंच चुका है. आईआईटी कानपुर इक्यूबेटेड स्टार्टअप के लिए किए गए एक अध्ययन में पाया गया कि बीते 3 सालों यानी जनवरी 2020 से जून 2023 तक देश में 75 फीसदी से अधिक साइबर अपराध फाइनेंशियल फ्रौड के सामने आए हैं.

इन में पहचान छिपा कर धोखाधड़ी करना, साइबर धमकी, सेक्सटिंग, ईमेल फिशिंग आदि मुख्य हैं. यहां तक कि सोशल मीडिया से संबंधित 12.02 फीसदी औनलाइन अपराध शामिल हैं.

इस संबंध में आईआईटी कानपुर में स्थापित एक गैरलाभकारी स्टार्टअप फ्यूचर क्राइम रिसर्च फाउंडेशन ने अपने जारी किए गए श्वेतपत्र 'ए डीप डाइव इनटू साइबर क्राइम ट्रेंड्स इंपैक्टिंग इंडिया' में विस्तार से जानकारी दी है.

यह अध्ययन चिंतित करने वाला है, क्योंकि इस में साइबर अपराध के प्रमुख रूप में जिस तरह से औनलाइन फाइनेंशियल फ्रौड को बताया गया है, वह 77.41 प्रतिशत तक पहुंच चुका है. फ्यूचर क्राइम रिसर्च फाउंडेशन (एफसीआरएफ) ने साइबर अपराधों को अलगअलग श्रेणियों में विभाजित कर विस्तार से रिपोर्ट तैयार की है. वह इस प्रकार है—

औनलाइन वित्तीय धोखाधड़ी: **औनलाइन वित्तीय धोखाधड़ी प्रमुख श्रेणी है, जिस में व्यक्तियों की वित्तीय जानकारी और संपत्ति का शोषण करने के उद्देश्य से साइबर अपराधों की एक विस्तृत शृंखला तैयार की जाती है. एफसीआरएफ रिपोर्ट के अनुसार कोरोना काल के बाद से इस में बेतहाशा वृद्धि हुई.**

व्यावसायिक ईमेल समझौता/ई-मेल अधिग्रहण (0.24%): **भले ही इस का प्रतिशत कम हो, लेकिन इस हमले से डेटा हेराफेरी और वित्तीय नुकसान हो सकते हैं.**

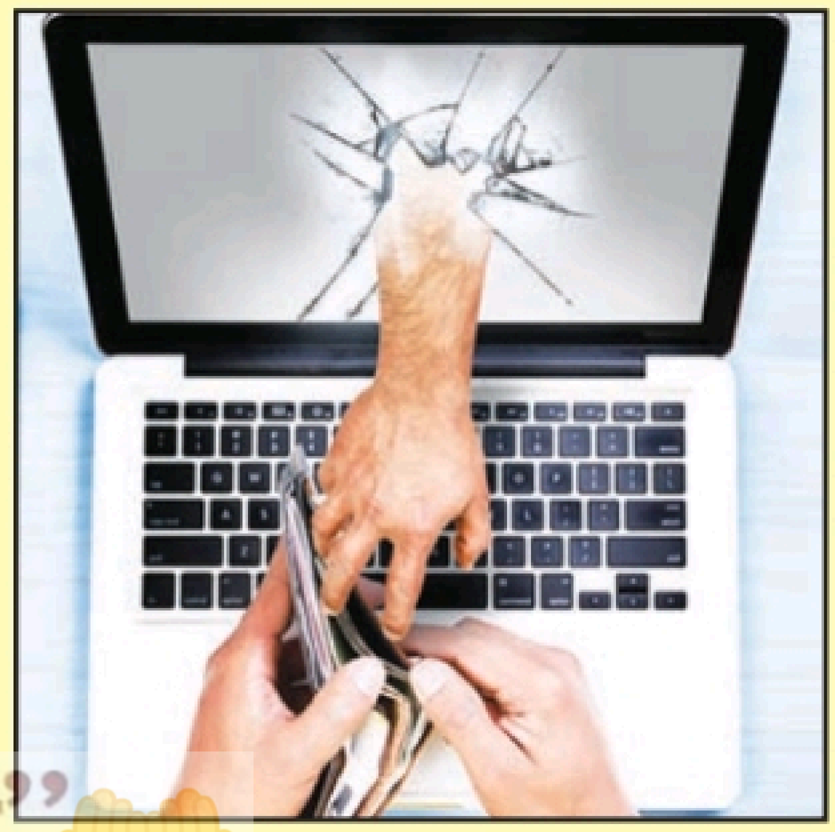
डेबिट/क्रेडिट कार्ड धोखाधड़ी/सिम स्वैप धोखाधड़ी (11.27%): **कार्ड से संबंधित धोखाधड़ी एक महत्त्वपूर्ण खतरा बनी हुई है. अपराधी अपनी अवैध पहुंच बना कर कार्ड की जानकारी और सिम कार्ड को निशाना बना लेते हैं.**

डीमैट/डिपाजिटरी धोखाधड़ी (0.61%): **इस धोखाधड़ी के लिए डीमैट खातों में हेरफेर करना कम है, लेकिन इस पर ध्यान देने की आवश्यकता बताई गई है.**

ई-वालेट संबंधी धोखाधड़ी (3.45%): **ई-वालेट की लोकप्रियता से इस में भी सेंध लगाए जाने की वारदातें हो रही हैं.**

फरजी काल/विशिंग (5.32%): **धोखाधड़ी वाली काल और विशिंग एक महत्त्वपूर्ण खतरा बनी हुई है, जिस से उपयोगकर्ताओं की व्यक्तिगत जानकारी का खुलासा करते समय सावधानी बरतने की आवश्यकता है.**

इंटरनेट बैंकिंग से संबंधित धोखाधड़ी (9.28%): **औनलाइन बैंकिंग से संबंधित धोखाधड़ी की औनलाइन वित्तीय लेनदेन में हो जाती है.**



यूपीआई धोखाधड़ी (47.25%): **यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (यूपीआई) सब से प्रचलित औनलाइन वित्तीय धोखाधड़ी के रूप में सामने आती है.**

गिरफ्तार कर चुकी है. उन पर पेमेंट गेटवे सर्विस देने वाली एक कंपनी के अकाउंट को हैक करने का आरोप है. वे वहां से पैसा ले कर अलगअलग दूसरे अकाउंट में ट्रांसफर करने का काम करते थे.

मैनेजर ने यह भी बताया कि यह बैंकों के एक साथ सैकड़ों खातों में की गई सेंधमारी साइबर क्राइम के हैकर द्वारा की गई है. अभी तक की बहुत बड़ी घटना बताई जा रही है. इस हैकिंग में 16 हजार 180 करोड़ रुपए की धोखाधड़ी की आशंका है.

''किस अकाउंट में ऐसा हुआ सर, रिटेल या बिजनैस में ?'' प्रोबेशनरी औफिसर ने जिज्ञासावश पूछा.

''यही तो चिंता की बात है, वह इन में से किसी में नहीं हुआ, साइबर हैकर्स ने एस्क्रो बैंक अकाउंट को हैक किया है.'' मैनेजर बोले.

''एस्क्रो को ? लेकिन वह काफी सेफ होता है,'' दूसरी मैडम बोली.

''सेफ होता है, लेकिन जान लो साइबर क्रिमिनल कुछ भी कर सकते हैं. सतर्क रहने की बात है कि एस्क्रो अकाउंट (देखें बौक्स) आमतौर पर तीसरे पक्ष पेमेंट गेटवे द्वारा रखे जाते हैं, जो 2 पक्षों के बीच लेनदेन प्रक्रियाओं के दौरान अस्थाई रिपौजिटरी के रूप में काम करते हैं.

बैंक मैनेजर ने दोनों मैडम को हिदायत देते कहा कि महाराष्ट्र की ठाणे पुलिस एक कंपनी के पेमेंट गेटवे सिस्टम को हैक करने के सिलसिले में 3 लोगों को गिरफ्तार कर चुकी है. उन पर पेमेंट गेटवे सर्विस देने वाली एक कंपनी के अकाउंट को हैक करने का आरोप है. वे वहां से पैसा ले कर अलगअलग दूसरे अकाउंट में ट्रांसफर करने का काम करते थे.

मामले की हुई पहली शिकायत

साइबर अपराध की यह बड़ी घटना मुंबई से सटे ठाणे जिले की है, जिस ने 14 अप्रैल, 2023 में पूरे शहर को झकझोर कर रख दिया था. अज्ञात हैकरों ने ठाणे स्थित एक कंपनी के एस्क्रो बैंक खाते में सफलतापूर्वक घुसपैठ कर ली थी. ऐसा कर साइबर जालसाजों ने करीब 25 करोड़ रुपए का चूना लगा दिया था.

इस मामले की जांच के सिलसिले में ठाणे साइबर सेल ने खुलासा किया कि हैकर्स ने इसे निशाने पर ले लिया था और सेफएक्सपे टेक्नोलौजी प्राइवेट लिमिटेड (एसटीपीएल) के पेमेंट गेटवे में सेंध लगाने में कामयाब हो

क्या है एस्क्रो अकाउंट

अभी तक सामान्य लोग सेविंग, करंट, फिक्स या रेकरिंग खातों के बारे में ही सुनते आए हैं. इन के अलावा शेयर का कारोबार करने वालों के बीच डीमेट अकाउंट उपयोग में लाया जाता है. इसी तरह से जो लोग नए घरों में निवेश करने की योजना बनाते हैं, वे अकसर एस्क्रो अकाउंट का उपयोग करते हैं. यह खास तरह का अकाउंट होता है. इसे समझने से पहले अंगरेजी शब्द 'एस्क्रो' का अर्थ जानना भी जरूरी है.

औक्सफोर्ड लैंग्वेज डिक्शनरी के अनुसार एस्क्रो का अर्थ है 'एक बांड, डीड या अन्य दस्तावेज, जो किसी तीसरे पक्ष की कस्टडी में रखा जाता है और यह एक दी गई शर्त पूरी होने पर ही प्रभावी होता है. इस अकाउंट के जरिए किसी भी लेनदेन के लिए कम से कम 2 पक्षों का शामिल होना आवश्यक है. एक सेवा या सामान देता है और दूसरा इस के बदले में भुगतान करता है. सेवा देने यानी सर्विस प्रदान करने वाले पैसे को बताते हैं, जबकि पैसा चुका कर सर्विस या सामान लेने वाला खरीदार होता है.



एस्क्रो अकाउंट को चलाने के लिए तीसरे पक्ष की जरूरत होती है, जिसे एस्क्रो एजेंट कहा जाता है. वह दोनों पक्षों के लिए पैसे की सुरक्षा की गारंटी देता है और हर लेनदेन में शामिल होता है. सरल शब्दों में कहें कि एक एस्क्रो अकाउंट एक तीसरे पक्ष के नियंत्रण में बना एक बैंक अकाउंट है. इस की एक कानूनी वित्तीय व्यवस्था होती है, जिस के तहत एक तीसरा पक्ष लेनदेन में शामिल 2 पक्षों के लिए संपत्ति के धन को न केवल रखता है, बल्कि नियंत्रित भी करता है.

वह एक पूर्वनिर्धारित समझौते में बताए गए सभी नियमों और शर्तों को पूरा करने के बाद इसे लेने वाले के नाम पर जारी करता है. एक एस्क्रो अकाउंट धन और प्रतिभूतियों जैसी संपत्ति रख सकता है. इस प्रकार लेनदेन में घोटालों और धोखाधड़ी की संभावना कम होती है. एस्क्रो अकाउंट खोलना एक जटिल प्रक्रिया है, क्योंकि सभी बैंक इन सेवाओं की पेशकश नहीं करते हैं.

एक एस्क्रो अकाउंट दोनों पक्षों के लिए लेनदेन को सुरक्षित बनाता है. इस के लिए विक्रेता को चिंता करने की जरूरत नहीं है कि खरीदार भुगतान नहीं करेगा और खरीदार भी इस अकाउंट की बदौलत निश्चिंत रहता है कि उस ने जिस सामान या सर्विस के लिए भुगतान किया है, वह उसे अवश्य मिलेगा. उस पैसे की सुरक्षा की जिम्मेदारी बैंक के माध्यम से तीसरा पक्ष लेता है. इस का इस्तेमाल रियल एस्टेट क्षेत्र में किया जाता है.

रियल एस्टेट (विनियमन और विकास) अधिनियम के प्रावधानों के तहत एक आवास परियोजना के लिए घर के खरीदारों से प्राप्त होने की एडवांस राशि का 70 फीसदी एक एस्क्रो अकाउंट में जमा किया जाता है, जिसे भारत में एक अनुसूचित बैंक द्वारा प्रबंधित किया जाता है. इसी तरह कानून के मुताबिक किसी भी आवास परियोजना के लिए बैंकों से लिए गए ऋण का 70 फीसदी इस एस्क्रो अकाउंट में रखा जाना चाहिए. ❍

गए थे. इस की शिकायत ठाणे के श्रीनगर थाने में दर्ज करवाई गई थी. शिकायत दर्ज होने के बाद मामला सामने आया. जांच के दौरान साइबर सेल की टीम को 16,180 करोड़ रुपए से अधिक के संदिग्ध लेनदेन का पता चला था.

महाराष्ट्र के ठाणे शहर में एक गिरोह ने पेमेंट गेटवे सेवा मुहैया कराने वाली एक कंपनी के खाते को हैक कर विभिन्न बैंकों के अलगअलग खातों से यह बड़ी रकम निकाल ली थी. इस मामले में पुलिस को पहली कामयाबी 12 अक्तूबर को मिली थी. इस में शामिल 2 लोगों को गिरफ्तार किया गया था.

पुलिस द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार ठाणे पुलिस ने मुंबई में भायंदर के रहने वाले 26 साल के अनूप दुबे और एक फर्म में पार्टनर 42 वर्षीय मुंबई निवासी संजय नामदेव गायकवाड़ को गिरफ्तार किया था. इसी के साथ उन्होंने बताया कि यह धोखाधड़ी बहुत पहले से अंजाम दी जा रही थी.

260 बैंक स्टेटमेंट्स की हुई जांच

यह घोटाला जुलाई, 2023 में तब सामने आया, जब सेफएक्सपे कंपनी की कानूनी सलाहकार मनाली साठे ने ठाणे के श्रीनगर पुलिस स्टेशन में अज्ञात व्यक्तियों के खिलाफ आईपीसी की धारा 420, 409, 120 (बी), 34 आईटी ऐक्ट के तहत मामला दर्ज करवााया. जुलाई में आईटी ऐक्ट की धारा 65, 66(सी), 66(डी) के तहत अपराध की जांच ठाणे साइबर सेल द्वारा की जाने लगी.

अपराध की जांच करते समय पहली नजर में यह पाया गया कि 25 करोड़ में से 1,39,19,264 की राशि वाशी और बेलापुर, नवी मुंबई में कार्यालयों वाली कंपनी रियाल एंटरप्राइजेज को ट्रांसफर की गई थी. ठाणे पुलिस के एक अधिकारी जब उन के औफिसों में गए, तब वहां से उन्हें कई बैंक खाते और अनुबंध मिले.

अनुबंधों की जांच से पता चला कि नौपाड़ा पुलिस स्टेशन की सीमा के भीतर बालगणेश टावर, स्टेशन रोड, ठाणे के पते पर विभिन्न



ठाणे पुलिस की गिरफ्त में आरोपी

व्यक्तियों के नाम पर जाली दस्तावेजों के माध्यम से 5 साझेदारी फर्में स्थापित की गई थीं.

अनेक बैंक खाते आए निशाने पर

रियाल एंटरप्राइजेज के कर्मियों की जांच के दौरान करीब 260 बैंक खाते और विभिन्न साझेदारी समझौते मिले. जिन 5 लोगों पर मामला दर्ज किया गया है, उन पर विभिन्न अपंजीकृत साझेदारी फर्मों के नाम पर बैंक खाते खोल कर झूठे दस्तावेजों के साथ सरकार को धोखा देने का आरोप लगाया गया है.

क्राइम ब्रांच के आईटी सेल की पुलिस ने पाया कि अज्ञात हैकरों ने ठाणे में सब से बड़ी साइबर चोरियों में से एक इस वारदात को अंजाम दे कर एक कंपनी के एस्क्रो बैंक खाते से लगभग 25 करोड़ रुपए निकाल लिए थे. हैकर्स कंपनी को निशाने पर ले कर पेमेंट गेटवे को सफलतापूर्वक तोड़ने में कामयाब हो गए थे. इस के लिए उस ने वालेट बैलेंस बढ़ाने और कंपनी के पोर्टल तक पहुंच को हासिल करने के लिए इस के डेटाबेस में हेरफेर की थी.

साइबर अपराधियों ने बिजनैस क्रेडेंशियल्स का उपयोग कर अज्ञात बैंक खातों में कई लेनदेन को अंजाम दिया था. उन के द्वारा धोखाधड़ी की गतिविधियां 14 अप्रैल, 21 अप्रैल और 22 अप्रैल को हुई थीं, जिस में हैकर्स ने कंपनी के एस्क्रो बैंक खाते के माध्यम से कई अज्ञात खाताधारकों को पैसा हस्तांतरित किया था.

इस की भनक लगते ही नैशनल पेमेंट कारपोरेशन औफ इंडिया (एनपीसीआई) को सूचित कर दिया गया था और कुछ लेनदेन पर रोक भी लगा दी गई थी. किंतु तब तक हैकर्स अपना काम कर चुके थे. इस जांच के आधार पर ही ठाणे पुलिस ने आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए पहल की.

जांच करने वाली पुलिस ने बताया कि आरोपियों ने इस इस दौरान ब्लैकमनी को सफेद करने के लिए फरजी दस्तावेजों का भी इस्तेमाल किया था. इसी के साथ पुलिस ने संजय सिंह, अमोल अंडाले उर्फ अमन, केदार उर्फ समीर दिघे, जितेंद्र पांडे और एक अन्य अज्ञात व्यक्ति के खिलाफ भारतीय दंड संहिता की धारा 420 (धोखाधड़ी) के तहत प्राथमिकी दर्ज की थी. इस में 409 (आपराधिक विश्वासघात), 467, 468 (जालसाजी), 120बी (आपराधिक साजिश) और 34 (सामान्य इरादा) और सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम की धाराओं को भी जोड़ दिया गया था.

इस एफआईआर के मुताबिक आरोपी जितेंद्र पांडे पहले 8 से 10 साल तक बैंकों में रिलेशनशिप और सेल्स मैनेजर के तौर पर काम कर चुका था. जल्द ही 41 वर्षीय केदार दिघे, 38 वर्षीय संदीप नकाशे और 47 साल के राम बोहरा की भी गिरफ्तारी हो गई. इस की जानकारी अतिरिक्त पुलिस आयुक्त (अपराध) डा. पंजाबराव उगाले ने दी थी.

इस साइबर क्राइम से जुड़े और भी कई तार सामने आने बाकी हैं. अपराध शाखा की आईटी सेल कथा लिखे जाने तक इस से संबंधित फरजी अकाउंट खोले जाने, जालसाजी के इस्तेमाल किए जाने के लिए कंपनियां बनाने से ले कर मनी लौंड्रिंग जैसी आपराधिक गतिविधियों समेत रियल इस्टेट से जुड़ी कंपनियों पर भी नजर रखे हुए है. ●

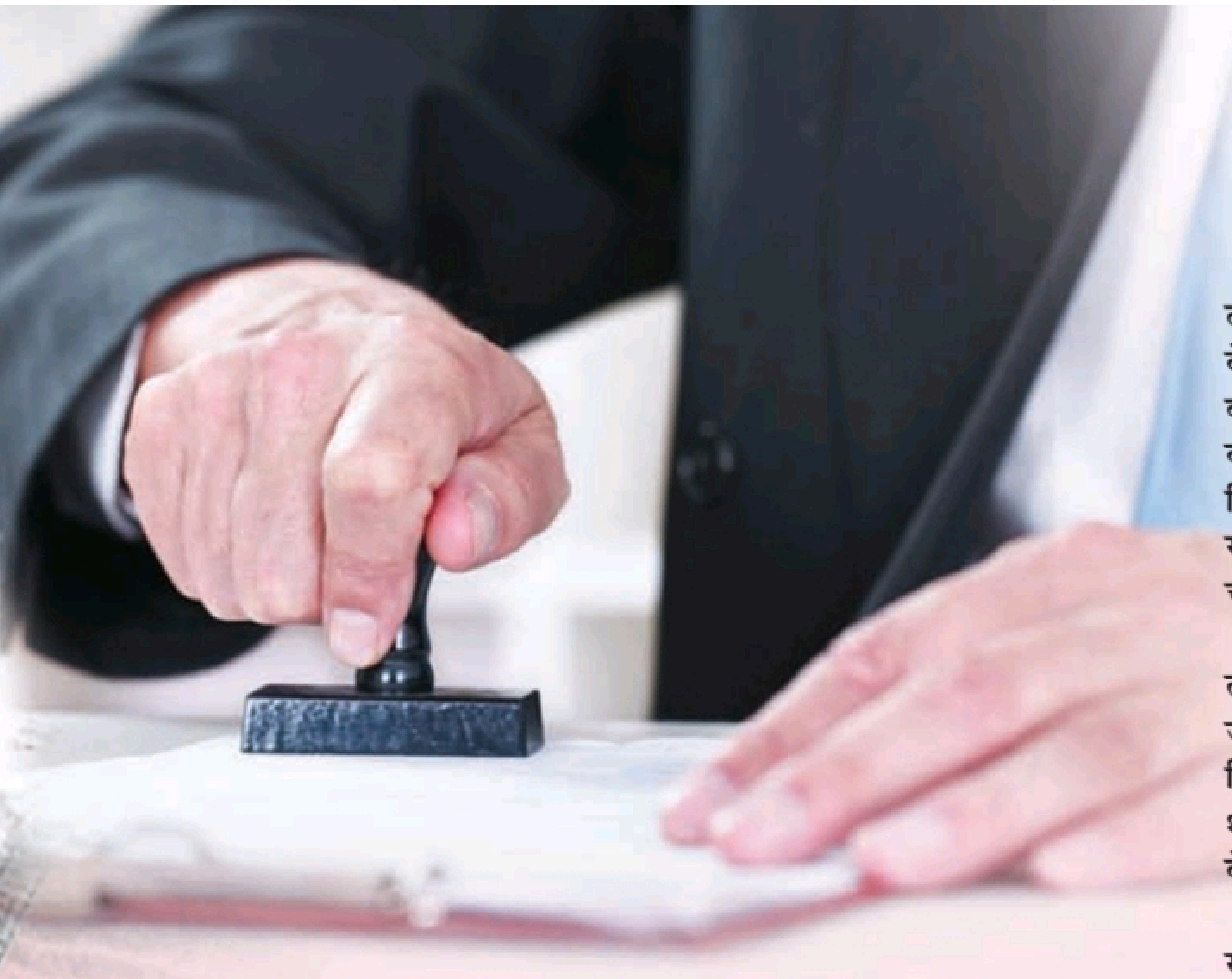
देहरादून, उत्तराखंड

बरसों से खाली पड़ी और सरकारी जमीनों के फरजी कागजात तैयार कर उन्हें बेचने वाला पूरा गैंग देहरादून में धड़ल्ले से अपना काम कर रहा था. इस गैंग में न सिर्फ सरकारी कर्मचारी बल्कि वकील भी शामिल थे. गैंग के शातिर लोग फरजी कागजात इस तरह तैयार कराते थे कि...



जमीन हड़पने वाले भूमाफिया

❑ जगदीश प्रसाद शर्मा 'देशप्रेमी'



जमीन हड़पने वाले गिरोह के लोग देहरादून में काफी समय से खाली पड़ी जमीनों पर नजर रखते थे. जिन जमीनों के मालिक विदेशों में होते थे, सब से पहले वे उसी जमीन को अपना निशाना बनाते थे. उस के बाद मौका मिलते ही जमीनों के फरजी कागजात तैयार कर लिए जाते थे. उन कागजों को दिखा कर जमीन अन्य लोगों को बेच दिया करते थे.

रजिस्ट्री में फरजीवाड़ा करने के लिए 30 से 50 साल पुराने स्टांप पेपरों का इस्तेमाल किया जाता था, ताकि उन्हें उसी वक्त के बैनामे के तौर पर दर्शाया जा सके.

इस के बाद रजिस्ट्रार कार्यालय में फरजी व्यक्तियों के नाम पर उन जमीनों को दर्ज कर दिया जाता था.

उन्हीं दिनों सालों से पुराने स्टांप इकट्ठा करने वाले एक माफिया के.पी. सिंह से जुड़ा मामला भी उजागर हो गया था. इस धंधे में उस ने करोड़ों रुपए कमाए थे और मालामाल हो गया था. सहारनपुर का एक भूमाफिया इस फरजीवाड़े के लिए लंबे समय से पुराने स्टांप इकट्ठा कर रहा था. वह इन स्टांपों को देहरादून और सहारनपुर के स्टांप वेंडरों से खरीदता था. इस के लिए एक स्टांप के लाखों रुपए तक अदा किए गए थे. इन्हीं के आधार पर पुराने मूल बैनामों की प्रतियां जला कर नष्ट कर दी गई थीं और इन के बदले स्टांप को लगा कर नए दस्तावेज बना लिए गए थे.

उत्तराखंड में पुष्कर सिंह धामी सरकार ने 16 जुलाई, 2022 को अचानक एक महत्त्वपूर्ण कदम उठाते हुए देहरादून के डीएम और एसएसपी का तबादला कर दिया था. प्रशासनिक स्तर पर डा. आर. राजेश कुमार की जगह सोनिका को जिला मजिस्ट्रैट बनाए जाने की काफी चर्चा हुई थी. कारण सोनिका अपर सचिव के पद पर तैनात थीं और उन्हें अतिरिक्त जिम्मेदारी के तौर पर जिलाधिकारी का कार्यभार सौंपा गया था.

यह कदम अपने आप में बेहद हैरानी भरा इसलिए था, क्योंकि जिला मजिस्ट्रैट की जिम्मेदारियां आमतौर पर एक पूर्णकालिक कार्य माना जाता है और इन्हें अतिरिक्त सचिव जैसी जिम्मेदारियों के साथ मिलाना सामान्य तौर पर नहीं देखा जाता है.

इस चर्चा के बीच सोनिका के सामने चुनौती दोहरी जिम्मेदारी के निर्वहन की आ गई थी, लेकिन तब तक उन्हें शायद ही मालूम हो पाया था कि उन के सामने भूमाफियाओं का मकड़जाल है और उन के कारनामों से निपटने की भी नई चुनौती आने वाली है.

पद संभालते ही जमीन की खरीदबिक्री में हेराफेरी और फरजीवाड़े की शिकायतें मिलने लगी थीं. कुछ शिकायतें पहले की भी थीं. वे शिकायतें न केवल थानों में दर्ज नईपुरानी एफआईआर की थीं, बल्कि कार्यालय के फोन पर भी पीड़ित मोटी रकम ठगे जाने को ले कर इंसाफ की गुहार करने लगे थे.

शिकायतों में गलत प्लौट बता कर पैसे ठग लेना या फिर एक ही प्लौट को कई लोगों के हाथों बेचने के साथसाथ नकली कागजात बनाने की भी थीं. डीएम सोनिका को यह जान कर आश्चर्य तब हुआ, जब उन्हें मालूम हुआ कि इस धंधे में न केवल भूमाफिया, बल्कि राजस्व अधिकारी, स्टांप वेंडर और दूसरे छोटेबड़े चपरासी से ले कर क्लर्क तक शामिल हैं.

जब उन्होंने पीड़ितों की शिकायतें पढ़ीं, तब वह हैरान रह गईं कि बेची और खरीदी जाने वाली अधिकतर जमीनों के मालिक विदेशों में बसे हुए थे और उन्हें पता ही नहीं था कि उन की पुश्तैनी जमीन भूमाफियाओं के लिए दुधारू गाय बन चुकी है.

साल 2023 के शुरुआत के महीनों में डीएम सोनिका की टेबल पर जमीन से संबंधित शिकायतों का पुलिंदा और भी मोटा हो गया था. इस संबंध में वह कई दफा अपने अधीनस्थ उपजिलाधिकारियों, तहसीलदारों और राजस्व अधिकारियों की बैठकें कर चुकी थीं. उन्हें उन की जिम्मेदारियों से अवगत करवाते हुए आवश्यक निर्देश और जांच के आदेश भी दे चुकी थीं. फिर भी काररवाई के नाम पर कोई नतीजा नहीं आ रहा था.

अंकुर शर्मा ने डीएम को दी गोपनीय जानकारी

इसी सिलसिले में डीएम कार्यालय में एक दिन अंकुर शर्मा नाम के व्यक्ति का फोन आया. शर्मा ने अपनी बात डीएम साहिबा से करवाने की जिद की. उस ने कहा कि उस के पास जमीन फरजीवाड़े के संबंध में कई महत्त्वपूर्ण गोपनीय जानकारियां हैं. डीएम औफिस के कर्मचारी ने उस के आग्रह को गंभीरता से लिया और सीधे डीएम सोनिका से ही बात करवा दी.

शर्मा ने अपना परिचय एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में दिया. उन्हें बताया कि रजिस्ट्रार औफिस में फरजीवाड़े का गोरखधंधा काफी समय से चल रहा है. वहां के अधिकारियों और शहर के भूमाफिया की जबरदस्त सांठगांठ बनी हुई है. एक भूमाफिया गिरोह देहरादून में आसपास की खाली पड़ी उन जमीनों पर नजर रखे हुए है, जिन के मालिक



शहर से बाहर या विदेशों में रहते हैं. यह गिरोह सबरजिस्ट्रार कार्यालय में अधिकारियों और दूसरे कर्मचारियों से मिल कर जमीन के दस्तावेज से असली मालिक का नाम ही बदलवा लेता है. उस के बाद उस जमीन को नए ग्राहक के हाथों बेच देते हैं. इस काम में कई ग्राहक ठगे भी जा चुके हैं. उन्हें लाखों का चूना लग चुका है.

इसी के साथ शर्मा ने बताया कि यह धंधा देहरादून को साल 2000 में उत्तराखंड के नए राज्य की राजधानी बनने के बाद ही शुरू हो गया था. तब से गिरोह की जड़ें काफी मजबूत हो चुकी हैं. पहले वे बेशकीमती जमीनों पर कब्जा करने के लिए सबरजिस्ट्रार कार्यालय से किसी भी प्रौपर्टी के मालिकाना हक की सत्यापित नकल निकाल लेते हैं. उसे खरीदार को दिखा कर जमीन बेच देते हैं.

डीएम सोनिका के लिए यह जानकारी काफी चौंकाने वाली थी. उसी दिन उन्होंने अपने आला अधिकारियों और आयुक्त गढ़वाल रेंज से इस बारे में विचारविमर्श किया. विचारविमर्श के बाद फरजीवाडे की जांच और जालसाज भूमाफियाओं को पकड़ने के लिए एसआईटी गठन करने की योजना बनाई गई.

डीएम द्वारा जल्द ही इस के गठन का निर्देश जारी कर दिया गया और उसे एसएसपी दिलीप सिंह कुंवर के दिशानिर्देश पर एसआईटी गठित भी कर दी गई. टीम में सर्वेश पंवार एसपी (ट्रैफिक) प्रभारी बनाया गया, जबकि सीओ नीरज सेमवाल, कोतवाल (नगर) राकेश गुसाईं, एसआई नवीनचंद जुराल, एसआई प्रदीप रावत और एसओजी के एसआई हर्ष अरोड़ा शामिल कर लिए गए.

एसआईटी को मिली शिकायत

जांच टीम ने अगले ही पल फरजीवाड़े की जांच शुरू कर दी थी. जांच की शुरुआत जमीनों के दस्तावेज तैयार करने वालों पर नजर रखने से की गई. दस्तावेज में जमीन के नकली मालिक और खरीदारों के नाम



एसआईटी द्वारा गिरफ्तार किए गए आरोपी

आदि की जांच करना, वह भी बगैर किसी सबूत के एक बड़ी चुनौती थी. एसआईटी जांच में तेजी लाने के लिए एसएसपी ने जिले के सभी थानों के एसएचओ को जमीन से जुड़ी किसी भी तरह की शिकायत की डिटेल्स मांगी थी. जल्द ही टीम को दिल्ली के पंजाबी बाग के रहने वाले दीपांकुर मित्तल की शिकायत भी मिल गई. मित्तल ने अपनी शिकायत 16 मार्च, 2023 को की थी

उन्होंने अपनी शिकायत में लिखा था, ''नवादा में मेरी एक जमीन है, जो मुझे पिता की 2 साल पहले देहांत के बाद मिल गई थी. यह मेरी पुश्तैनी जमीन है. उस जमीन पर हम खेती करते हैं. हालांकि मेरा उसी जमीन को ले कर ताऊ रवि मित्तल के साथ अदालत में एक विवाद भी चल रहा है.''

उन्होंने आगे लिखा कि देहरादून तहसील में मेरी उसी जमीन का दाखिल खारिज अपने नाम कराने के लिए सुखदेव सिंह पुत्र बलवीर सिंह ने आवेदन दिया हुआ है. सुखदेव सिंह ने इस के लिए जो कागजात बनाए हैं, वे नकली और मनगढ़ंत हैं. जबकि यह जमीन काफी समय से मेरे परिवार वालों के नाम ही चली आ रही है.

मित्तल ने अपनी शिकायत में यह भी लिखा कि हम में से किसी ने भी सुखदेव को कोई जमीन नहीं बेची है. एक समय में हम ने इस जमीन पर ईंटभट्ठा भी शुरू किया था. इस जमीन पर चल रहे बिजली



मक्खन सिंह और संजय

और पानी के कनेक्शन पहले से ही हमारे परिवार वालों के नाम हैं.

इसी के साथ मित्तल ने आशंका जताते हुए लिखा, ''मुझे लगता है कि देहरादून में सक्रिय कुछ भूमाफियाओं द्वारा हमारी जमीन के फरजी स्टांप बनवा लिए गए हैं और सुखदेव हमारी जमीन हड़पना चाहता है.''

इसी शिकायत के साथ मित्तल ने एसएचओ से मांग की कि आप मुझे सुरक्षा प्रदान करते हुए मेरी प्राथमिकी दर्ज कर भूमाफियाओं और जालसाजों के खिलाफ काररवाई करने की कृपा करें.

दीपांकुर मित्तल द्वारा कोतवाली (नगर) में आईपीसी की धाराओं 420, 467, 468 व 471 के तहत दर्ज शिकायत की जांच के लिए एसआईटी ने कोतवाल राकेश गुसाईं और थानेदार नवीन जुराल को लगा दिया.

जांच के दौरान मित्तल के बयान के साथसाथ उन से मालिकाना हक के कागजों की फोटोकौपी भी ली गई. टीम ने मित्तल के प्रपत्रों को सबरजिस्ट्रार कार्यालय और सरकारी वकील को दिखाया. इसी के साथ सुखदेव के मालिकाना कागजों की फोटोकौपी तहसील से हासिल की गई.

जब दोनों दस्तावेजों की जांच की गई, तब टीम ने पाया कि मित्तल के दस्तावेज सही हैं. सुखदेव के दस्तावेज ही संदिग्ध पाए गए. उस के बाद टीम सुखदेव के बारे में अन्य जानकारी मालूम करने में जुट गई. टीम ने पाया कि सुखदेव मूलरूप से पंजाब में लुधियाना स्थित कोटला, अफगान रोड, निहाल फील्ड, साहनेवाल जिले का रहने वाला है. इस के बाद पुलिस सुखदेव की तलाश में जुट गई.

पुलिस ने भूमाफियाओं पर कसा शिकंजा

मित्तल की शिकायत और जांच की शुरुआत के बाद एसआईटी ने भूमाफियाओं के फरजीवाड़े पर शिकंजा कसना शुरू कर दिया था. इसी दौरान एक नया मामला एक एनआरआई महिला रक्षा सिन्हा का भी आ गया. उन की देहरादून की राजपुर रोड पर मधुबन होटल के सामने ढाई बीघा जमीन थी.

रक्षा सिन्हा इंगलैंड में रहती हैं, जबकि उन के पिता पी.सी. निश्चल देहरादून में ही रहते थे. उन की मृत्यु हो चुकी है. रक्षा सिन्हा काफी सालों से देहरादून नहीं आई थीं. रक्षा सिन्हा को जब पता चला कि उस की जमीन को कोई अपना बता कर बेचने वाला है, तब वह सतर्क हो गई थीं.

टीम ने उन के जमीन के कागजातों की भी जांच की. साथ ही सबरजिस्ट्रार कार्यालय में भी कागजों की जांच की. रक्षा सिन्हा द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार, उन की जमीन मुजफ्फरनगर निवासी रामरतन शर्मा के नाम हो गई है. जबकि सबरजिस्ट्रार कार्यालय के रिकौर्ड में भी रक्षा सिन्हा के पिता पी.सी. निश्चल द्वारा वर्ष 1979 में रामरतन शर्मा को बेचने के कागज लगे थे.

इस के बाद एसआईटी को यह जानकारी मिली कि सबरजिस्ट्रार कार्यालय में ही इन भूमाफियाओं के गुर्गे तैनात हैं और वे यहीं से भूमाफियाओं के लिए काम कर रहे हैं. इस सिलसिले में जब एसआईटी ने रक्षा सिन्हा की जमीन के बारे में जानकारी मालूम की कि कौन उन की जमीन को अपना बता कर बेच रहा है तो 3 जालसाजों के नाम सामने आ गए.

उन में एक नाम संजय पुत्र रामरतन

शर्मा निवासी पंचेडा रोड, मुजफ्फरनगर का था. दूसरा नाम ओमवीर तोमर पुत्र ओम प्रकाश, निवासी डिफेंस कालोनी देहरादून का था, जबकि तीसरा नाम सतीश कुमार पुत्र फूल सिंह निवासी जनकपुरी, मुजफ्फरनगर था.

ऐसे हुआ बड़ा खुलासा

यहां इंगलैंड निवासी एनआरआई महिला की करोड़ों की भूमि के फरजी दस्तावेज बनाए गए थे. आखिरकार पुलिस ने फरजी दस्तावेज बनाने वाले गिरोह का पता लगा ही लिया.

इस सिलसिले में यह कहानी लिखे जाने तक 16 शातिर आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया गया था. गिरोह के सदस्य ओमवीर सिंह के खिलाफ जमीन धोखाधड़ी के कई मुकदमे पहले से दर्ज थे.

उस का जमीनों के फरजीवाड़े का आपराधिक इतिहास रहा है. पहले भी कई विवादित जमीनों में इस की संलिप्तता पाई गई. इस जांच के बाद ही टीम ने कुछ वैसे जालसाजों को चिह्नित किया था, जो इस फरजीवाड़े में शामिल थे. 6 अक्तूबर, 2023 को टीम के हत्थे एक जालसाज अजय मोहन पालीवाल चढ़ गया था. वह पहले विधि विज्ञान प्रयोगशाला में फोरैंसिक एक्सपर्ट था.

उस ने एडवोकेट कमल विरमानी, के.पी. सिंह आदि कई जालसाजों के साथ मिल कर कई जमीनों के कूट रचित विलेख फरजी हैंडराइटिंग के आधार पर तैयार किए थे. उन फरजी प्रपत्रों को सबरजिस्ट्रार कार्यालय के बाइंडर सोनू द्वारा रिकौर्ड में चस्पा कर दिया जाता था.

रजिस्ट्रार कार्यालय के रिकौर्ड में फरजी विलेख लग जाने के कारण रिकौर्ड फरजी भूस्वामियों के नामपते शो करने लगे थे. इस से असली भूस्वामी परदे के पीछे चले गए थे, जबकि फरजी लोग प्रौपर्टी मालिक बन गए थे. इस के बाद इन भूमाफियाओं व जालसाजों ने अब उन जमीनों को आगे बेचना शुरू कर दिया था.

भूमाफियाओं द्वारा सबरजिस्ट्रार कार्यालय में फरजीवाड़ा करने की जानकारी जब एडीएम (वित्त) देहरादून व सहायक महानिरीक्षक



डीएम सोनिका के आदेश पर हुई कारखाई

निबंधन संदीप श्रीवास्तव को मिली तो सब से पहले उन्होंने ही इस बाबत जांच की थी.

जांच में पता चला कि इस गिरोह के लोग देहरादून में काफी समय से खाली पड़ी जमीनों पर नजर रखते थे. ऐसी जमीनों के जो मालिक विदेशों में होते थे, सब से पहले वह उन्हीं को अपना निशाना बनाते थे. इस के बाद मौका मिलते ही जमीनों के फरजी कागजात तैयार कर लिए जाते थे. उन कागजों को दिखा कर जमीन अन्य लोगों को बेच दिया करते थे.

रजिस्ट्री में फरजीवाड़ा करने के लिए 30 से 50 साल पुराने स्टांप पेपरों का इस्तेमाल किया जाता था. ताकि इन्हें उसी वक्त के बैनामे के तौर पर दर्शाया जा सके.

इस के बाद रजिस्ट्रार कार्यालय में फरजी व्यक्तियों के नाम पर इन जमीनों को दर्ज किया गया. इस बाबत कोतवाली (नगर) देहरादून में 9 मुकदमे दर्ज किए जा चुके थे. जब इस की जांचपड़ताल हुई, तब 6 अक्तूबर को एक आरोपी अजय मोहन पालीवाल गिरफ्तार कर लिया गया. उस के बारे में बड़ा खुलासा हुआ.

उस ने बताया कि अजय मोहन फोरैंसिक एक्सपर्ट था. उस ने आरोपी कमल विरमानी, के.पी. सिंह आदि के साथ मिल कर कई बड़े फरजीवाड़े किए थे. जमीनों के फरजी बैनामों में फरजी राइटिंग और सिग्नेचर बनाए गए थे.

इन्होंने ही एनआरआई महिला रक्षा सिन्हा की राजपुर रोड पर स्थित जमीन का फरजी बैनामा तैयार किया था. इस जमीन के कागज को रामरतन शर्मा के नाम से बनाया गया था. पहले भी कई विवादित जमीनों में इस की संलिप्तता रही है.

जांच में जब फरजीवाड़ा सही पाया गया, तब संदीप श्रीवास्तव ने एसआईटी में इस फरजीवाडे का मुकदमा अपराध क्रमांक 281/2023 पर आईपीसी की धाराओं 120बी, 420, 467, 468 व 471 के तहत दर्ज करा दिया था. इस के बाद ही जिले के नए एसएसपी अजय सिंह ने एसआईटी की 4 टीमों का गठन किया था और उन्हें इन भूमाफियाओं को गिरफ्तार करने के लिए लगा दिया था.

रजिस्ट्रार कार्यालय की रही संदिग्ध भूमिका

संदीप श्रीवास्तव ने एसआईटी को बताया था कि सबरजिस्ट्रार कार्यालय के कुछ दस्तावेजों पर जो मोहरें व स्याही लगी हुई थी, उन मोहरों का साइज सबरजिस्ट्रार कार्यालय की मोहरों के साइज से मेल नहीं खा रहा था. साथ ही स्याही के रंग में भी काफी अंतर था.

जिलाधिकारी देहरादून के जनता दरबार में भी अकसर सबरजिस्ट्रार कार्यालय में जमीनों के फरजी नाम परिवर्तन की शिकायतें ज्यादा आने के बाद ही एसआईटी ने जमीनों के फरजीवाड़े के मुकदमे दर्ज किए गए थे.

7 अक्तूबर, 2023 को टीम ने आरोपियों संजय शर्मा, ओमवीर तोमर और सतीश को गिरफ्तार किया था. टीम ने जब इन तीनों से इस फरजीवाड़े की बाबत पूछताछ की, तब कुछ फरजी दस्तावेजों पर अजय मोहन पालीवाल द्वारा बनाए गए हस्ताक्षर के बारे में भी जानकारी मिली.

पता चला कि ओमवीर तोमर की जानपहचान सहारनपुर निवासी के.पी. सिंह से थी. उसे के.पी. सिंह से जानकारी मिलती थी कि किस की जमीनें कहां हैं और वे कहां रहते हैं. इस के बाद ये लोग उस जमीन के फरजी कागजात तैयार करते थे. इस काम में एडवोकेट कमल विरमानी द्वारा उन दस्तावेजों को सबरजिस्ट्रार कार्यालय में भेजा जाता था.

तीनों आरोपियों से पूछताछ करने के बाद एसएसपी अजय सिंह ने इन्हें 8 अक्तूबर, 2023



पुलिस हिरासत में संजय शर्मा, ओमवीर और सतीश

को मीडिया के सामने पेश कर दिया था. तीनों कोर्ट में पेश कर के जेल भेज दिए गए थे. इन्हें गिरफ्तार करने वाली टीम में एसआईटी के इंसपेक्टर राकेश गुसाईं, एसओजी के इंसपेक्टर नंद किशोर भट्ट, एसएसआई प्रदीप रावत, एसआईटी के थानेदार मनमोहन नेगी, थानेदार हर्ष अरोड़ा, अमित मोहन ममगई और सिपाही किरण, ललित, देवेंद्र, पंकज आदि ने अहम भूमिका निभाई थी.

आरोपियों का आपराधिक इतिहास खंगाले जाने के बाद पाया कि आरोपी ओमवीर तोमर के खिलाफ देहरादून के थाना क्लेमेंटाउन में वर्ष 2014 में धोखाधडी का मुकदमा दर्ज हुआ था. इस के बाद उस के खिलाफ वर्ष 2015 में अपहरण व हत्या के प्रयास का मुकदमा दर्ज हुआ था तथा वर्ष 2017 में उस के खिलाफ जालसाजी, मारपीट करने व धमकी देने के मुकदमे दर्ज हुए थे.

19 आरोपी हुए गिरफ्तार

इस के बाद जांच टीम ने दिल्ली, उत्तर प्रदेश तथा उत्तराखंड में जा कर भूमाफियाओं और जालसाजों के ठिकानों पर दबिशें देनी शुरू कर दी थीं. इस बारे में प्रशासन और सबरजिस्ट्रार कार्यालय के आला अधिकारियों का कहना था कि सबरजिस्ट्रार कार्यालय का रिकौर्ड स्थाई किस्म का है तथा वह संपत्ति स्वामित्व का मूल आधार है.

भूमाफियाओं और जालसाजों द्वारा उक्त रिकौर्ड के साथ छेड़छाड़ करना और उन के प्रपत्रों के माध्यम से मूल विलेख को बदलना गंभीर अपराध है. भूमाफियाओं का यह कृत्य भूस्वामियों के अधिकार का तो हनन करता ही है साथ ही यह अनावश्यक विवाद को जन्म भी देता है.

एसआईटी ने इस मामले में जिन्हें गिरफ्तार किया था, उन के नामपते इस प्रकार हैं—

1. मक्खन सिंह निवासी माधवतुंडा, पीलीभीत, उत्तर प्रदेश.

2. संतोष अग्रवाल निवासी बोगीबिल डिब्रूगढ़, असम.

3. दीपचंद अग्रवाल निवासी चलखोवा डिब्रूगढ़, असम.

4. डालचंद निवासी रेसकोर्स, देहरादून.

5. इमरान निवासी बल्लूपुर, देहरादून.

6. अजय छेत्री निवासी बल्लूपुर, देहरादून.

7. रोहताश पुत्र महेंद्र ग्राम पुनिसका जिला रेवाड़ी, हरियाणा.

8. विकास पांडे निवासी बंजारवाला, देहरादून.

9. एडवोकेट कमल विरमानी निवासी चकरौता रोड, देहरादून.

10. कंवरपाल सिंह उर्फ के.पी. सिंह निवासी कस्बा नकुड, सहारनपुर, उत्तर प्रदेश.

11. विशाल निवासी गांव कूकड़ा, जिला मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश.

12. महेश निवासी मोहल्ला पुष्पांजलि, सहारनपुर, उत्तर प्रदेश.

13. अजय मोहन पालीवाल निवासी आदर्श नगर मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश.

14. सुखदेव सिंह निवासी कोटला, अफगान रोड साहनेवाल, लुधियाना, पंजाब.

15. हुमायूं परवेज निवासी काजी सराय नगीना जिला बिजनौर.

16. देवराज तिवारी निवासी टीएचडीसी कालोनी, मधुर विहार देहरादून.

17. सतीश निवासी जनकपुरी, जिला मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश.

18. संजय शर्मा निवासी पंचेड़ा रोड, जिला मुजफ्फरनगर.

19. ओमवीर सिंह तोमर निवासी डिफेंस कालोनी, देहरादून, उत्तराखंड.

इस फरजीवाड़े की कहानी लिखे जाने तक एसआईटी की जमीनों के घोटाले की लगभग 81 शिकायतें प्राप्त हो चुकी थीं. शिकायतों की जांच उन की प्रकृति के अनुसार की जा रही थी.

टीम का कार्यकाल नवंबर माह तक का था. जबकि यह अनुमान लगाया गया कि शिकायतों की संख्या में और भी बढ़ोत्तरी हो सकती है. फरजीवाड़े के बड़े रूप को देखते हुए टीम आम जनता से सीधे भी शिकायतें प्राप्त करने लगी थी.

स्टांप एवं रजिस्ट्रैशन मुख्यालय स्थित एसआईटी के कार्यालय में एस.एस. रावत जमीनों के फरजीवाड़े की शिकायतें प्राप्त करने के लिए मौजूद होते थे. प्राप्त शिकायतों को उस की प्रकृति और श्रेणी के अनुसार जांच हेतु तहसील अथवा उपजिलाधिकारी कार्यालय भेजा जाता है.

कथा लिखे जाने तक जमीनों के फरजीवाड़े में पकड़े गए 19 आरोपी अभी तक

जेल में थे तथा एसआईटी द्वारा जांच जारी थी. एसआईटी द्वारा गिरफ्तार आरोपियों के खिलाफ चार्जशीट लगाने के बाद अब एसआईटी उन के खिलाफ गैंगस्टर ऐक्ट लगाने पर भी विचार कर रही थी.

फरजीवाड़े में इस्तेमाल हुए पुराने स्टांप पेपर

उन्हीं दिनों सालों से पुराने स्टांप इकट्ठा करने वाले एक माफिया के.पी. सिंह से जुड़ा मामला भी उजागर हो गया था. इस धंधे में उस ने करोड़ों रुपए कमाए थे और मालामाल बन गया था. सहारनपुर का एक भूमाफिया इस फरजीवाड़े के लिए लंबे समय से पुराने स्टांप इकट्ठा कर रहा



इंसपेक्टर (एसआईटी) राकेश गुसाईं

था. वह इन स्टांपों को देहरादून और सहारनपुर के स्टांप वेंडरों से खरीदता था. इस के लिए एक स्टांप के लाखों रुपए तक अदा किए गए थे. जबकि, इन का इस्तेमाल कर वह करोड़ों कमा कर मालामाल हो गया था.

इन्हीं के आधार पर पुराने मूल बैनामों की प्रतियां जला कर नष्ट कर दी गई थीं और इन के बदले स्टांप को लगा कर नए दस्तावेज बना लिए गए थे. इतनी बड़ी संख्या में 1970 से 1990 के बीच प्रचलन में रहे ये स्टांप कहां से खरीदे थे, इस की जानकारी गिरफ्तार किए गए के.पी. सिंह से मिली थी.

के.पी. सिंह को कोतवाली ला कर पूछताछ की गई थी. पूछताछ में उस ने पुलिस को बताया कि उस ने किसी एक वेंडर से स्टांप नहीं खरीदे थे, बल्कि इस के लिए वह सालों से प्रयास करता रहा था. उसे जैसे ही पता चलता था कि किसी के पास पुराने स्टांप हैं, वह उस से ऊंचे दाम दे कर पुराने स्टांप को खरीद लेता था. ये स्टांप उसे आसानी से सहारनपुर में भी मिल गए थे.

इस के अलावा उस ने देहरादून के स्टांप वेंडरों से भी ये स्टांप खरीदे थे. हालांकि, पुलिस अब भी यह मान कर चल रही है कि कहीं न कहीं स्टांप को फरजी तरीके से बनवाया भी गया होगा. हो सकता है उस ने फरजी स्टांप घोटाले के सरगना अब्दुल करीम तेलगी के नकली स्टांप भी इस्तेमाल किए हों. लेकिन के.पी. सिंह से इस बारे में कोई ठोस जानकारी नहीं मिल पाई थी.



विवेचक (एसआईटी) नवीन जुराल

इस सिलसिले में पूरणचंद नाम के स्टांप वेंडर का नाम भी सामने आया. जिन स्टांप का इस्तेमाल हुआ था, उन पर पूरणचंद नाम के स्टांप वेंडर की मुहर और रजिस्ट्रैशन संख्या दर्ज पाई गई थी. उस के बारे में तहकीकात करने पर मालूम हुआ कि पूरणचंद नाम का स्टांप वेंडर कभी देहरादून में रहा ही नहीं था. ऐसे में ही स्टांप के फरजी बनाए जाने की आशंका बनी थी.

एसआईटी की जांच में 3 वकीलों के नाम भी सामने आए हैं. 16 नवंबर को गिरफ्तार वकील देवराज तिवारी ने रक्षा मंत्रालय की जमीन का फरजी बैनामा बना लिया था. वह देहरादून कचहरी में प्रैक्टिस करता था. पुलिस ने उस के अलावा 2 अन्य वकीलों को भी गिरफ्तार कर लिया है. ●

—कथा एसआईटी सूत्रों पर आधारित

ZEE LABORATORIES LTD.

सौंदर्य व आत्मविश्वास

Brexelant®

Breast Cream, Powder & Capsules



60g
200g

विकास
एवं
सुडोल

Youthful Essence
Natural Ingredients
100% Satisfaction
No Side Effects

सम्पूर्ण कॉस्मेटिक रेंज
हर प्रमुख दवा विक्रेता के यहां उपलब्ध

9896134500
9896277535

Online Shopping:
www.brexelant.com



DL (DS)- 20/MP/2022-24, (Registered)
RNI DELHI 064905/15/DL(C)-14/1391/22-24. P.O. SRT Nagar, ND-55.
Posting Date 06-12. Published on 26/11/2023. Pgs. 84

